जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 32 संख्याः 213 प्रभात उदयपुर, शुक्रवार 6 जून, 2025 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

पहली बार सांप्रदायिक और क्षेत्रीय आधार पर बंटी जम्मू-कश्मीर कांग्रेस इकाई

इस दरार की जड़ हैं, प्रदेश अध्यक्ष अब्दुल हमीद कर्रा जिन्हें राहुल गांधी की चॉइस बताया जाता है

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 जून। कांग्रेस की जम्मू-कश्मीर इकाई में विभाजन अब पूरी तरह खुलकर सामने आ गया है। विवाद का मुख्य कारण जम्मू-कश्मीर प्रदेश कांग्रेस कमेटी (पीसीसी) के अध्यक्ष अब्दुल हमीद कर्रा हैं, जो कश्मीर से आते हैं।

यह संभवत: पहला अवसर है, जब जम्मू और कश्मीर की इकाइयाँ सांप्रदायिक और क्षेत्रीय आधार पर विभाजित नज़र आ रही हैं। कर्रा के आलोचकों का कहना है कि उनमें न तो कोई राष्ट्रवादी दृष्टिकोण है और न ही व्यापक और समावेशी दृष्टि। उनका कहना है कि जम्मू में कांग्रेस की स्थिति तेजी से खराब हो रही है।

- कर्रा पीडीपी से कांग्रेस में आए हैं और अमरनाथ आतंकी हमले पर गुलाम नबी आज़ाद के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार गिराने में उनकी अहम् भूमिका थी, जब पीडीपी ने भाजपा से हाथ मिलाया तो उन्होंने पार्टी छोड़ दी।
- कर्रा कांग्रेस कल्चर से वाकिफ नहीं हैं और उनकी सोच व नज़रिया राष्ट्रवादी न होकर कश्मीर केन्द्रित और अलगाववादी है।
- यही वजह है कि जम्मू के कांग्रेसी उनसे नाराज़ हैं। उनकी मांग है या तो प्रदेश अध्यक्ष जम्मू का हो या जम्मू की अलग कांग्रेस इकाई बनाई जाए।
- देखना यह है कि अब राहुल क्या करते हैं, क्योंकि, राहुल धमाकेदार भाषण तो देते हैं, पर उसे क्रियान्वित करने का उनका सिस्टम बेहद दयनीय है।

उनके अनुसार, कांग्रेस ने कभी भी सांप्रदायिक राजनीति नहीं की, लेकिन कर्रा के नेतृत्व में पार्टी में सांप्रदायिक रुझान आ रहे हैं, जिससे जम्मू में भाजपा से मुकाबला करना कठिन हो गया है। इसका स्पष्ट उदाहरण हाल में हुए जम्मू-कश्मीर के चुनाव हैं, जहाँ कांग्रेस, भाजपा का मुकाबला नहीं कर सकी तथा कांग्रेस की उम्मीदों के बावजूद, उसका प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा और सभी लोग स्तब्ध रह गये।

जम्मू कांग्रेस इकाई की मांग है कि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जम्मू से होना चाहिए। उनकी मांग है कि यदि ऐसा संभव न हो, तो मुंबई रीजनल कांग्रेस कमेटी की तर्ज पर एक अलग समिति बनाई जाए, जैसा कि महाराष्ट्र में महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी के साथ किया गया है। उनकी मुख्य आपत्ति यह है कि कर्रा की सोच पूरी तरह कश्मीर-केन्द्रित है और वे केवल कश्मीर पर केन्द्रित सोच

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट आज तय करेगा, नीट पीजी परीक्षा की तारीख

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 जून। सुप्रीम कोर्ट शुक्रवार को नेशनल बोर्ड ऑफ एग्ज़ामिनेशंस (एन.बी.ई.) की उस याचिका पर सुनवाई करेगा, जिसमें 3 अगस्त को नीट पीजी 2025 परीक्षा आयोजित करने की अनुमति मांगी गई है। यह परीक्षा पहले 15 जून को होनी थी, लेकिन सुप्रीम कोर्ट द्वारा परीक्षा के

- नैशनल बोर्ड ऑफ एग्ज़ामिनेशन ने 3 अगस्त को नीट पीजी परीक्षा कराने के लिए सुप्रीम कोर्ट से अनुमति मांगी है, जिस पर शुक्रवार को सुनवाई होनी है।

प्रस्तावित दो शिफ्ट फॉर्मेट पर चिंता जताने के बाद, इसे स्थगित कर दिया गया था। एन.बी.ई. ने शीर्ष अदालत से अनुरोध किया है कि वह नई प्रस्तावित तिथि पर परीक्षा को एक ही शिफ्ट में आयोजित करने की अनुमति दे। यह कदम अदालत के पिछले शुक्रवार के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जातिगत जनगणना में निहित है परिसीमन का भय

बताया जाता है, केन्द्र सरकार जातिगत जनगणना के डेटा के आधार पर नए सिरे से परिसीमन कराने की तैयारी में है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 5 जून। बहुप्रतीक्षित जातिगत जनगणना शुरु होने वाली है। इसकी अधिकृत अधिसूचना 16 जून को जारी हो जायेगी। लेकिन इसे लेकर राजनैतिक एवं संवैधानिक बहसें जोर पकड़ चुकी हैं। ये बहसें खासतौर से संसदीय सीटों के परिसीमन के विवादित मुद्दे से संबंधित हैं। कुछ ही महीने दूर मुख्य राज्यों के चुनावों और बढ़ते जा रहे संघीय तनावों की पृष्ठभूमि में, सरकार के कई कदमों पर पूरे राजनैतिक परिदृश्य की नजरें लगी हुई हैं।

- दक्षिण भारतीय राज्यों को आशंका है कि नए परिसीमन में कम जनसंख्या की वजह से दक्षिण भारतीय राज्यों का संसद में प्रतिनिधित्व घट सकता है और ज्यादा आबादी वाले यूपी, बिहार की सीटें बढ़ सकती हैं।
- स्टालिन ने कहा कि ''हम जनसंख्या नियंत्रण की योजनाओं के सफल क्रियान्वयन का खामियाजा क्यों भुगतें।''
- ज्ञातव्य है कि देश में अक्टूबर से जातिगत जनगणना शुरु होने जा रही है, जिसकी अधिसूचना 16 जून को जारी होगी।

सबसे महत्वूर्ण प्रतिक्रिया तमिलनाडु के मुख्यमंत्री तथा द्रमुक अध्यक्ष एम.के. स्टालिन की तरफ से आई है। उन्होंने मोदी सरकार पर प्रहार करते हुए, इस प्रक्रिया में जानबूझकर विलम्ब करने का आरोप लगाया है। स्टालिन ने चेतावनी दी है कि इसे विडम्बना ही कहा जायेगा कि तमिलनाडु जैसे राज्यों, जिन्होंने जनसंख्या-नियंत्रण की नीतियाँ सफलतापूर्वक लागू की हैं, को अब लोकसभा में उनके प्रतिनिधित्व में संभावित कमी करके, दंड दिया जा सकता हे।

भारत के संघीय स्वरूप में बढ़ रहे क्षेत्रीय असंतुलन की ओर संकेत करते हुये, स्टालिन ने प्रश्न किया है, ''सामाजिक नियोजन के मामले में हमारी सफलता की ऐसी कीमत आखिर हम क्यों चुकायें, जबकि दूसरे राज्यों को अनियंत्रित जनसंख्या-वृद्धि के कारण

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महेश जोशी की जमानत अर्ज़ी पर सुनवाई 13 जून को

कोर्ट ने ईडी जाँच अधिकारी से पूछा कि गवाहों के बयान की वीडियोग्राफी क्यों नहीं की?

जयपुर, 5 जून। ईडी मामलों की विशेष अदालत ने जल जीवन मिशन में घोटाले से जुड़े मामले में पूर्व मंत्री महेश जोशी की जमानत अर्जी पर बहस के दौरान, जांच अधिकारी से प्रकरण के अनुसंधान को लेकर कुछ सवाल किए। इसका जवाब देने के लिए जांच अधिकारी ने अदालत से समय मांगा। इस पर अदालत ने मामले की सुनवाई 13 जून को तय की है।

सुनवाई के दौरान, पीठासीन अधिकारी खगेन्द्र कुमार शर्मा ने ईडी के जांच अधिकारी से गवाहों के बयानों की वीडियोग्राफी नहीं करने का कारण पूछा। वहीं, पीठासीन अधिकारी ने प्रकरण में अन्य लोगों की गिरफ्तारी और गवाहों को लेकर भी जांच अधिकारी से सवाल किए। इस पर जांच अधिकारी ने रिकॉर्ड देखकर जवाब देने का कहते हुए अदालत से समय मांगा। इसका विरोध

- जाँच अधिकारी ने कोर्ट के सवाल का जवाब देने के लिए समय मांगा। इस पर कोर्ट ने 13 जून की तारीख तय दी।

करते हुए जोशी के अधिवक्ता वीआर बाजवा ने कहा कि ईडी अनावश्यक समय लेकर उन्हें अधिक समय तक न्यायिक अभिरक्षा में रखना चाहती है। इस पर अदालत ने ईडी को जवाब के लिए 13 जून तक का समय दिया है।

महेश जोशी की ओर से अधिवक्ता बाजवा ने कहा कि मामले में गवाह बनाए गए अभियंता ने बयान दिए हैं कि उन्होंने निजी ठेकेदारों से रिश्वत ली थी, तो फिर उसे आरोपी क्यों नहीं बनाया गया। दूसरी ओर, मनी लॉण्डरिंग के मामलों में सुप्रीम कोर्ट की ओर से गवाहों की वीडियोग्राफी के निर्देश होने के बावजूद, ईडी ने वीडियोग्राफी नहीं कराई। दूसरी ओर उसे नोटिस देने के एक साल तक कार्रवाई नहीं करने के बाद अचानक उन्हें गिरफ्तार किया गया। इससे पूर्व, ईडी की ओर से अधिवक्ता अजातशत्रु मीणा ने कहा कि मामले से जुड़े सह आरोपियों के बयान में आया है कि जोशी तक रिश्वत राशि पहुंचाई जाती थी। वहीं, आरोपियों की फर्म से जोशी के बेटे की फर्म को भी लाखों रुपए का भुगतान किया गया था। अभियोजन पक्ष के पास जोशी के खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं। ऐसे में यदि उन्हें जमानत दी गई तो वे गवाहों को प्रभावित कर सकते हैं।

गौरतलब है कि जल जीवन मिशन घोटाले में मामला दर्ज होने के बाद ईडी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भगदड़ पर सिद्धारमैया का एक्शन

बंगलूरू, 05 जून। बंगलूरू में एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर मची भगदड़ में 11 लोगों की मौत और 50 से ज्यादा लोगों के घायल होने पर कर्नाटक सरकार की तरफ से बड़ी कार्रवाई की गई है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कहा, कब्बन पार्क पुलिस स्टेशन के पुलिस इंस्पेक्टर, स्टेशन हाउस

- बेंगलूरु में चिन्ना स्वामी स्टेडियम के बाहर मची भगदड़ केस में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने पुलिस कमिश्नर सहित कई पुलिस अधिकारियों को सस्पैंड कर दिया है।

मास्टर, स्टेशन हाउस ऑफिसर, एसीपी, सेन्ट्रल डिवीजन डीसीपी, क्रिकेट स्टेडियम प्रभारी, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, पुलिस कमिश्नर को तत्काल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'राज्य सरकार पंचायतों व निकायों में मनमर्जी से परिसीमन कर रही है'

सचिन पायलट ने टोंक में बैरवा धर्मशाला में नवनिर्मित छात्रावास के लोकार्पण कार्यक्रम में कहा

टोंक, 5 जून । कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव, पूर्व उप मुख्यमंत्री एवं टोंक विधायक सचिन पायलट ने भारत-पाकिस्तान के मध्य युद्धविराम की घोषणा अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा किये जाने को अप्रत्याशित बताते हुए कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति बार-बार यह बयान दे रहे हैं कि व्यापार का लालच देकर उन्होंने यह युद्धविराम कराया है। सरकार द्वारा उनके इस बयान का खण्डन नहीं किया जाना, बयान की पुष्टि करने जैसा है।

कांग्रेस नेता पायलट ने कहा कि पहलगाम में हुई पाकिस्तान -समर्थित आतंकवाद की घटना देश पर आक्रमण था। जब देश की सुरक्षा पर कोई बात आती है तो यह संदेश जाना चाहिए कि देश की सुरक्षा, एकता, अखण्डता के मुद्दे पर सारे 140 करोड़ देशवासी एकजुट हैं और यह संदेश विपक्ष देता है।

- कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव पायलट ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा अमेरिका के राष्ट्रपति के युद्ध विराम के बयान का खंडन नहीं करना, बयान की पुष्टि करने जैसा है।

राज्य सरकार की कार्यप्रणाली पर प्रश्न उठाते हुए पायलट ने कहा कि सरकार में कई पावर सेंटर बन चुके है। आपस में इतना खिंचाव हो चुका है कि प्रशासन पर उसकी पकड़ खत्म हो चुकी है। सरकार पंचायतों और निकायों के चुनाव कराने को तैयार नहीं है। मनमर्जी से परिसीमन किया जा रहा है। राजनैतिक सुविधा को देखकर परिसीमन किया जा रहा है। पायलट ने आज टोंक की बैरवा

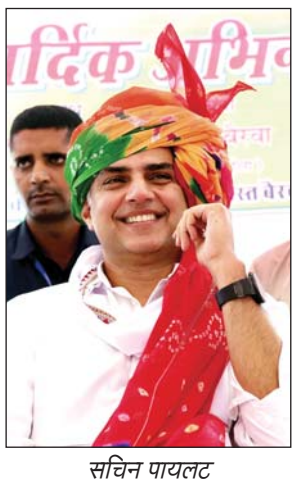

सचिन पायलट

धर्मशाला में 31 लाख रूपये की राशि से नवनिर्मित छात्रावास भवन का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि आप लोगों द्वारा भव्य प्रागंण का निर्माण करवाया गया है, परन्तु यह तभी सार्थक होगा, जब समाज के युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए इसका उपयोग किया जाये। पायलट आज टोंक विधानसभा क्षेत्र के दौरे पर रहे, जहां उन्होंने ग्राम पंचायत बमोर, लवादर एवं सोनवा का दौरा कर ग्रामीणों से संवाद किया।

पायलट का कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पक्के बंदे पर स्थित होटल देवनारायण ढाबा, छावनी सर्किल, बस स्टैंड पर भी भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर जिला सोशल मीडिया प्रभारी जर्रार खान, हंसराज फागणा, फोजू राम मीणा, सलीम नकवी, महमूद शाह, इरशाद बेग आदि मौजूद थे।

खड़गे-राहुल से मणिपुर के पार्टी नेता मिले

नयी दिल्ली, 05 जून। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को यहां नये कांग्रेस मुख्यालय इंदिरा भवन में पार्टी के मणिपुर के नेताओं के साथ बैठक कर राज्य में चल रहे हिंसक तनाव को लेकर ताजा हालात पर चर्चा की। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने खुद यह जानकारी देते हुए सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में कहा इंदिरा भवन में यहां मणिपुर के नेताओं से मुलाकात कर उनके दर्द, उम्मीदों और दृढ़ संकल्प को सुना। शांति, न्याय और एकता के लिए हमारी लड़ाई जारी है - साथ मिलकर। बैठक में खरगे तथा गाधी के अलावा पार्टी हासचिव संगठन के सी वेणुगोपाल, पार्टी के प्रदेश प्रभारी सप्तगिरि उलाका, प्रदेश अध्यक्ष केशम मेघचंद्र सिंह सहित कई अन्य प्रमुख नेता मौजूद थे। मणिपुर में मई 2023 से हिंसा का दौर चल रहा है। राज्य के निवासी दो प्रमुख समुदा मैती और कुकी के बीच हिंसा हो रही है जिसके कारण 200 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और लाखों लोग शिविरों में रहने को मजबूर हैं। कांग्रेस का कहना है कि वह शुरु से ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मणिपुर का दौरा कर वहां जारी हिंसा रोकने और पीड़ितों के जख्मों पर मरहम लगाने का आग्रह कर रही है।

रीवा में ऑटो पर पलटा ट्रक, सात मरे

रीवा, 05 जून। मध्य प्रदेश में लगातार दूसरे दिन बड़ा हादसा हुआ। गुरुवार को रीवा जिले में सोहागी पहाड़ के पास एक ऑटो पर सीमेंट की शीट से भरा ट्रक पलट गया। हादसे में सात लोगों की मौत हो गई और तीन घायल हो गए। इससे पहले बुधवार को झाबुआ में ट्रॉला के एक वैन पर पलटने से नौ लोगों की मौत हो गई थी और दो घायल हो गए थे। रीवा में मौत की घाटी कही जाने वाली सोहागी घाटी में गुरुवार दोपहर सोहागी थाना क्षेत्र अंतर्गत एनएच 30 पर ऑटो पर सीमेंट की शीटों से लदा ट्रक पलट गया। इस दर्दनाक हादसे में चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक ने अस्पताल ले जाते समय और दो ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

अमरनाथ यात्राःसुरक्षा के अभूतपूर्व इंतजाम

नई दिल्ली, 05 जून। इस साल तीन जुलाई से शुरू हो रही अमरनाथ यात्रा के दौरान सरकार की ओर से सुरक्षा के व्यापक और अभूतपूर्व इंतजाम किए जा रहे हैं। यात्रा तीन जुलाई से नौ अगस्त तक आयोजित की जाएगी। इस साल अमरनाथ की यात्रा 38 दिनों तक चलने वाली है। यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए केंद्र सरकार ने कुल 581 कंपनियां केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) की तैनाती का निर्णय लिया है। यह अब तक की सबसे बड़ी तैनाती में से एक मानी जा रही है।

इस बार विशेष सुरक्षा उपायों के तहत पहली बार अमरनाथ यात्रा के काफिले की सुरक्षा के लिए जैमर लगाए जाएंगे, जिससे किसी भी तरह की संदिग्ध गतिविधियों या हमलों को रोका जा सके। यात्रा के दौरान जब काफिला गुजरेगा, तब संबंधित मार्गों और राष्ट्रीय राजमार्गों को अस्थायी रूप से बंद कर दिया जाएगा, ताकि सुरक्षा में कोई चूक न हो।

इसके अलावा, रूट पर रोड ओपनिंग पार्टीज़ को तैनात किया जाएगा, जो यात्रा मार्गों को पूरी तरह से सुरक्षित बनाएंगे।

राज ठाकरे से हाथ मिलाएंगे उद्धव ठाकरे

मुंबई, 5 जून। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के युवा नेता अमित ठाकरे ने गुरुवार को स्पष्ट किया कि वे अपनी पार्टी और शिवसेना (ठाकरे) समूह के बीच गठबंधन के लिए तैयार हैं।

आगामी स्थानीय निकाय चुनावों से पहले अलग हुए चचेरे भाइयों के एक साथ आने के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने

- महाराष्ट्र में चर्चा है कि जल्दी ही शिवसेना (ठाकरे) राज ठाकरे की पार्टी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना से गठबंधन कर सकती है।

जवाब दिया कि उन्हें दोनों नेताओं के एक साथ आने पर कोई आपत्ति नहीं है। अमित ठाकरे ने कहा 'उन्हें (दोनों नेताओं को) एक-दूसरे से बात करनी चाहिए और इसके बारे में फैसला करना चाहिए, क्योंकि दोनों के पास एक-दूसरे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री भजनलाल ने जल संरक्षण के लिए अधिक श्रमदान का आह्वान किया

उन्होंने रामगढ़ में श्रमदान कार्यक्रम में कहा कि इसमें सभी की सहभागिता बहुत महत्वपूर्ण है

जयपुर, 5 जून। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा, जल ही जीवन है। हम सभी का कर्तव्य है कि हम प्रकृति का संरक्षण करें। आज से शुरू हो रहे ''वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान'' के तहत, प्रदेशभर में जल संचयन एवं पर्यावरण संरक्षण के तहत विभिन्न कार्य करवाए जाएंगे। उन्होंने प्रदेशवासियों से आ ान किया कि जन सहभागिता को बढ़ावा देते हुए वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान में ज्यादा से ज्यादा श्रमदान करें। परंपरागत जलस्रोतों को स्वच्छ बनाएं, जिससे वर्षा जल का संचयन हो।

- मुख्यमंत्री ने रामगढ़ में श्रमदान से पहले जलेश्वर महादेव मंदिर में जलाभिषेक किया। महिलाओं ने सिर पर कलश रखकर लोकगीत गाते हुए मुख्यमंत्री का अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री गुरूवार को विश्व पर्यावरण दिवस एवं गंगा दशहरा के अवसर पर जयपुर के रामगढ़ बांध पर श्रमदान कार्यक्रम में उपस्थित जनों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हम सब रामगढ़ बांध को एक बार फिर जल से परिपूर्ण करने के लिए श्रमदान करने हेतु एकत्रित हुए हैं।

मुख्यमंत्री ने ''एक पेड़ मां के नाम'' अभियान के तहत जमवारामगढ़ में सिंदूर का पौधा लगाया। इस दौरान, वन राज्य मंत्री संजय शर्मा ने तुलसी का पौधा भेंट कर मुख्यमंत्री का अभिवादन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि वृहद स्तर पर जनमानस को जोड़ते हुए जल संग्रहण कार्यों के लिए राज्य सरकार द्वारा 'वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान' शुरू किया गया है। यह अभियान प्रदेशवासियों का अपना अभियान है एवं इसमें सभी की सहभागिता बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि आज गंगा दशमी के दिन अपने आसपास के जल स्रोतों, नदियों, जल धाराओं और तालाबों की पूजा-अर्चना करें तथा इनके संरक्षण में बढ़-चढ़ कर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

भारत में बनेगी राफेल विमान की बॉडी

नयी दिल्ली, 05 जून। भारत की टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड (टीएएसएल) ने फ्रांस की कंपनी डसॉल्ट एविएशन के साथ चार उत्पादन हस्तांतरण करार किये हैं जिनके तहत राफेल लड़ाकू विमान की मेन बॉडी का निर्माण भारत में किया जायेगा। इसे फ्यूजलाज कहा जाता है।

इन दोनों कंपनियों ने यहां जारी

- टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड ने फ्रांस की कंपनी डसॉल्ट एविएशन से इस सम्बंध में करार किया है।

संयुक्त बयान में कहा कि यह करार देश की एयरोस्पेस विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत करने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का समर्थन करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

साझेदारी के दायरे में, टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स हैदराबाद में राफेल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

क्षमा से क्रोध को जीतो, भलाई से बुराई को जीतो, दरिद्रता को दान से जीतो और सत्य से असत्यवादी को जीतो। –महात्मा बुद्ध

संसद सदस्य अथवा विधानसभा के सदस्य की अयोग्यता के संबंध में निर्णय करने का अधिकार किसे है?

गत शुक्रवार दिनांक 30.05.2025 के सम्पादकीय में लेखक ने ''कंवर लाल मीणा की विधायिका समाप्त हो गई; किन्तु कारावास की सजा के कारण अयोग्य होने से सीट रिक्त होने का आदेश सही प्रतीत नहीं होता'' के शीर्षक से अपने अतिथि सम्पादकीय में लेख का सारांश निम्नलिखित प्रकार से अन्तिम चरण में किया था :–

''उपरोक्त मन्थन का सार यह है कि राज्य विधानसभा के सदस्य की अयोग्यता के मुख्य कानूनी प्रावधान संविधान का अनुच्छेद 191 व लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 8(3) है। उपधारा (4) धारा 8 को लिली थामस के केस (निर्णय दिनांक 10.07.2013) में सुप्रीम कोर्ट ने अवैध घोषित किया है। इन दोनों कानूनों के कारण दोष सिद्धि अयोग्यता का कारण बनती है। यदि दोष सिद्धि में दो वर्ष या इससे अधिक कारावास की सजा दी गई है तो अयोग्यता स्वत: हो सकती है। इसे समझने के लिये संविधान के अनुच्छेद 190(3) को पढना होगा। यह प्रावधान स्पष्ट करता है कि विधान सभा की सीट दोष सिद्धि की तारीख से रिक्त होती है और दोष सिद्धि (Conviction) 2020 में हुआ।''

विधानसभा की सीट दोष सिद्धि की तारीख से रिक्त होती है। यदि सजा 2 वर्ष से कम की नहीं है तो अयोग्यता दोष सिद्धि की तारीख से होगी और यह अयोग्यता 6 वर्ष की होगी। अयोग्यता से पीडित सदस्य को, धारा 8(3) के अपराधों के कारण दोष सिद्धि होने से धारा 8(4) का कोई लाभ नहीं मिल सकता।

इसी बात को स्पष्ट करते हुये लेखक ने पाठकों का ध्यान संविधान के अनुच्छेद के कई प्रावधानों की ओर आकर्षित किया था जो स्पष्ट करते हैं कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 8 की उपधारा (4) सुप्रीम कोर्ट के निर्णय दिनांक 10.7.2023 के अवैध हो जाने के कारण दोष सिद्धि अयोग्यता का कारण बनती है, यदि दोष सिद्धि में दो वर्ष या इससे अधिक की सजा दी गई हो तो अयोग्यता के कारण विधान सभा की सीट स्वत: रिक्त होती है। यह भी स्पष्ट किया था कि इस बाबत अनुच्छेद 190 की उपधारा (3) लागू होती है।

जहाँ अनुच्छेद 192 में असेम्बली के सदस्य की सदस्यता अयोग्यता के विवाद के बाबत निर्णय लेने का अधिकार महामहीम गवर्नर महोदय को है वहीं संसद के सांसद की सदस्यता की अयोग्यता के विवाद का निर्णय लेने का अधिकार महामहीम प्रेसीडेण्ट को संविधान के अनुच्छेद 103 में है। यह ध्यान रहे कि विभिन्न विचारों के टकरार से ही कानून का सृजन व प्रगति होती है।

संविधान के अनुच्छेद 192 के अनुसार यदि अयोग्यता के बाबत कोई विवाद होने पर उसका निर्णय गवर्नर करते हैं और उनका निर्णय अन्तिम होता है, किन्तु गवर्नर के लिये यह अपेक्षित है कि वे निर्णय से पूर्व चुनाव आयोग (Election Commission) की राय लेंगे। इस प्रकार कंवर लाल मीणा के केस में जो सीट रिक्त होने अथवा अयोग्यता के बाबत निर्णय है, उसकी समीक्षा की आवश्यकता प्रतीत होती है।

कंवर लाल मीणा की अयोग्यता व सीट रिक्त होने के सम्बन्ध में लिखे गये लेख (सम्पादकीय) से पूर्व एक अन्य लेख ''सांसद की सदस्यता की अयोग्यता के बाबत संविधान के अनुच्छेद 103 की क्या कोई भूमिका है?'' शीर्षक से लेखक ने लिखा था वह भी राष्ट्रदूत में दिनांक 11.08.2023 को प्रकाशित हो चुका है। उस लेख सम्पादकीय में स्वंय लेखक को ऐसा प्रतीत होता है गलती सोच में कहीं है और लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 8(3) का उल्लेख तो किया है, किन्तु दोष सिद्धि के प्रश्न पर माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश से कन्वीक्शन को निलम्बित करने का उल्लेख किया है; किन्तु इस बात का उल्लेख नहीं किया कि उक्त अधिनियम की धारा 8(4) स्वंय को सुप्रीम कोर्ट ने अवैध घोषित किया है। अत: पाठकों से निवेदन है कि उपरोक्त परिस्थितियों में स्वंय अपने विवेक से सही निर्णय करें कि सही कानून स्थिति क्या है। कन्वीक्शन को स्थगित रखने का आदेश माननीय सुप्रीम कोर्ट का है, जिसकी वैधानिकता के सम्बन्ध में कोई चुनौती नहीं है।

जहाँ अनुच्छेद 192 में असेम्बली के सदस्य की सदस्यता अयोग्यता के विवाद के बाबत निर्णय लेने का अधिकार महामहीम गवर्नर महोदय को है वहीं संसद के सांसद की सदस्यता की अयोग्यता के विवाद का निर्णय लेने का अधिकार महामहीम प्रेसीडेण्ट को संविधान के अनुच्छेद 103 में है।

यह ध्यान रहे कि विभिन्न विचारों के टकरार से ही कानून का सृजन व प्रगति होती है।

सत्यमेव जयते!

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

क्षत्रपति शिवाजी का हिन्दवी स्वराज : सिद्धान्त, संरचना एवं संचालन

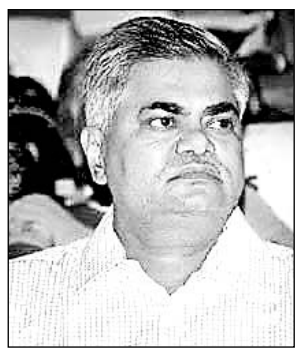

राजेश्वर सिंह

6 जून, 1674 को पश्चिमी भारत के ऐतिहासिक रायगढ किले में क्षत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक संपन्न हुआ व इसके साथ ही इस विस्तृत भूभाग में हिन्दवी स्वराज की स्थापना हुई, जो स्वधर्म के प्रति अटूट निष्ठा, अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता व सम्मान के भाव, प्रजाजन के सर्वविधि कल्याण, धार्मिक कट्टरता, आतंक, बर्बर अत्याचार व पशुता के प्रभावी प्रतिरोध, सबको स्वधर्मपालन की सम्पूर्ण स्वतन्त्रता, समाज, राज्य व सैन्यबल के अन्योन्याश्रित सुसंगठन तथा उचित, न्यायपूर्ण व जनसहभागी शासनतन्त्र के प्राचीन भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित था।

भारतीय परम्परा में राजा व मन्त्रिपरिषद को राज्य रूपी रथ के दो पहिए के रूप में परिभाषित किया गया है। राजा का यह कर्तव्य व दायित्व है कि वह विद्वान व बुद्धिमान मंत्रियों को नियुक्त करे तथा उनके परामर्श से राजकार्य का संचालन करे। शिवाजी की मन्त्रिपरिषद जिसे अष्टप्रधान के रूप में जाना जाता है, में पेशवा (प्रधानमंत्री), अमात्य या मजुमदार (वित्तमंत्री), मंत्री या वाकयानवीस (राजनीतिक सचिव), पंत सचिव या दाबीर (विदेश सचिव), सेनापति या सरे नौबत, पण्डितराव (मुख्य धर्माधिकारी) एवं न्यायाधीश (मुख्य न्यायाधिकारी) सम्मिलित थे।अष्टप्रधान की व्यवस्था शासन विज्ञान के प्राचीन ग्रंथ शुक्रनीति पर आधारित थी।

ये मंत्री मुख्यत: अपने विभागों का पर्यवेक्षण करते थे तथा उसके बीच समन्वय अथवा तालमेल बिठाने का कार्य पेशवा के द्वारा किया जाता था। शिवाजी का हिन्दवी स्वराज प्रान्त, सूबा, परगना, हवल या महल, ग्रामसंघ, कस्बा या मौजा तथा पेठ में विभाजित था, जिनके प्रभारी अधिकारियों को क्रमश: सर सूबेदार, सूबेदार, सर हवलदार या वतनदार, हवलदार या महलदार, कामविसदार, पाटिल तथा सेठ महाजन कहा जाता था। प्रत्येक सूबेदार के पास सामान्यत: आठ सहायक होते थे, जो विभिन्न कार्यो के प्रभारी थे। उनके पदनाम थे- दीवान, मजूमदार, फडनीस, सबनीस, कारखानीस, चिटणीस, जमादार और पोटनिस। यह अष्ट प्रधान व्यवस्था का सूबाई संस्करण था।

न्यायिक विवादो का निर्णय स्थानीय स्तर पर पाटिल अथवा उनके द्वारा नियुक्त पंचायत द्वारा किया जाता था। क्षेत्रीय स्तर पर देशक सभा थी, जिसमें सभी क्षेत्रीय अधिकारी ,मौजो के पाटिल तथा पेठो के सेठ महाजन सम्मिलित होते थे। सर्वाधिक महत्वपूर्ण न्यायिक निकाय के रूप में राजसभा थी, जिसमे राजा व मन्त्रिगण के अतिरिक्त विवाद से सम्बन्धित स्थान के स्थानीय पदाधिकारी भी सम्मिलित होते थे। धर्मसभा एक अन्य महत्वपूर्ण निकाय था, जिसका कार्य धर्म अथवा परम्परा से जुडे हुए महत्वपूर्ण प्रश्नों पर राजसभा को अपनी राय से अवगत कराना था।

शिवाजी की राज्य व्यवस्था में दो प्रकार के कर्मचारी थे ,स्थायी और अस्थायी। इसमें बडी संख्या अस्थायी लोगो की थी। सेना में अधिकांश सैनिक वर्षाकाल के चार माह खेती करते थे और बाकी के आठ माह सेना में सेवाएँ देते थे। स्वराज में हर माह प्रतिपदा के दिन नकद पारिश्रमिक दिया जाता था। शिवाजी की सेना में एक लाख पैदल सैनिक, एक लाख पांच हजार घुडसवार तथा पाँच हजार नौसैनिको को रोजगार प्राप्त था। शिवाजी के हिन्दवी स्वराज में जागीर प्रथा कम कर मासिक वेतन की पद्धित लागू की गई थी। बडे से बडे प्रशासनिक अथवा सैन्य अधिकारी को भी जागीर नही दी जाती थी। राज्य के पेशवा मोरापन्त पिगले को भी जागीर न देकर 56000 रू प्रतिवर्ष वेतन दिया जाता था। इससे अधिकारियों पर नियन्त्रण कायम हुआ तथा किसान एवं काश्तकार वर्ग के सामन्ती शोषण पर लगाम लगी।

शिवाजी के राज्य में अहमदनगर एवं बीजापुर के सुल्तानों और मुगल बादशाह से विजित क्षेत्र सम्मिलित थे, जिनमें कृषक मीर सदर के नाम से ख्यात वंशानुगत जमींदारो के अध्यधीन थे ,जो अत्यधिक लगान वसूलते थे और उन पर अमानुषिक अत्याचार करते थे। शिवाजी ने इन जमींदारो को अपने नियन्त्रण मे लेकर उनकी सारी शक्तिया छीन ली और प्रत्येक कृषक द्वारा दिये जाने वाले राजस्व की सही, औचित्यपूर्ण व वस्तुपरक गणना कर उनका लगान व जमीदार को उनके द्वारा देय राशि का निर्धारण कर दिया। इसी तरह की व्यवस्था हर प्रान्त में लागू कर समस्त कृषि योग्य भूमि का सर्वेक्षण कराया गया, जिसमें उर्वरता के हिसाब से भूमि का वर्गीकरण, उपज का आभिनिश्चयन ,लगान का नियतन तथा मध्यस्थ प्रथा का उन्मूलन किया गया। बंजर जमीने कृषि योग्य बनाई गई तथा किसानों को बीजों एवं पशुओ की सहायता दी गई। कृषि योग्य बनाई गई बंजर भूमि पर शुरुआती दौर में मामूली भूराजस्व वसूल किया जाता था।

मध्यकालीन भारत में क्षत्रपति शिवाजी महाराज पहले राजा थे जिन्होने आधुनिक तकनीक व प्रौद्योगिकी के महत्व को समझा तथा वस्तुओं के बजाय तकनीक के आयात पर बल दिया। स्वदेशी जलपोत के निर्माण के लिये उन्होने कल्याण व भिवण्डी मे कारखाने लगवाए। तोपों की आवश्यकता बढने पर उन्होने फ्रांस के सहयोग से पुरंदर किले पर तोप का कारखाना लगवाया। उन्हे जब पता चला कि अरबी घोडे बाकी घोडों की तुलना में ज्यादा तेज व लंबे समय तक भाग सकते है तब उन्होने अपने राज्य में इन घोड़ों की प्रजाति बढाने के लिय विशेष केन्द्र खोले। व्यापार के बढने से प्राप्त हुई आय एवं विभिन्न विजय अभियानों से प्राप्त राशि को शिवाजी ने ढांचागत संरचना के विकास में लगाया। उन्होने विभिन्न दुर्गों,बन्दरगाहों तथा सडको का निर्माण करवाया। उन्होने नौवहन एवं नौसेना के महत्त्व को समझा तथा उसे सुदृढ बनाने के हेतु यथा संभव प्रयास किए।

शिवाजी की उच्चकोटि की व्यक्तिगत नैतिकता का प्रभाव सम्पूर्ण प्रशासन, सेना एवं सार्वजनिक जीवन पर था। सैनिको को किसानो तथा व्यवसायियों से कोई भी वस्तु मूल्य चुका कर लेने के सख्त निर्देश थे। सैन्य अभियान में पत्नी, नृत्यांगना अथवा कलाल को ले जाने की मनाही थी। किसी भी धर्मस्थल अथवा धर्मठान्थ को हानि न पहुँचाने के लिए भी सेना को पाबन्द किया गया था। विजित क्षेत्र की महिलाओ के साथ सैनिकों का व्यवहार अत्यन्त सम्मानपूर्ण ,शालीन एवं मर्यादित था। आचरण व व्यवहार की इस पवित्रता व उच्चता ने शिवाजी व हिन्दवी स्वराज को एक अत्यन्त तेजस्वी आभामण्डल से मण्डित कर दिया था, जो प्रजा के मन को श्रद्धा, सम्मान व समादर से परिपूर्ण करता था व उन्हे इस स्वराज की सुरक्षा व संरक्षण के लिए सर्वस्व समर्पण करने को प्रेरित करता था।

-राजेश्वर सिंह,
आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

जयपुर : विकास की गंगा में समस्याओं के रोड़े

राजेन्द्र मोहन शर्मा

जयपुर, राजस्थान की राजधानी और भारत के सांस्कृतिक परिदृश्य में एक चमकता रत्न, अपनी ऐतिहासिक भव्यता और आधुनिक विकास के बीच एक जटिल संतुलन बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। गुलाबी नगरी के नाम से विख्यात यह शहर अपनी वास्तुकला, हस्तशिल्प और पर्यटन के लिए विश्व प्रसिद्ध है, लेकिन इसके सामने कई गंभीर चुनौतियां भी हैं। सफाई, पानी की आपूर्ति, ट्रैफिक, स्वास्थ्य सेवाएं, बिजली की हाईटेंशन लाइनें, ड्रेनेज सिस्टम, कानून-व्यवस्था, शिक्षा, रोजगार, कच्ची बस्तियों में आवास, अतिक्रमण, औद्योगिक अपशिष्ट और बढ़ती जनसंख्या का दबाव जैसे मुद्दे जयपुर की प्रगति को बार-बार प्रश्नों के घेरे में लाते हैं। तथ्यों और हाल के आंकड़ों के आधार पर यह विश्लेषण जयपुर के विकास के दावों और वास्तविकता के बीच के अंतर को रेखांकित करता है। जयपुर की सफाई व्यवस्था शहर की छवि पर एक धब्बे की तरह है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत जयपुर को स्वच्छ शहर बनाने के दावे बार-बार किए जाते हैं, लेकिन सड़कों पर बिखरा कचरा, अनियमित कचरा संग्रह और अपर्याप्त कचरा निस्तारण इकाइयां इन दावों की पोल खोलती हैं।

पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर ने हाल ही में ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था की खामियों पर सख्त रुख अपनाया। रिपोर्ट के अनुसार, स्टेट फाइनेंस कमीशन का 40 प्रतिशत बजट ग्राम पंचायतों में सफाई पर खर्च होता है, फिर भी जयपुर से सके ग्रामीण जैसे क्षेत्रों में लापरवाही के कारण अधिकारियों को निलंबित करना पड़ा। शहरी क्षेत्रों में, जयपुर नगर निगम (ग्रेटर और हेरिटेज) ने सफाई अभियानों को बढ़ावा देने की कोशिश की, लेकिन कचरे के ढेर, खासकर कच्ची बस्तियों और बाजारों में, एक आम दृश्य हैं। ठोस कचरा प्रबंधन की कमी और नागरिकों में जागरूकता का अभाव इस समस्या को और गंभीर बनाता है। प्रशासन की ओर से बार-बार स्वच्छता रैंकिंग में अच्छा प्रदर्शन करने का दावा किया जाता है, लेकिन वास्तव में, जयपुर की गलियां और नाले स्वच्छता के सरकारी दावों का मजाक उड़ाते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार, राजस्थान के 368 बांध गर्मी के कारण पूरी तरह सूख गए, जिसने जयपुर की जल आपूर्ति को और संकट में डाल दिया। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने नहरी स्त्रोतों पर आधारित 80 जल योजनाओं पर काम शुरू किया, जिनमें से 64 पूरी हो चुकी हैं, लेकिन कच्ची बस्तियों और उपनगरीय क्षेत्रों में पेयजल की अनियमित आपूर्ति एक कड़वी सच्चाई है। एक रिपोर्ट में बताया गया कि परिवहन विभाग ने छह साल बाद लोक परिवहन बस सेवा के लिए परमिट देने का निर्णय लिया, जो एक स्वागतयोग्य कदम है। लेकिन, जयपुर मेट्रो का सीमित दायरा और सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्त सुविधाएं शहर की जरूरतों को पूरा करने में नाकाम हैं।

शहर की ट्रैफिक व्यवस्था में सुधार के लिए दीर्घकालिक योजना और सख्ती की जरूरत है, लेकिन प्रशासन की प्राथमिकताएं अल्पकालिक समाधानों तक सीमित दिखती हैं। स्वास्थ्य सेवाएं जयपुर में एक मिश्रित तस्वीर पेश करती हैं। सवाई मानसिंह (एसएमएस) अस्पताल जैसे बड़े संस्थान पूरे राजस्थान के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र हैं, लेकिन बढ़ती जनसंख्या और संसाधनों की कमी ने इन सुविधाओं पर दबाव बढ़ा दिया है।

निजी अस्पतालों की महंगी सेवाएं आम जनता की पहुंच से बाहर हैं, और सरकारी योजनाओं का लाभ कागजों तक सीमित रहता है। जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड की ओर से बिजली कटौती और मेंटेनेंस के लिए 4-6 घंटे की कटौती की घोषणाएं आम हैं, जो स्थानीय निवासियों में असंतोष पैदा करती हैं। सरकार बिजली कनेक्शन प्रदान करने की अवधि को 7 दिन से घटाकर 3 दिन करने का दावा किया, लेकिन यह सुधार जयपुर में अभी पूरी तरह लागू नहीं हुआ। बिजली आपूर्ति और सुरक्षा के मामले में प्रशासन की लापरवाही और अल्पकालिक दृष्टिकोण चिंताजनक है। ड्रेनेज सिस्टम जयपुर की एक और कमजोर कड़ी है। मानसून के दौरान जलभराव की समस्या शहर की नाकामी को उजागर करती है। संपर्क पोर्टल और सीएम जनसुनवाई में लंबित शिकायतों की संख्या बढ़ रही है। सीएम भजनलाल शर्मा ने इन शिकायतों के निपटारे के लिए साप्ताहिक समीक्षा के निर्देश दिए, लेकिन प्रशासनिक सुस्ती इस प्रक्रिया को बाधित करती है।

एक रिपोर्ट में जयपुर के एक स्कूल में प्रिंसिपल और शिक्षिका के बीच विवाद का उल्लेख है, जो शिक्षा व्यवस्था में अनुशासन और गुणवत्ता की कमी को दर्शाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा के लिए संसाधनों की कमी और शिक्षकों की अनुपस्थिति स्थिति को और बदतर बनाती है।रोजगार के अवसर जयपुर में पर्यटन और हस्तशिल्प उद्योगों के कारण बढ़े हैं, लेकिन यह प्रगति असमान है। केंद्र सरकार ने हाल ही में पर्यटन से जुड़ी दो परियोजनाओं के लिए 145 करोड़ रुपये स्वीकृत किए, जिनमें आमेर, नाहरगढ़ और जल महल का विकास शामिल है। ये परियोजनाएं स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करेंगी, लेकिन कच्ची बस्तियों में रहने वाले लोगों के लिए रोजगार की कमी एक गंभीर समस्या है। कच्ची बस्तियों में पुनर्वास योजनाएं शुरू की गई हैं, लेकिन इनका कार्यान्वयन धीमा और अपर्याप्त है। जेडीए की वेबसाइट के अनुसार, सामुदायिक केंद्र और रिंग रोड जैसी सुविधाओं का विकास किया जा रहा है, लेकिन यह प्रगति कागजों तक सीमित दिखती है।पर्यटन जयपुर की अर्थव्यवस्था का आधार है, लेकिन इसके कारण संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। सिटी पैलेस, हवा महल और जंतर मंतर जैसे स्थल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, लेकिन अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और ट्रैफिक जाम पर्यटकों के अनुभव को प्रभावित करते हैं। औद्योगिक अपशिष्ट, खासकर हस्तशिल्प और रत्न उद्योगों से उत्पन्न कचरा, पर्यावरण के लिए खतरा बन रहा है। ठोस अपशिष्ट और रासायनिक कचरे के निस्तारण की कमी एक गंभीर समस्या है। कनेक्ट्राजस्थान के आंकड़ों के अनुसार, जयपुर की जनसंख्या घनत्व लगातार बढ़ रहा है, जो जल, बिजली और आवास जैसी सुविधाओं पर दबाव डाल रहा है।जयपुर का विकास तेजी से हो रहा है, लेकिन यह विकास असमान और अव्यवस्थित है।

जेडीए ने अपने क्षेत्राधिकार को 6,000 वर्ग किलोमीटर तक बढ़ाने का प्रस्ताव दिया है, जिसमें 679 नए गांव शामिल होंगे इस हेतु 10 क्षेत्रीय कार्यालय और 11 नए जोन स्थापित करने की योजना है। लेकिन, इन योजनाओं का प्रभाव तब तक सीमित रहेगा, जब तक बुनियादी समस्याओं का समाधान नहीं होता। जयपुर एक ऐसा शहर है, जो अपनी ऐतिहासिक धरोहर और आधुनिक महत्वाकांक्षाओं के बीच फंसा हुआ है। सफाई, पानी, ट्रैफिक और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार की तत्काल जरूरत है। बिजली, ड्रेनेज और कानून-व्यवस्था जैसे मुद्दों पर दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाना होगा। शिक्षा और रोजगार में प्रगति हो रही है, लेकिन कच्ची बस्तियों और अतिक्रमण की समस्या जटिल बनी हुई है। पर्यटन और औद्योगिक अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार के साथ-साथ बढ़ती जनसंख्या के दबाव को नियंत्रित करना होगा। जयपुर का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा, जब प्रशासन और नागरिक मिलकर इन चुनौतियों का सामना करें।

–राजेन्द्र मोहन शर्मा,
वरिष्ठ साहित्यकार,
शिक्षाविद् और चिन्तक

राशिफल शुक्रवार 6 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, हस्त नक्षत्र प्रात: 6:34 तक, व्यतिपात योग दिन 10:13 तक, वणिज करण दिन 3:32 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 8:07 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से प्रात: 6:34 तक है। रवियोग प्रात: 6:34 तक रहेगा। राजयोग रात्रि 4:48 से सूर्योदय तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:18 तक, लाभ अमृत 7:18 से 10:43 तक, शुभ 12:25 से 2:07 तक, चर 5:32 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:14

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

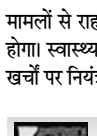

वृष
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय महत्वपूर्ण कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को संयम रखना ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

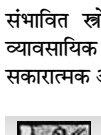

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ राहत मिलेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

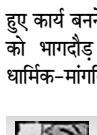

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

मीन
घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तेजी से घट रहा भू-जल स्तर, जल संचय के साथ बूंद-बूंद बचत को आदत बनाना होगा

भजनलाल सरकार के प्रयासों से जल संरक्षण को नई दिशा मिलेगी

राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है जो भौगोलिक दृष्टि से शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्र में स्थित है। यहां का अधिकांश हिस्सा थार मरुस्थल से आच्छादित है, जहाँ वर्षा की मात्रा अत्यंत कम है। देश के सतही जल का महज 1.16 प्रतिशत और भूमिगत जल का महज 1.72 प्रतिशत राज्य के हिस्से में आता है जबकि देश की 5.67 प्रतिशत आबादी यहां निवास करती है और राज्य में देश का 10.41 प्रतिशत भू-भाग है। भू-जल राजस्थान के लिए जल आपूर्ति का एक प्रमुख स्त्रोत बन चुका है लेकिन अंधाधुंध दोहन, अनियमित और कम वर्षा तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण भू-जल स्तर में निरंतर गिरावट आ रही है। इस संकट से निपटने के लिए भू-जल संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है।

सतही जल स्त्रोतों की कमी के कारण राज्य में भू-जल पर निर्भरता अधिक है। अत्यधिक दोहन के कारण प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में भू-जल निरन्तर नीचे जा रहा है। इसके कारण न केवल पेयजल की समस्या बढ़ी है, बल्कि कृषि पर भी गंभीर असर पड़ा है। जनसंख्या में तीव्र रूप से हो रही वृद्धि, कृषि विकास, बढ़ता औद्योगिकीकरण, शहरीकरण इत्यादि के चलते भू-जल दोहन में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। आंकड़ों पर नजर डालें तो विषय की गंभीरता स्पष्ट समझ में आएगी। सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार राज्य के 302 ब्लॉक्स में से 216 ब्लॉक्स अति दोहित श्रेणी यानि डार्क जोन में हैं, 23 ब्लॉक्स क्रिटिकल और 22 ब्लॉक्स सेमी क्रिटिकल श्रेणी में हैं। केवल 38 ब्लॉक्स सुरक्षित श्रेणी में हैं जबकि 3 ब्लॉक्स लवणीय होने के कारण इनका रिपोर्ट में आकलन नहीं किया गया। वर्ष 1984 में जब पहली बार 236 ब्लॉक्स का असेसमेंट किया गया था, तब 203 ब्लॉक्स सुरक्षित श्रेणी में और केवल 12 ब्लॉक्स अतिदोहित श्रेणी में थे। समस्या के समाधान के लिए भू-जल के संरक्षण और संवर्धन के लिए राज्य सरकार और स्थानीय समुदाय द्वारा विभिन्न उपाय किए जा रहे हैं जिनमें भजनलाल सरकार द्वारा 5 जून, 2025 को आरम्भ किया गया वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान मील का पत्थर माना जा सकता है। इससे पूर्व भी राज्य में इस दिशा में किए अभिनव प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। इनमें से कुछ उपाय निम्न प्रकार हैं-

रेन वॉटर हार्वेस्टिंग : निजी और सरकारी भवनों में रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाए जा रहे हैं। इससे वर्षा का जल सीधे जमीन में पहुंचकर भू-जल स्तर बढ़ाने में मदद करता है।

जोहड़ और तालाबों का पुनरुद्धार: परम्परागत जल स्त्रोत जैसे जोहड़, बावड़ी और तालाबों की सफाई व गहरीकरण कर उन्हें पुन: जल संचयन के लिए उपयोगी बनाया जा रहा है।

कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान : वर्षा जल के संचयन की दिशा में यह वर्तमान राज्य सरकार द्वारा शुरु किया गया एक महत्वपूर्ण अभियान है। इसके अंतर्गत प्रवासी राजस्थानी अपनी मातृभूमि के लिए जिम्मेदारी निभाते हुए जल संचय के कार्यों में उत्साह के साथ भागादारी निभा रहे हैं।

मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान : इसके अंतर्गत गांवों में सामुदायिक भागीदारी से जल संरचनाएं विकसित की गईं जिससे जल संरक्षण और भू-जल रिचार्ज को बढ़ावा मिला।

सूक्ष्म सिंचाई तकनीक का उपयोग : बूंद-बूंद सिंचाई और स्प्रिंकलर सिस्टम को बढ़ावा देकर सिंचाई में जल की बचत की जा रही है।

फसल चक्र और जल अनुकूल कृषि : किसानों को कम जल की आवश्यकता वाली फसलों की ओर प्रोत्साहित किया जा रहा है जैसे बाजरा, ग्वार और मूंग।

इसी प्रकार, अटल भू-जल योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, प्रधानमंत्री किसान सिंचाई योजना आदि के प्रभावी क्रियान्वयन से भी भूमिगत जल सहेजने में मदद मिल रही है।

राज्य में जल संरक्षण की मुहिम को सफल बनाने में स्थानीय समुदायों, स्वयंसेवी संगठनों और ग्राम पंचायतों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। भू-जल संरक्षण न केवल पर्यावरणीय आवश्यकता है बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक स्थिरता के लिए भी जरूरी है। यह एक सतत प्रक्रिया है जिसमें सरकार, समाज और आमजन सभी की सहभागिता अनिवार्य है। यदि समय रहते प्रभावी कदम उठाए जाएं, तो राजस्थान भविष्य में जल संकट से बच सकता है और एक जल-समृद्ध राज्य बन सकता है। हमें जल संचय की तकनीकों को अपनाने के साथ ही पानी की एक-एक बूंद सहेजने की आदत डालनी होगी। याद रखिए, ''जल है, तो ही कल है''।

''एक पेड मॉ के नाम'' के तहत वृक्षारोपण

उदयपुर, । विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'एक पेड मॉ के नाम' अभियान के तहत दी उदयपुर सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड प्रधान कार्यालय में वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम का आरंभ सहकारिता विभाग - खण्ड उदयपुर की अतिरिक्त रजिस्ट्रार महोदया श्रीमती गुंजन चौबे ने वृक्षारोपण करके किया। इस अवसर पर सहकारिता विभाग खण्ड उदयपुर के क्षेत्रीय अकंक्षेण अधिकारी आशुतोश भट्ठ, नाबर्ड उदयपुर के जिला विकास अधिकारी नीरज यादव, उप रजिस्ट्रार लोकेश जोशी, तथा सहकारी उपभोक्ता थोक भंडार महाप्रबंधक प्रमोद कुमार द्वारा भी अपनी मॉ के नाम पर पौधारोपण किया गया।

लखारा समाज भामाशाह व प्रतिभावान सम्मान समारोह

चित्तौडगढ, । श्री लखारा समाज मेवाड चौखला रानीखडा विकास सेवा संस्थान द्वारा श्री चैनामाता श्री कुशलामाता के 30 वें जन्मोत्सव पर दो दिवसीय कार्यक्रमों के साथ मनाया गया।

मीडिया प्रभारी सत्यनारायण लखारा ने बताया कि एक व दो जून को निम्बाहेडा के रानीखेडा में रानीखेडा मण्डल के अध्यक्ष चान्दमल निम्बाहेडा, वरि. उपाध्यक्ष जानकीलाल, उपाध्यक्ष सोहनलाल आवरीमाता, सुरेश चन्द्र बोहेडा, महामंत्री भगवतीलाल बानसेन, कोषाध्यक्ष भगवतीलाल आवरीमाता व

■ श्री चैनामाता श्री कुशलामाता जन्मोत्सव समारोह

उत्सव संस्थान के अध्यक्ष शिवशंकर (शेरू)चिकारडा, , उपाध्यक्ष शिवलाल कन्नोज, अशोककुमार बानसेन, महामंत्री मनोज कुमार कानोड, बोहेडा, कोषाध्यक्ष रोशनलाल निम्बाहेडा, पन्नालाल बिनोता, वरिष्ठ कार्यकर्ता विजयकुमार कन्नौज, महेन्द्र कुमार भीण्डर आदि के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस दौरान समिति द्वारा अतिथियों, समाज बंधुओं एवं भामाशाहों का सम्मान किया गया। अखिल भारतीय लेखरा महासभा के महामंत्री अंबालाल मुंबई के द्वारा दीप प्रज्वलित कर भजन संध्या का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में एक जून को मां भगवती जागरण व विशाल भजन संध्या का आयोजन हुआ जिसमें भजन सम्राट (जूनियर लखबीरसिंह लक्खा) शंकर लक्खा, सिंगर महावीर दास, विधि शर्मा, नीलू, डीजे स्टार नरेन्द्र रावल ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। सोमवार दो जून को प्रात:साढे 6 बजे हवन, प्रात:साढे 8 बजे बोली कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस दौरान आमंत्रित अतिथिगण अखिल भारतीय लखेरा महासभा नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयेश सुरत, राष्ट्रीय महामंत्री अम्बा लाल मुम्बई, राष्ट्रीय निर्वाचन अधिकारी कन्हैया लाल नाथद्वारा, राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिता छोटीसादडी, राष्ट्रीय उपकोषाध्यक्ष नवल प्रतापगढ, संगठन मंत्री शेरसिंह हरियाणा, सुनील बागडी इन्दौर, अखिल राजस्थान हिंदू लखेरा महासभा जयपुर प्रदेशाध्यक्ष गोर्वधन पचेवर, युवा मंच प्रदेश अध्यक्ष कन्हैया लखेरा अलीगढ, न्यूज चैनल 108 एवं युवा मंच प्रदेश मुख्य संयोजक घनश्याम चावंडिया, प्रदेश युवा मंच संगठन मंत्री हेमंत कोटा, प्रदेश मीडिया प्रभारी सुरेश का सम्मान किया गया।

परिचय सम्मेलन 8 जून को

उदयपुर, । श्री खटीक समाज राष्ट्रीय एकता मंच कार्यकारिणी की बैठक गुरुवार को थुर स्थित राष्ट्रीय कार्यालय में संस्थापक एवं राष्ट्रीयअध्यक्ष शंकरलाल चौहान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक में संस्थापक अध्यक्ष शंकरलाल चौहान ने बताया कि खटीक समाज राष्ट्रीय एकता मंच की ओर से खटीक समाज का महाकुंभ व परिचय सम्मेलन टाईगर हील स्थित प्रताप गौरव केन्द्र सभागार में 8 जून को सुबह 9 बजे आयोजित होगा। चौहान ने बताया कि आयोजन को लेकर अलग.अलग समितियों का गठन कर कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियों सौंपी गई। बैठक में होने वाले महाकुंभ परिचय सम्मेलन के बारे महत्वपूर्ण रुपरेखा व कार्यकर्ताओ को जिम्मेदारी दी गई।

पर्यावरण दिवस पर सघन वृक्षारोपण

चित्तौडगढ, । चंदेरिया लेड-जिंक स्मेल्टर में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि क्षेत्रीय अधिकारी, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, चित्तौडगढ आशीष बूरासी, द्वारा नीम का पौधा लगाकर की गई। उन्होंने इस अवसर पर सभी को पर्यावरण दिवस की शुभकामनाएं भी दीं।

उन्होंने संबोधन में बताया कि इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस 2025 की थीम बीट प्लास्टिक पोल्यूशन है, जो प्लास्टिक प्रदूषण के समाधान पर केंद्रित है। उन्होंने प्लास्टिक के दुष्प्रभावों और इसके नियंत्रण की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि हिन्दुस्तान जिंक के डिप्टी सीईओ स्मेल्टर्स एवं लोकेशन हेड मानस त्यागी ने कहा कि पर्यावरण के प्रति चेतना और चिंतन हर व्यक्ति के दृष्टिकोण का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों के साथ-साथ व्यक्तिगत योगदान भी अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याओं पर चिंता व्यक्त की। इस अवसर पर सह महाप्रबंधक पर्यावरण मनीषा भाटी ने जानकारी दी कि विश्व पर्यावरण दिवस पर परिसर में 5 हजार पौधे लगाए गए हैं।

(प्रपत्र संख्या-7)(देखिये नियम 21)

कार्यालय सहायक आयुक्त देवस्थान विभाग उदयपुर (राज.)

नोटिस

पत्रावली संख्या:-61/2025/2171 दिनांक-4/6/25

राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18(2) के अधीन नोटिस सम्बन्धित व्यक्तियो को

चूंकि श्री गिरीश कुमार शर्मा पुत्र श्री बंशीलाल शर्मा, अध्यक्ष ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम, 1959 की धारा -17 (2) के अन्तर्गत पलाश फाउण्डेशन जिला उदयपुर प्रन्यास के सम्बन्ध में किये जाने के लिये आवेदन पत्र दिया है।

अत: एव धारा 18 की उपधारा 2 द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपयुक्त प्रन्यास, जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम,व्यापक जानकारी के लिये यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे , इस नोटिस के जारी होने की तारीख से 60(साठ) दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां,यदि कोई हो, प्रस्तुत करें।

और यह सूचित किया जाता है कि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।

आज दिनांक 3/6/25 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया। आगामी पेशी तारीख 12/8/25 की रखी गयी है।

मुहर (जतीन कुमार गाँधी) सहायक आयुक्त देवस्थान विभाग, उदयपुर

300 से अधिक प्रतिभागियों ने एकात्म मानवदर्शन पर किया मंथन

उदयपुर, । भारतीय जनसंघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा प्रदत्त एकात्म मानवदर्शन के साठ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति जयपुर, भूपाल नोबल्स संस्थान व राजस्थान विद्यापीठ विवि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय दीनदयाल उपाध्याय एकात्म मानवदर्शन - हीरक जयंती समारोह का समापन गुरूवार को भूपाल नोबल्स विवि के प्रताप सभागार में हुआ।

समारोह का शुभारंभ वरिष्ठ प्रचारक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मुकुल कानिटकर, महेश शर्मा, कुलपति प्रो.एस एस सारंगदेवोत, प्रो. एम.एल. छीपा, बीएन संस्थान के प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड, मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह आगरिया, रजिस्ट्रार डॉ. एन.एन. सिंह , डॉ. महेश शर्मा, आयोजन सचिव डॉ. युवराज सिंह राठौड, कुलपति प्रो.कन्हैयालाल बेरवाल ने सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्जवलित कर एवं दीन दयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्पांजली अर्पित कर किया। शिक्षा एवं भाषा के क्षेत्र में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचार पर उद्बोधन देते हुए प्रसिद्ध शिक्षाविद् और विचारक मुकुल कानितकर ने कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास की चेतना समाहित होनी चाहिए। कानितकर ने स्पष्ट किया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के व्यष्टि और समष्टि के सिद्धांत को शिक्षा में समाहित किए बिना संपूर्ण राष्ट्र निर्माण संभव नहीं है। उन्होंने कहा

■ दो दिवसीय एकात्म मानव दर्शन का हीरक जयन्ती समारोह का हुआ समापन

कि शिक्षा में वह विचारधारा होनी चाहिए जो मन, बुद्धि, आत्मा के साथ-साथ सामाजिक, राष्ट्रीय और पर्यावरणीय चेतना को जाग्रत करे।

प्रचारक गुणवंत कोठारी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विविध विचारों की प्रासंगिकता एवं करणीय कार्यों पर विचार रखते हुए कहा कि संवेदना मनुष्य के विकास की पहली सीढ़ी बताया, सेवा कार्यों से जुड़ने और लोकमत परिष्कार के लिए कार्य, अनुसंधान कार्यों को गति प्रदान करने का आह्वान किया। विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने अपने संबोधन में पं उपाध्याय के दर्शन की शिक्षा में आवश्यकता और प्रांसगिकता को स्पष्ट किया। उन्होने नई शिक्षा नीति के समाहित एकात्मक मानव दर्शन और राष्ट्रीयता के संयोजन से विकसित और विश्व गुरू भारत की संकल्पना के साकार स्वरूप प्रदान किया जा सकता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विविध विचारों की प्रासंगिकता एवं करणीय कार्य विषयक सत्र में अनिल ओक ने एकात्मक मानव दर्शन द्वारा जीवन की समस्याओं और उनके निराकरण, सुखी जीवन और विकसित राष्ट्र के निर्माण में इसकी प्रासंगिता को रेखांकित किया। अर्थ चिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय - प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा, डॉ. बजरंग लाल गुप्ता ने विचार रखे। जिसमें स्वदेशी मॉडल के साथ साथ स्थानीय आवश्यकताओं, संसाधनों और संस्कृति के अनुसार निर्मित किया जाने , आयात-आधारित उपभोक्तावाद का विरोध किया और स्थानीय उत्पादन व लघु उद्योगों को बढावा देने पर बल संबंधी विचार साझा किए गए।

डॉ बालूराम छिपा ने कृषि के क्षेत्र में पं उपाध्याय के दर्शन और भारतीय कृषि में नवाचार की संभावनाओं पर विचार रखे जबकि डॉ.लोकेश शेखावत मानव और व्यक्ति के मध्य के अंतर को स्पष्ट करते हुए समाज-मानव जीवन के अंतरसंबंधो और उसकी पूर्णता को बताया। डॉ.छिपा , डॉ.शेखावत, राजेन्द्र चड्ढा की उपस्थिति में प्रतिभागियों तथा शोधार्थियों ने अपने शोध पत्रों की प्रस्तुति दी गई। तकनीकी सत्रों में विषय आधारित प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन कर प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं को डॉ. महेश शर्मा ने शांत किया । कार्यक्रम में पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 2025 आयोजित की गई जिसमें विजयी प्रतिभागियों का अतिथियों सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में 378 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर डॉ. रेणु राठौड, अनुराग सक्सेना, पूर्व कुलपति प्रो. लोकेश शेखावत, पूर्व कुलपति डॉ. बालूराम छिपा, अक्षांश भारद्वाज, राजेन्द्र सिंह, शक्ति सिंह कारोही, प्रो. प्रेम सिंह रावलोत, डॉ. अनिल कोठारी, नीरज कुमावत, डॉ. विजय प्रकाश विपलवी सहित शहर गणमान्य नागरिक व अनेक शिक्षाविद, विद्वान उपस्थित रहे।

भुगतान रसीद पुस्तिका के खो जाने की सार्वजनिक सूचना

यह आम जनता के ध्यान में लाया जाता है कि एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक लिमिटेड से संबंधित अनुलग्नक ए में उल्लिखित मूल भुगतान रसीदें खो गई हैं। गुम हो गई है और उनका पता नहीं लगाया जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति/व्यक्तियों को यह रसीदें/रसीदें मिलती है तो उनसे अनुरोध है कि वे तुरन्त नीचे दिए गए पते पर बैंक को रसीदें लौटा दें। इसके अलावा, कोई भी व्यक्ति इन रसीदों से कोई लेन-देन नहीं करेगा और एयू स्माल फायनेंस बैंक लि. किसी भी तरह से इन रसीदों के किसी भी तरह के दुरूपयोग के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

पता- (1) एयू स्माल फाइनेंस बैंक लि., पहली मंजिल, द्वारा मांगीलाल मेहता, प्लाट नं. 6 एवं 7, संकल्प होटल के पास, एम.पी. सर्किल के पास, उदयपुर मेन रोड, जिला-बांसवाड़ा, आरजे, पिन कोड नं. 327001

अनुलग्नक-ए

खोने की तिथि	खोने का स्थान	रसीद बुक नं.	रसीद नम्बर
31 मई 25	बांसवाड़ा, आरजे	107432	2685798-2685800

कार्यालय नगर निगम, उदयपुर

टाउनहॉल लिंक रोड, उदयपुर (राज.) 313001

दुरभाष सं- 0294-2421255, 2420013, Helpline no.0294-2426262, Email:- ceoudr.lsg@rajasthan.gov.in

क्रमांक:-संस्था/2025-26/जा./232 दिनांक:- 03.06.2025

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता हैं कि स्व. श्रीमती भागू/सुडा, सफाई कर्मचारी जो नगर निगम, उदयपुर में सफाई कर्मचारी के पद पर कार्यरत थे। इनकी मृत्यु दिनांक 16.11.2021 को हो जाने से इनकी विवाहित पुत्री श्रीमती लता पंवार पत्नी ललित राणवा, निवासी म.न. 240, हरिजन बस्ती, अम्बामाता, उदयपुर द्वारा मृतक आश्रित अनुकम्पात्मक नियुक्ति नियम 1996 के अन्तर्गत दिनांक 16.12.2021 को कनिष्ठ सहायक के पद पर नियुक्ति हेतु आवेदन प्रस्तुत किया हैं।

अतः इनको नियुक्ति देने के सम्बन्ध में किसी को भी कोई आपत्ति हो तो मय साक्ष्य दस्तावेज के अन्दर म्याद 15 दिन में नगर निगम की संस्थापन-शाखा में प्रस्तुत करे। बाद म्याद आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जाकर आवेदक को नियुक्ति देने की कार्यवाही की जावेगी।

सूचित हो। आयुक्त

राज.संवाद/सी/25/3631

कार्यालय ग्राम पंचायत पुनावली पंचायत समिति सायरा जिला उदयपुर (राज.)

क्रमांक:-पंचा/2025-26/41 दिनांक-03.06.2025

-:ई निविदा सूचना -01/2025-26:-

इस ग्राम पंचायत में DMEF योजनान्तर्गत स्वीकृत कार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पुनावली में दो कमरे एवं राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, उमरोद में कक्षा कक्ष हेतु UBN N0 क्रमश :ZUD2526WSOBOO712 एवं ZUD2526WSOBOO720 के माध्यम से ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

विस्तृत विवरण/ जानकारी sppp.rajasthan.gov.in व eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

सरपंच, ग्राम पंचायत पुनावली, पं.स.सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत पुनावली, पं.स.सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

कार्यालय ग्राम पंचायत पलासमा पंचायत समिति सायरा जिला उदयपुर (राज.)

क्रमांक:-/पंचा/निविदा/172 दिनांक-3.6.2025

-:ई निविदा सूचना -04/2025-26:-

इस ग्राम पंचायत में DMFT योजनान्तर्गत स्वीकृत निम्नाकित कार्य राजकीय उच्च मा.वि.पलासमा में दो कमरे निर्माण कार्य हेतु UBN N0 ZUD2526WSOB00627 के माध्यम से ई निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

विस्तृत विवरण/ जानकारी sppp.rajasthan.gov.in व eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

सरपंच, ग्राम पंचायत पलासमा, पं.स.सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत पलासमा, पं.स.सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

कार्यालय ग्राम पंचायत पलासमा पंचायत समिति सायरा जिला उदयपुर (राज.)

क्रमांक:-/पंचा/निविदा/175 दिनांक-3.6.2025

-:ई निविदा सूचना -02/2025-26:-

ग्राम पंचायत पलासमा में महानरेगा व अन्य योजनाओं के करवाये जा रहे कार्यो हेतु निर्माण सामग्री उपापन की निविदाएं UBN N0 ZUD2526GLRC00693 अन्तर्गत जारी निविदा सूचना अनुसार आमंत्रित की जाती है।

विस्तृत विवरण/ जानकारी sppp.rajasthan.gov.in व eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

सरपंच, ग्राम पंचायत पलासमा, पं.स.सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत पलासमा, पं.स.सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

कार्यालय ग्राम पंचायत ढोल पंचायत समिति सायरा जिला उदयपुर (राज.)

क्रमांक:-/पंचा/निविदा/126 दिनांक-3.6.2025

-:ई निविदा सूचना -02/2025-26:-

ग्राम पंचायत ढोल में महानरेगा व अन्य योजनाओं के करवाये जा रहे कार्यो हेतु निर्माण सामग्री उपापन की निविदाएं UBN N0 ZUD2526GLRC00690 अन्तर्गत जारी निविदा सूचना अनुसार आमंत्रित की जाती है।

विस्तृत विवरण/ जानकारी sppp.rajasthan.gov.in व eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

सरपंच, ग्राम पंचायत ढोल, पं.स.सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

ग्राम विकास अधिकारी, ग्राम पंचायत ढोल, पं.स.सायरा, जिला-उदयपुर (राज.)

जल को सहेजने का सामूहिक प्रयास

उदयपुर, । उदयपुर लोकसभा सांसद डॉ मन्नालाल रावत ने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान जल को सहेजने का एक सामूहिक प्रयास है। वे गुरुवार को प्रदेशव्यापी ष्वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियानष् के शुभारंभ के उपलक्ष्य में आयोजित हुई प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान में अभी भी जनसंख्या के अनुपात में जल की उपलब्धता कम है ऐसे में इस अभियान के माध्यम से जल संरक्षण की दिशा में प्रभावी परिणाम मिलेंगे। उन्होंने केंद्र सरकार द्वारा जल संरक्षण की दिशा में किये गए प्रयासों का जिक्र करते हुए कहा कि केंद्र द्वारा भी नदिया जोड़ने की परियोजना समेत कई ऐतिहासिक कार्य किए हैं जिसके सुखद परिणाम भावी पीढ़ियों को मिलेंगे।

प्रेस वार्ता में उदयपुर ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा ने कहा कि जल संरक्षण की दिशा में हमारी पूर्ववर्ती सरकार द्वारा शुरू किए गए मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के माध्यम से हमें जल संरक्षण में ऐतिहासिक सफलता मिली। वर्तमान की हमारी सरकार ने इसी कड़ी को आगे बढ़ाने का कार्य किया है। जन-जन के सहयोग से यह अभियान भी सफल होगा और अपेक्षित परिणाम प्राप्त होंगे। प्रमुख शासन सचिव खान एवं पेट्रोलियम विभाग तथा जिले के प्रभारी सचिव टी रविकांत ने कहा कि यहा एक जन अभियान है, जल संरक्षण की दिशा में जनचेतना से ऐतिहासिक कार्य होंगे।

प्रेस वार्ता में सवालों का जवाब देते हुए जिला कलेक्टर नमित मेहता ने कहा कि अभियान की एप के जरिए सतत मॉनिटरिंग होगी, मय फोटोग्राफ एवं जिओ टैगिंग के माध्यम से शासन स्तर पर भी लगातार मॉनिटरिंग की जाएगी। मेनार रामसर साइट की आवश्यकताओं तथा उसके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सरकार ने कमेटी बनाई है। उन्होंने कहा कि विभिन्न तालाबों के अतिक्रमणों को हटाने के निर्देश अधिकारियों को दिए गए हैं। अभियान के दौरान जिले की समस्त बावड़ियों का भी जीर्णाद्धार होगा। झीलों में लोग कचरा ना फेंके इस संबंध में ठोस प्रयास करेंगे। उन्होंने बताया कि इस वर्ष हरियालो राजस्थान अभियान के तहत जिले में मानसून के दौरान 38 लाख पौधारोपण किया जाएगा। सीईओ जिला परिषद रिया डाबी ने अभियान की सामान्य जानकारी तथा जिले में होने वाली गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

रन फॉर एन्वायरमेंट के बढ़ता प्लास्टिक मुक्त भविष्य की ओर से कदम

उदयपुर, । विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत गुरूवार सुबह उदयपुरवासियों ने रन फॉर एन्वायरमेंट मैराथन में भाग लेकर प्लास्टिक मुक्त भविष्य की ओर कदम बढाए। जिला प्रशासन और राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के तत्वावधान में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में तकरीबन 2500 लोगों ने भाग लेकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति संकल्प प्रदर्शित किया।

रन फॉर एन्वायरमेंट का आगाज शिल्पग्राम मार्ग स्थित होटल ग्रैंड व्हैंगम से हुआ। विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव व एडीजे कुलदीप शर्मा, अतिरिक्त जिला कलक्टर प्रशासन दीपेंद्रसिंह राठौड, प्रशिक्षु आईएएस सृष्टि डबास तथा प्रदूषण नियंत्रण मंडल के क्षेत्रीय अधिकारी शरद सक्सेना ने हरी झण्डी दिखाकर मैराथन का शुभारंभ किया। मैराथन रानी रोड होते हुए पुन: आयोजन स्थल पर पहुंची।

"वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान" के तहत जल संचय संरचनाओं का निर्माण होगा : भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल ने गंगा दशहरा के अवसर पर बूंदी के केशोरायपाटन में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बूंदी के केशोरायपाटन में आयोजित जनसभा को संबोधित किया।

बूंदी/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान में सबसे अधिक आवश्यकता पानी की है। इसलिए हमारी सरकार ने ईआरसीपी, यमुना जल समझौता, इंदिरा गांधी नहर, माही बांध एवं देवास जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर काम किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजस्थान में कर्म भूमि से मातृ भूमि अभियान के जरिये जल संरक्षण का काम किया जा रहा है। वहीं, हमारी सरकार ने पिछले डेढ़ वर्ष में प्रदेश में जल उपलब्धता और जल संरक्षण की दिशा में ऐतिहासिक कार्य किए हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा गुरूवार को विश्व पर्यावरण दिवस व गंगा दशहरा के अवसर पर बूंदी के केशोरायपाटन में 'वंदे गंगा' जल संरक्षण जन अभियान के तहत आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस अभियान के तहत आमजन की सहभागिता से तालाब, पोखर, सरोवर व बांध में जल संचय का कार्य प्रारंभ किया गया है। इससे भूजल स्तर में वृद्धि के साथ ही आमजन को पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि चम्बल राजस्थान के लिए केवल एक नदी ही नहीं बल्कि करोड़ों लोगों के लिए पेयजल एवं सिंचाई का भी प्रमुख स्त्रोत है। इस पर बने बांधों से बिजली का उत्पादन भी हो रहा है। उन्होंने कहा कि चम्बल के पानी से कोटा, बारां एवं बूंदी में 2 लाख 29 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में सिंचाई हो रही है। इसके बेसिन में 7 हजार 355 करोड़ रूपये की लागत से परवन वृहद् सिंचाई परियोजना का कार्य कराया जा रहा है, जिससे कोटा, बारां एवं झालावाड़ जिलों में 2 लाख हेक्टेयर से अधिक सिंचित क्षेत्र सृजित होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि चम्बल नदी पर धौलपुर लिफ्ट सिंचाई परियोजना का कार्य चल रहा है, जिससे धौलपुर जिले में लगभग 40 हजार हेक्टेयर नया सिंचित क्षेत्र विकसित होगा। मानसून के दौरान चम्बल नदी के अधिशेष पानी को लिफ्ट करके धौलपुर जिले में पानी की कमी वाले पार्वती बांध और रामसागर बांध को भरने का काम किया जाएगा। इसलिए चंबल जैसी नदियों एवं अन्य जल स्त्रोतों को सहेजने एवं उनके संरक्षण के लिए 'वंदे गंगा' जल संरक्षण-जन अभियान के रूप में एक नई पहल की गई है। शर्मा ने कहा कि 'वंदे गंगा' जल संरक्षण-जन अभियान

■ मुख्यमंत्री ने केशव घाट पर विधिवत रूप से मंत्रोच्चार के साथ चम्बल मां (चर्मण्यवती नदी) की पूजा की

के तहत जल संचय संरचनाओं का निर्माण किया जाएगा, जल स्त्रोतों की साफ-सफाई के कार्य किए जाएंगे और परंपरागत जलाशयों के स्वरूप को पुनः बहाल किया जाएगा। यह अभियान आगामी 20 जून तक पूरे प्रदेश में चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि हमारी कोशिश है कि हर गांव, हर शहर और हर व्यक्ति तक जल संरक्षण का संदेश पहुंचे और राजस्थान पूरे देश में जल संरक्षण के प्रयासों की एक मिसाल बने।

मुख्यमंत्री ने कहा कि रामजल सेतु लिंक परियोजना के माध्यम से 17 जिलों की जल आवश्यकता पूरी होगी साथ ही, 4 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में सिंचाई भी हो सकेगी। उन्होंने कहा कि रामगढ़ (कूल नदी), महलपुर (पार्वती नदी) व नवनेरा (कालीसिंध नदी) बैराज का पानी बीसलपुर और इसरदा बांधों में लाया जा सकेगा। वहीं, शेखावाटी क्षेत्र को भी यमुना का जल मिलेगा। शर्मा ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान प्रारंभ किया। हमारी सरकार ने भी पिछले वर्ष 7 करोड़ से अधिक पौधे लगाए। ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश में जल उपलब्धता के लिए निरंतर भगीरथ कार्य कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने 'वंदे गंगा' जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत केशव घाट पर विधिवत रूप से मंत्रोच्चार के साथ चम्बल मां (चर्मण्यवती नदी) की पूजा की। उन्होंने चुनरी महोत्सव में भी शिरकत की। मुख्यमंत्री द्वारा अर्पित की गई चुनरी को नाव और बोट्स के माध्यम से चम्बल नदी पर केशव घाट से रंगपुर घाट तक ले जाया गया। इससे पहले शर्मा ने श्री केशवराय मंदिर में विधिवत पूजा-अर्चना कर प्रदेश की सुख-समृद्धि की कामना की। इस दौरान मंदिर के पुजारियों ने उन्हें 'वंदे गंगा' जल संरक्षण जन अभियान की पहल के लिए अभिनन्दन पत्र दिया। इस अवसर पर विधायक संदीप शर्मा, कल्पना देवी सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि, अधिकारी व बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

दो नाबालिग से दुष्कर्म

बीकानेर, (निसं)। श्रीडूंगरगढ़ में दो नाबालिग बच्चियों से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। आरोप है कि दोनों के साथ एक मंदिर के पुजारी ने रेप किया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार दो नाबालिग लड़कियां अपने ननिहाल आई हुई थी। आठ और नौ साल की ये मासूम बच्चियां परिजनों को बिना बताए एक मंदिर में दर्शन करने चली गई। मंदिर पुजारी ने पहले प्रसाद देने के बहाने उनसे बात की, फिर नई चप्पल देने के बहाने मंदिर के पीछे ले गया, जहां दोनों के साथ दुष्कर्म किया।

"वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान" को हमें जन-जन का अभियान बनाना है : दिया कुमारी

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने विधि-विधान से पीपल का वृक्षारोपण कर अभियान का शुभारंभ किया।

ब्यावर, (निसं)। गंगा दशहरा और विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर "वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान" की शुरुआत ब्यावर में की गई। कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने विधि-विधान से पीपल का वृक्षारोपण कर "वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान" का शुभारंभ किया और उपस्थित जनसमूह को जल संरक्षण व पर्यावरण संतुलन हेतु जागरूक किया।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि जल संरक्षण केवल एक अभियान नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के अस्तित्व से जुड़ा संकल्प है। "वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान" को हमें जन-जन का अभियान बनाना है। पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण, जल-संरक्षण और पॉलिथीन के प्रयोग से बचना बेहद जरूरी है। उन्होंने ब्यावर के युवाओं की नवाचारी सोच की सराहना करते हुए कहा कि ब्यावर के युवा भी विकसित भारत की दिशा में नवाचार कर रहे हैं। इसी क्रम में युवा स्टार्टअप कार्तिकेय देवड़ा द्वारा निर्मित जैव अपघटनीय व कम्पोजेबल कैरी बैग्स का वितरण किया गया। इस अनूठी पहल की सराहना करते हुए उपमुख्यमंत्री ने इसे राज्य स्तरीय पहचान दिलाने का आश्वासन भी दिया। जिला कलेक्टर डॉ. खड़गावत द्वारा प्रस्तुत विस्तृत प्रस्ताव पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ब्यावर में वन क्षेत्र और खनन क्षेत्र के संतुलन के साथ पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। वंदे गंगा जैसे अभियान इस दिशा में नई ऊर्जा देंगे। हमें बारिश का हर बूंद पानी सहेजना है, वाटर लेवल बढ़ाना है और सीएसआर के माध्यम से पानी की समस्याओं को दूर करना है।

सभी उपस्थित जनों ने वंदे गंगा अभियान को सफल बनाने का आव्हान किया। अटल वाटिका परिसर में हुए इस राज्य स्तरीय कार्यक्रम में विधायक शंकरसिंह रावत, विधायक प्रतिनिधि वीरेंद्र सिंह कानावत, प्रभारी सचिव विश्राम मीणा, कलेक्टर डॉ. महेन्द्र खड़गावत, अति. कलेक्टर मोहनलाल खटनावलिया, परिषद आयुक्त, उपखंड अधिकारी दिव्यांश सिंह, एसीईओ गोपाललाल सहित कई अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

खराब फर्नीचर देने पर कंपनी को हर्जाना चुकाने के आदेश

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान राज्य उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग ने एक महत्वपूर्ण फैसले में उपभोक्ता को राहत देते हुए फर्नीचर निर्माता कंपनी को खराब फर्नीचर देने पर भुगतान राशि लौटाने के साथ ही हर्जाना देने का आदेश दिया है। यह मामला उपभोक्ता मनोज रहडू की ओर से मैनहटन फर्नीचर्स (द सोफा मेकर एलएलपी) के खिलाफ दायर शिकायत से जुड़ा है, जिसमें खराब गुणवत्ता वाले सोफे की आपूर्ति और अनुचित व्यापार व्यवहार का आरोप लगाया गया था।

■ राज्य उपभोक्ता आयोग जोधपुर ने फैसला सुनाया

जानकारी के अनुसार बासनी सरस्वती नगर निवासी मनोज रहडू ने आयोग में शिकायत दर्ज कराई थी कि उन्होंने 17 अक्टूबर 2017 को मैनहटन फर्नीचर्स से सोफा-कम-बेड खरीदा था। कंपनी ने विज्ञापन में जिस गुणवत्ता और सुविधाओं का दावा किया था, वह सोफे में नहीं मिली। सोफा बनाने में प्रयुक्त सामग्री घटिया थी। हैंडरेस्ट, कुशन और अन्य वादे किए गए फीचर्स भी नहीं थे। इसके अलावा सोफे के उपयोग से उपभोक्ता को शारीरिक और मानसिक परेशानी भी हुई। परिवाद पर सुनवाई करते हुए जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग (द्वितीय) जोधपुर के पीठासीन अध्यक्ष डॉ. श्यामसुंदर लाटा और सदस्य डॉ. अनुराधा व्यास ने अपने आदेश में माना कि कंपनी द्वारा उपभोक्ता को घटिया गुणवत्ता का सोफा-कम-बेड दिया गया, जिससे उपभोक्ता को आर्थिक, शारीरिक और मानसिक क्षति हुई। आयोग ने कंपनी को आदेश दिया कि वह उपभोक्ता को दो माह के भीतर सोफे की कीमत 46 हजार 800 रुपए, मानसिक क्षति के लिए एक लाख रुपए और मुकदमे का खर्च पांच हजार रुपए अदा करें। यदि भुगतान समय पर नहीं किया गया तो वार्षिक ब्याज भी देना होगा।

फर्नीचर कंपनी ने जिला उपभोक्ता आयोग के फैसले के खिलाफ राज्य उपभोक्ता आयोग जोधपुर में अपील की। राज्य आयोग के अध्यक्ष जस्टिस देवेंद्र कच्छवाहा और सदस्य लियाकत अली ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद जिला आयोग के फैसले को सही ठहराया और अपील खारिज कर दी। आयोग ने स्पष्ट किया कि अपील में देरी और गुण-दोष दोनों के आधार पर जिला आयोग का आदेश बरकरार रहेगा।

पानी की मांग को लेकर समर्थकों के साथ पार्षद टंकी पर चढ़ा

जोधपुर, (कासं)। शहर में पानी की समस्या को लेकर आए दिन धरना-प्रदर्शन हो रहे हैं। इसमें जनप्रतिनिधि भी शामिल होकर प्रदर्शन कर रहे हैं। ये जनप्रतिनिधि पानी की मांग को लेकर टंकी पर भी चढ़ रहे हैं। हाल ही में एक महिला प्रधान व उपसरपंच पानी की टंकी पर चढ़े थे। अब गुरुवार को सुबह एक पार्षद अपने समर्थकों के साथ टंकी पर चढ़कर बैठ गया। कई घंटों की लंबी समझाइश के बाद वह नीचे उतरा।

■ कई घंटों की समझाइश के बाद पार्षद दलपत वैष्णव को नीचे उतारा

पानी की समस्या को लेकर नगर निगम दक्षिण में वार्ड नंबर दो से पार्षद दलपत वैष्णव गुरुवार सुबह हुडको चौराहा पर शुभम अस्पताल के पास टंकी पर चढ़ गए। पार्षद का कहना है कि उनके वार्ड के कमला नेहरू नगर, हुडको क्वार्टर जैसे एरिया में पानी प्रेशर से नहीं आ रहा है, जिससे लोगों को पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। इसके साथ ही वार्ड नंबर चार में भी यही समस्या है। पार्षद ने बताया कि चार साल से इस मामले को लेकर हम शिकायत कर रहे हैं लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं हो पाया है। सूरसागर विधायक देवेंद्र जोशी से भी बातचीत हुई है लेकिन समाधान नहीं निकल पाया। हालत ये है कि टंकी के आसपास के घरों में भी पानी प्रेशर से नहीं आ रहा है। इस कारण लोगों को टैंकरों से पानी मंगाकर काम चलाना पड़ रहा है। एक टैंकर पीने के मीठे पानी का 700 और नहाने-धोने के खारा पानी का 400 रुपए ले रहा है। पार्षद ने बताया कि कल ही जलदाय विभाग ने यहां 12 कनेक्शनों को अवैध बताते हुए काट दिया। जिस पर लोगों ने कहा कि उनके कनेक्शन वैध हैं। ये कनेक्शन घरों से सौ फीट दूर पर डाली हुई पाइप लाइन से जुड़े हुए थे। अब विभाग का रहा है कि इनको दोबारा 700 फीट दूर डाली गई पाइपलाइन से जोड़ो और सड़क खोदने-बनाने सहित सारा खर्चा भी खुद ही वहन करो। टंकी पर चढ़ने की सूचना मिलने पर प्रतापनगर एसीपी रविंद्र बोथरा, एक्सईएन नेमीचंद गहलोत, एईएन राधा रानी भी पहुंचे। लंबी समझाइश के बाद पार्षद नीचे उतरे।

Rajasthan State Road Development And Construction Corporation Ltd. JAIPUR

No. NIT/2025-26/7339-52 ई-निविदा सूचना / 2025-26 Date : 04.06.2025

निम्नलिखित कार्य के लिए केंद्र/राज्य सरकार के अभियांत्रिकी विभागों एवं उनके अधिकृत संगठनों में पंजीकृत एवं अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया हेतु ऑनलाइन निविदाएँ आमंत्रित की जाती है।

कार्य का विवरण	कार्य की कुल अनुमानित लागत (रु.)	निविदा सूचना संख्या
Renewal work on Jaipur-Nagaur Road. Sr. No. 03 UBN: (3) RRC2526WLOB00238	7398.59 Lakh	ई-089/ 25-26
Electrification, DG Set, Sub-Station and ELV work in CCB at District Nagaur & Bhilwara. (02 No. works) UBN: (1) RRC2526WSOB00247 (2) RRC2526WLOB00248	632.48 Lakh	ई-134/ 25-26

निविदा से संबंधित प्रपत्र में निविदा शुल्क, धरोहर राशि, डाउनलोड करने व खोलने की तारीख सहित संपूर्ण विवरण एवं संशोधन वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.nic.in तथा http://pwd.rajasthan.gov.in/rsrdc पर देखा जा सकता है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। महाप्रबंधक

RAJASTHAN LIVESTOCK DEVELOPMENT BOARD
Pashudhan Bhawan Parisar, Tonk Road, Jaipur
Phone: 0141-4064974, 2742314

No. :- FV()RLDB/RGM-Fertility Camp/2024/3173 Dated :- 04/06/2025

INVITATION OF E-BIDS FOR PROCUREMENT OF FEED SUPPLEMENT (Minerals Plus Vitamins) (Rate Contract)

E-bids are invited from 10.00 AM on 05.06.2025 to 5.00 PM on 04.07.2025 from the Manufacturers for the procurement of Feed Supplement (Minerals Plus Vitamins) having an estimated value of Rs. 315.70 Lakh for the institutions of Department of Animal Husbandry for a period of 2 year. Details of the bidding document may be seen on the State Public Procurement Portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) and RLDB website i.e. rldb.rajasthan.gov.in and may be downloaded from there.

UBN : ANH2526GLRC00096

Raj.Samwad/C/25/3594 Chief Executive Officer

नगरपालिका मण्डल, रतनगढ़ (राजस्थान)

क्रमांक-निर्माण शाखा/निविदा/2025/606-608 दिनांक : 02.06.2025

निविदा सूचना

नगर पालिका रतनगढ़ की और से नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजिकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र मे ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से ऑन लाईन निविदाऐ आमंत्रित की जाती है जो दिनांक 30.05.2025 से दिनांक 09.06.2025 शाम 6 बजे तक अनुसार डाऊनलोड तथा अपलोड एंव दिनांक 010.06.2025 को दोपहर 2 बजे खोली जायेगी। समस्त कार्यो के लिए धरोहर राशि कार्य की अनुमानित लागत पर नगर पालिका रतनगढ़ में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 1/2 प्रतिशत राशि एवं अन्य विभागो में पंजिकृत सक्षम संवेदको द्वारा 2 प्रतिशत राशि का डी.डी. अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका रतनगढ़ के नाम व रूपये 500/- का डी.डी "M.D. RISL Jaipur" के नाम जयपुर में देय से ऑन लाईन निविदा खोलने से पूर्व नगर पालिका रतनगढ़ में प्रस्तुत करना होगा।

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट www.sppp.raj.nic.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

NIB code- DLB2526A1882

UBN:-

DLB2526WSOB06284	DLB2526WSOB06286	DLB2526WSOB06287
DLB2526WSOB06288	DLB2526WSOB06289	DLB2526WSOB06291
DLB2526WSOB06293	DLB2526WSOB06295	DLB2526WSRC06297
DLB2526WSOB06299	DLB2526WSOB06302	DLB2526WSOB06304
DLB2526WSOB06306	DLB2526WSOB06309	DLB2526WSOB06310
DLB2526WSOB06312	DLB2526WSOB06313	DLB2526WSOB06314
DLB2526WSOB06315	DLB2526WSRC06316	DLB2526WSRC06317
DLB2526WSRC06318	DLB2526WSOB06319	DLB2526WSRC06323
DLB2526WSOB06329	DLB2526WSOB06331	DLB2526WSRC06332
DLB2526WSOB06333	DLB2526WSOB06334	DLB2526WSOB06335
DLB2526WSRC06336	DLB2526WSOB06337	DLB2526WSOB06341
DLB2526WSOB06342		

राज.संवाद/सी/25/3580 अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय नगर परिषद, चौमूँ-जयपुर (राज.)
Tel-01423-220036 e-mail:chomu.jaipur@yahoo.com

क्रमांक/न.प. चौमूँ/2025/839 दिनांक 03.06.2025

-:: शुद्धि-पत्र(CORRIGENDUM) ::-

इस कार्यालय द्वारा जारी ई-निविदा सूचना कमांक 689 दिनांक 22.05.2025 में उल्लेखित संवेदक/निविदादाता योग्यता संबंधी शर्तो में निम्नानुसार संषोधन किया जाता है:-

1. निविदा सूचना के बिन्दु सं. I(8) अनुसार निविदा में भाग लेने वाली इच्छुक निविदादाता फर्म को विगत पांच वित्तीय वर्षो (वित्तीय वर्ष 2019-20 से 2023-24 तक) में प्रत्येक वित्तीय वर्ष में टेण्डर वैल्यू के बराबर टर्न ऑवर के संबंध में सनदी लेखाकार (चार्टेड एकाउटेंट) से प्रमाणित दस्तावेज तकनीकी बिड के साथ अपलोड किया जाना आवश्यक था। जिसमें संषोधन करते हुये इच्छुक निविदादाता फर्म को विगत पांच वित्तीय वर्षो के स्थान पर विगत तीन वित्तीय वर्षो (वित्तीय वर्ष 2021-22 से 2023-24 तक) में प्रत्येक वित्तीय वर्ष के टेण्डर वैल्यू के बराबर टर्नऑवर के संबंध में सनदी लेखाकार (चार्टेड एकाउटेंट) से प्रमाणित दस्तावेज तकनीकी बिड के साथ अपलोड किया जाना आवश्यक होगा।
2. निविदा सूचना के बिन्दु सं. I(9) अनुसार निविदा में भाग लेने वाली इच्छुक निविदादाता फर्म को केन्द्र/राज्य सरकार के किसी भी सरकारी/अर्द्धसरकारी विभाग/निगम/बोर्ड द्वारा विगत पांच वित्तीय वर्षो में प्रत्येक वित्तीय वर्ष के लिए समान प्रकृति के कार्य का संतोषप्रद कार्य करने के संबंध में जारी अनुभव प्रमाण पत्र की प्रति तकनीकी बिड के साथ अपलोड किया जाना आवश्यक था। जिसमें संशोधन करते हुये इच्छुक निविदादाता फर्म को विगत पांच वित्तीय वर्षो के स्थान पर विगत तीन वित्तीय वर्षो (वित्तीय वर्ष 2021-22 से 2023-24 तक) में प्रत्येक वित्तीय वर्ष के लिए समान प्रकृति के कार्य का संतोषप्रद कार्य करने के संबंध में जारी अनुभव प्रमाण पत्र की प्रति तकनीकी बिड के साथ अपलोड किया जाना आवश्यक होगा।
3. निविदा सूचना के बिन्दु सं. II में उल्लेखित कार्य की अवधि अनुबंध निष्पादन/कार्यादेश जारी किये जाने की दिनांक से वित्तीय वर्ष 2025-26 एवं 2026-27 सह्वन से अंकित होने के कारण उक्त के स्थान पर केवल वित्तीय वर्ष 2025-26 की पढा जावें।
4. निविदा की शेष शर्ते यथावत रहेगी।

NIB CODE : DLB2526A1608
UBN NO. : DLB2526SLOB05530, DLB2526SLOB05532
TENDER ID : 2025_DLB_471777_1, 2025_DLB_471835_1

राज.संवाद/सी/25/3635 सभापति नगर परिषद चौमूँ आयुक्त नगर परिषद चौमूँ

नगर निगम जोधपुर-दक्षिण

क्रमांक:- एफ.10/EE-city/2025-26/4671 दिनांक:- 03.06.2025

:: अल्पकालीन ई-निविदा सूचना ::
(UB NO. DLB2526WSOB06612)

नगर निगम जोधपुर-दक्षिण की ओर से विभिन्न सिविल कार्यो हेतु ऑनलाईन ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। ई-निविदा से संबंधित कार्यो की विस्तृत जानकारी, निविदा की शर्ते आदि http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in एवं https://lsg.Rajasthan.gov.in/mcjs पर देखी जा सकती है।

महापौर नगर निगम जोधपुर-दक्षिण आयुक्त नगर निगम जोधपुर-दक्षिण

राज.संवाद/सी/25/3680

कार्यालय नगरपालिका मण्डल, सुमेरपुर, जिला - पाली

क्रमांक : न.पा.सु/विकास/ई-निविदा/2025-26/1733 दिनांक : 04.06.2025

-: अल्पकालीन ई-निविदा 08/2025-26 सूचना :-

नगरपालिका मण्डल, सुमेरपुर की ओर से मान्यता प्राप्त पंजीकृत ठेकेदारों से निविदा द्वारा 02 विकास कार्यो की कुल लागत 17.43 लाख रूपये की निविदा आमंत्रित की जाती है। आंशिक अथवा पूर्णतः निविदा स्वीकृत/ अस्वीकृत करने का अधिकार ई-निविदा स्वीकृत अधिकारी को होगा। ई-निविदा की विस्तृत जानकारी व शर्ते कार्यालय में एवं विभाग की वेब साईट www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व पढी जा सकती है।

जिनके UBN No. निम्नलिखित है:-
1. DLB2526WSOB06791
2. DLB2526WSOB06792

Bid Selling Last Date	10/06/2025 / 10.00 Am

राज.संवाद/सी/25/3596 प्रशासक अधिशाषी अधिकारी

AJMER VIDYUT VITRAN NIGAM LIMITED
Office of Superintending Engineer (Project)
Corporate Identification Number (CIN) – U40109RJ2000SGC016482
Regd. Off. Vidyut Bhawan, Panchsheel Nagar, Makarwali Road, Ajmer 305004
Ph./Fax-0145-2644094, 2644064, E-mailseprojectavvnl@gmail.com
Website:-www.energy.rajasthan.gov.in/avvnl

Short Term E- Tender Notice

E-bids are invited in two parts (Techno-Commercial Bid & Price Bid)from eligible bidders for Supply, Erection, Installation, Testing & commissioning of material/equipment for development of distribution infrastructure work for Segregation of 11 KV mixed feeders at14 circles (Ajmer, Bhilwara, Beawar, Nagaur, Deedwana-Kuchaman, Jhunjhunu, Sikar, Dungarpur, Chittorgarh, Udaipur, Rajsamand, Salumber, Pratapgarh, Banswara) of AVVNL, Rajasthan under Revamped Reforms-Based and Results-Linked, Distribution Sector Scheme on turnkey basis against TN-154 to 169. All the details regarding tenders are available at our website www.energy.rajasthan.gov.in/avvnl and www.eproc.rajasthan.gov.in. In future, corrigendum/extension etc. if any, shall be published only at web site www.energy.rajasthan.gov.in/avvnl and www.eproc.rajasthan.gov.in. UBN - AVV2526WLOB00134

Raj.Samwad/C/25/3573 Superintending Engineer (Project)

कार्यालय नगर पालिका मण्डल, राजगढ (चूरू)
E- Mail Address - eonp.sdlp@ yahoo.in Fax & Phone :- 01559 – 222039

क्रमांक :-न.पा.रा./2025-26/1388-1389 दिनांक :- 02.06.2025

निविदा सूचना 13/2025-26

समस्त पंजीकृत ठेकेदारों/प्लेसमेन्ट एजेन्सियों/कम्पनीयों/फर्मो को सूचित किया जाता है कि नगरपालिका राजगढ़ द्वारा वर्ष 2025-26 के लिए निविदा आमन्त्रण की जा रही हैं। निविदाऐं दिनाकं 12.06.25 को सांय 06:00 बजे तक विक्रय की जाकर दिनांक 13.06.2025 को सांय 02:00बजे तक प्राप्त की जावेगी, तथा निविदाऐं दिनांक 13.06.2025 को सांय 04:00बजे सक्षम अधिकारी की उपस्थिति में खोली जायेगी। जिसकी निविदा से सम्बन्धित अन्य विवरण व शर्ते वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in/ पर देखी जा सकती हैं।

NIB Code	UBN No.
DLB2526A1947	DLB2526WSOB06494
	DLB2526WSOB06496
	DLB2526WSOB06497
	DLB2526WSOB06498
	DLB2526WSOB06499
	DLB2526WSOB06501
	DLB2526WSOB06506

राज.संवाद/सी/25/3601 अधिशाषी अधिकारी

कार्यालय नगर परिषद निम्बाहेड़ा जिला - चित्तौड़गढ़ (राज.)

क्रमांक/नपनि/निर्माण/25-26/1648 दिनांक 04/06/2025

निविदा सूचना नं. 07/2025-26

नगरपरिषद निम्बाहेड़ा द्वारा नगर निकाय में उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं अन्य विभागो में 'ए' एवं 'एए' श्रेणी में पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूमेन्ट प्रक्रिया से वेबसाईड eproc.rajasthan.gov.in पर ऑन लाईन निविदाएं आमन्त्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण sppp.rajasthan.gov.in के NIB Code DLB2526A2033 पर भी देख सकते है:-

कार्य निविदा के कार्य	कुल 6 कार्य
निविदा की अनुमानित लागत	राशि 560.00 लाख रूपये
ऑनलाईन निविदा फार्म मिलने की दिनांक	04.06.2025 प्रातः 10.00 बजे से
ऑनलाईन निविदा फार्म जमा कराने की अन्तिम दिनांक	16.06.2025 प्रातः 10.00 बजे से
ऑन लाईन राशि जमा करवाने की अन्तिम दिनांक	16.06.2025 प्रातः 10.00 बजे तक
तकनीकी बिड खोलने की दिनांक	17.06.2025 दोपहर 12.00 बजे
वित्तीय बिड खोलने की दिनांक	तकनीकी बिड मूल्यांकन पश्चात

Unique Bid Number
(DLB2526WSOB06709), (DLB2526WSRC06701), (DLB2526WSRC06702)
(DLB2526WSRC06704), (DLB2526WSRC06705), (DLB2526WSRC06708)

प्रशासक नगर परिषद निम्बाहेड़ा आयुक्त नगर परिषद निम्बाहेड़ा

राज.संवाद/सी/25/3638

RIICO GROW WITH RAJASTHAN
राजस्थान सरकार का उपक्रम
RISING RAJASTHAN REPLETE • RESPONSIBLE • READY

औद्योगिक क्षेत्रों में संस्थानिक/ वाणिज्यिक/ ग्रुप हाउसिंग एवं गैर औद्योगिक भूखण्डों का सरल ई-नीलामी के माध्यम से आवंटन

अंतिम 4 दिन शेष

कुल भूखण्ड 379 | अस्पताल/नर्सिंग होम/डिस्पेंसरी 20 | व्यावसायिक भूखण्ड 165 | आवासीय/ग्रुप हाउसिंग 133 | वे ब्रिज 11
होटल 13 | पेट्रोल पम्प/CNG स्टेशन 11 | स्कूल 05 | संस्थानिक 21

ईएमडी अंतिम तिथि: 09 जून, 2025 (सायं 06:00 बजे)
ऑनलाईन बिड प्रारम्भ तिथि: 10 जून, 2025 (प्रातः 10:00 बजे) अंतिम तिथि: 12 जून, 2025 (सायं 05:00 बजे)
15 आबू रोड़, 07 जयपुर (उत्तर), 16 अजमेर, 02 जयपुर (दक्षिण), 12 अलवर, 14 जयपुर (ग्रामीण), 13 भिवाड़ी-I, 15 ईपीआईपी सीतापुरा, जयपुर, 09 भिवाड़ी-II, 06 बालोतरा, 21 बोरानाडा, 12 किशनगढ़, 02 दौसा, 15 नीमराना, 05 घिलोठ

ईएमडी अंतिम तिथि: 10 जून, 2025 (सायं 06:00 बजे)
ऑनलाईन बिड प्रारम्भ तिथि: 11 जून, 2025 (प्रातः 10:00 बजे) अंतिम तिथि: 13 जून, 2025 (सायं 05:00 बजे)
07 उदयपुर, 06 श्रीगंगानगर, 04 बांसवाड़ा, 22 झालावाड़, 14 भरतपुर, 10 झुंझुनू, 38 भीलवाड़ा, 22 कोटा, 17 बीकानेर, 01 नागौर, 07 चूरू, 10 राजसमंद, 02 पाली, 45 सवाई माधोपुर, 10 सीकर

*25% भुगतान के बाद, शेष 75% भुगतान 11 किश्तों में 8.5% ब्याज के साथ या 120 दिनों के भीतर ब्याज रहित भुगतान

आवेदन के लिए QR कोड स्कैन करें

राजस्थान स्टेट इण्डस्ट्रियल डवलपमेन्ट एण्ड इन्वेस्टमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
उद्योग भवन, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर-302005
ई-नीलामी हैल्पलाइन नं. 0141-4593250, 4593237, व्हाट्सएप: +91 9001306515, ई-मेल: riico@riico.co.in
आवंटन से सम्बंधित नियमों एवं शर्तें, ईएमडी विवरण, रजिस्ट्रेशन एवं भूखण्ड से सम्बंधित जानकारी के लिए देखें https://riico. rajasthan.gov.in या https://www.riico.co.in
RIICO Mobile App App Store Google Play

राज.संवाद/सी/25/3661

पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण व स्वच्छता अभियानों में आमजन की सहभागिता हो : मदन राठौड़

मानसून वृक्षारोपण का उचित समय, एक पेड़ लगाकर ना करें इतिश्री, अधिक से अधिक संख्या में पेड़ लगाएं : मदन राठौड़

जयपुर,। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यालय परिसर में अशोक के वृक्ष लगाकर प्रदेशवासियों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने का आव्हान किया तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छता अभियान एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा संचालित वर्षा जल संरक्षण अभियान से जुडने की अपील की।

- **विश्व पर्यावरण दिवस पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ का वृक्षारोपण व जल संरक्षण का किया आव्हान**
- **भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने आमजन से आव्हान किया कि वे ऐसे पौधे लगाएं जो न केवल पर्यावरण को लाभ दें बल्कि मानसून को भी आकर्षित करें**

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यालय परिसर में अशोक का वृक्ष लगाकर प्रदेशवासियों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

राठौड़ ने कहा कि मानसून के आगमन के साथ ही पेड लगाने का सर्वाधिक उपयुक्त समय आ गया है। उन्होंने कहा, एक पेड लगाकर इतिश्री न करें, बल्कि व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण करें। ऐसे स्थानों का चयन करें जहां पेडों की कटाई की आवश्यकता न पडे। उन्होंने यह भी कहा कि मानसून के दौरान पौधारोपण में अपेक्षाकृत कम श्रम और समय लगता है, जिससे अधिक पौधों का रोपण संभव है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने आमजन से आव्हान किया कि वे ऐसे पौधे लगाएं जो न केवल पर्यावरण को लाभ दें बल्कि मानसून को भी आकर्षित करें। राठौड ने यह भी बताया कि कुछ स्थानों पर ऐसे पेड लगे हैं जो वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड छोडते हैं, अत: ऐसे पेडों के उन्मूलन की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने जल संरक्षण की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि, मानसून काल में वर्षा जल को संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक है। टांकों, बावडी, तालाबों और खेतों में जल पहुंचाने वाले मार्गों को स्वच्छ रखें और उनमें किसी भी प्रकार का अवरोध न आने दें।

उन्होंने वर्षा जल तालाब तक जाने वाले मार्ग में अतिक्रमण न करने और वर्षा जल को अधिकतम संरक्षित करने की अपील की। स्वयं राठौड ने आमेर रोड जलमहल के सामने पुराने काले हनुमान मंदिर परिसर में स्थित बावडी की साफ-सफाई कर जल स्त्रोतों के स्वच्छता अभियान का शुभारंभ किया। इस दौरान भाजपा महामंत्री श्रवण सिंह बगडी, विधायक बाल मुकुंदाचार्य, भाजपा नेता रवि नैय्यर, जिलाध्यक्ष अमित गोयल, पूर्व महापौर ज्योति खंडेलवाल सहित स्थानीय कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने बताया कि भाजपा द्वारा गंगा एवं यमुना जैसी नदियों की स्वच्छता के लिए कई परियोजनाएं संचालित की जा रही हैं। उन्होंने जनता से अनुरोध किया कि वे नदी, तालाब में शव अथवा अन्य अपशिष्ट पदार्थ न डालें और जल स्त्रोतों की पवित्रता बनाए रखें। राठौड ने कहा कि भाजपा न केवल राजनीतिक संगठन है, बल्कि सामाजिक व पर्यावरणीय उत्तरदायित्व को भी पूर्ण निष्ठा से निभा रही है। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं और नागरिकों से पर्यावरण संरक्षण, जल सरंक्षण और स्वच्छता अभियानों से जुडने का आठाह किया। भाजपा कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान भाजपा महामंत्री श्रवण सिंह बगडी, प्रदेश मंत्री आईदान सिंह भाटी, नागौर जिला प्रभारी अशोक सैनी, उद्यान समिति अध्यक्ष नगर निगम हेरिटेज पूनम शर्मा, भाजपा प्रदेश कार्यालय सह प्रभारी रजनीश चनाना सहित भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी का अजमेर दौरा

जयपुर। शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी श्री राजन विशाल ने अजमेर में कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि अनुसंधान उप केन्द्र , राजस्थान राज्य बीज निगम, ग्राहय परीक्षण केन्द्र , लैब, राजहंस नर्सरी तथा केन्द्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र तबीजी में निरीक्षण किया और अनुसंधान को प्रयोगशाला से खेत तक ले जाने पर जोर दिया। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र आयोजित गतिविधियों का अवलोकन कर कहा कि प्रशिक्षणों में किसानो की डुप्लीकेशन का केवीके, आत्मा एवं कृषि विभाग में चयन के दौरान ध्यान रखा जाए एवं साथ ही किसानों को वेदर एडवाइजरी संदेश, वाट्सअप ग्रुप पर देने के निर्देश दिये।

सेन्टर पर लिये गये परीक्षणों के आब्जर्वेशन एवं निष्कर्षों का अवलोकन करने के उपरांत गेहूं, तथा दलहनी फसलों की क्लाईमेट रेजिलेन्ट किस्मे विकसित करने के लिये निदेशक, कृषि अनुसंधान उपकेन्द्र को निर्देशित किया। राजस्थान राज्य बीज निगम ईकाई का निरीक्षण कर परिसर में निर्माणाधीन कार्यालय भवन का निर्माण 30 जून 2025 तक पूर्ण कराने के संबंध में उपस्थित सहायक अभियंता , कृषि विपणन बोर्ड को निर्देशित किया। उन्होंने बीज की थैलियो पर लगे टैग पार्कर कोड की स्कैनिंग के लिए सुसंगत छपाई के निर्देश दिए एवं बीज आपूर्ति से पूर्व उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।एटीसी सेन्टर का अवलोकन कर सेंटर पर किए जाने वाले ठाह्य परीक्षणों में ली जाने वाली ऑब्जरवेशन शीट में दिनांक व हस्ताक्षर अंकित करने एवं प्राइवेट संस्थाओं द्वारा आयोजित कराए जाने वाले परीक्षणों की फीस वृद्धि हेतु पत्रावली प्रस्तुत करने हेतु कहा ।केंन्द्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंन्द्र का अवलोकन कर नागौर की कसूरी मेथी को जीआई टैग मे शामिल करने की।

सार-समाचार

बंद पॉलिसी चालू करने के नाम पर युवक से ठगे 74 लाख

जयपुर। मालवीय नगर थाना इलाके में बंद पॉलिसी चालू करने और बकाया राशि वापस लौटाने के नाम पर एक व्यक्ति से 74 लाख रुपए की राशि ठगने का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।जांच एएसआई मुकेश कुमार ने बताया कि मॉडल टाउन निवासी किशोरी लाल ने मामला दर्ज करवाया कि उसके पास आनंद व प्रवीण नाम के शख्स का कॉल आया और कहा कि आपका की बंद पॉलिसी को वापस चालू कर दिया जाएगा, इसके लिए आपको कुछ राशि जमा करानी होगी। यह जमा राशि भी आपको वापस मिल जाएगी। इस प्रकार से झांसे में लेकर आरोपियों ने उससे कई बार में 74 लाख 31 हजार 721 रुपए ले लिए। इसके बाद भी जब न तो उसकी पॉलिसी चालू हुई और ना ही उसे रुपए वापस मिले। ठगी का अहसास होने पर पीडित थाने पहुंचा और मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

महिला बस परिचालक का बैग चोरी

जयपुर। ट्रांसपोर्ट नगर थाना इलाके में किसी ने एक महिला बस परिचालक का बैग चोरी कर लिया। बैग में टिफिन, 27 हजार 335 रुपए और ड्यूटी सम्बंधी दस्तावेज रखे थे। पुलिस के अनुसार चांदपुर कठूमर अलवर निवासी सीमा चौधरी ने मामला दर्ज करवाया कि उसकी ड्यूटी जेसीटीएसएल की बस में रूट नम्बर तीन थी। 3 जून की सुबह उसने अपना बैग बस की कंडक्टर सीट पर बांध दिया और वह टिकट काटने लगी। टिकट काटने के बाद जब वापस वह सीट पर लौटी तो उसका बैग गायब था। इस पर पीडिता ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कार से मोबाइल चोरी

जयपुर। कोतवाली थाना इलाके में टकटक गैंग ने एक कार चालक का मोबाइल पार कर लिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है। पुलिस के अनुसार सिविल लाइंस निवासी डॉ रुद्रांश दाधिच ने मामला दर्ज करवाया कि वह कार लेकर जा रहा था चांदपोल में एक युवक ने कहा कि आपने पैर पर कार चढा दी। इस पर वह उतरकर उसे देखने लगा तो वह कार के पीछे की तरफ चला गया। वह पीछे की तरफ जाने लगा तो इसी दौरान दूसरा युवक आया और उसकी कार की सीट पर रखा मोबाइल लेकर भाग निकला। घटना 3 जून की रात की है। इस पर पीडित ने थाने पहुंच कर शिकायत दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

गोविंददेवजी मंदिर में महिला के गले से सोने की चेन पार

जयपुर। गोविंद देव जी मंदिर दर्शन करने गई महिला के गले से किसी ने सोने की चेन पार कर ली। पीडिता ने इस सम्बंध में माणकचौक थाने में मामला दर्ज करवाया है। पुलिस के अनुसार हवासडक सोडाला निवासी ममता मेहता ने मामला दर्ज करवाया कि वह 3 जून को गोविंददेव जी मंदिर दर्शन करने गई थी। दर्शन करने के दौरान किसी ने उसके गले से सोने की चेन पार कर ली। घटना का पता उसे मंदिर से बाहर निकलने पर लगा। इस पर पीडिता ने पुलिस की शरण ली। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जूनियर समर कैंप

जयपुर। जवाहर कला केंद्र में ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर आयोजित जूनियर समर कैंप जारी है। यहां न सिर्फ बच्चों का हुनर निखारने के लिए उन्हें कलात्मक विधाओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है बल्कि उन्हें भारतीय कला एवं संस्कृति से भी जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। सभी बच्चों ने अपनी रुचि के आधार पर विधाओं का चयन किया है जहां वह संगीत, नृत्य, नाट्यय कला, दृश्य कला, साहित्य आदि विधाओं में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इसी कड़ी में गायन और तबला की कक्षाएं भी जारी हैं। डॉ. सुनील राही बच्चों को गायन का प्रशिक्षण दे रहे हैं। यहां 8 से 17 वर्ष के 12 बच्चे प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं जिन्हें संगीत के विभिन्न आयामों, स्वर साधना और भाव प्रस्तुति के बारे में सिखाया जा रहा है।

पौधारोपण एवं जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर। उत्तर पश्चिम रेलवे जयपुर मंडल पर विश्व पर्यावरण दिवस पर गुरुवार दिनांक 5 जून 2025 के अवसर पर रनिंग रूम परिसर जयपुर में मंडल रेल प्रबन्धक जयपुर श्री विकास पुरवार द्वारा संजीव दीक्षित-अं.मं.रे.प्र.(ओ), गौरव गौड-अं.मं.रे.प्र.(इन्फ्रा) व मंडल के अन्य रेल अधिकारियों, कर्मचारियों को पर्यावरण बचाने के लिए शपथ दिलाई गई एवं मियाबाकी तकनीक को अपनाते हुए वृहद स्तर पर पौधारोपण किया गया। श्रीमती पूजा मित्तल -वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक नें बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जयपुर जंक्शन पर स्काउट्स गाईड द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु यात्रियों को जागरुक करने के लिए नुक्कड़ नाटक किया गया। इस अवसर पर रीसाइकलेबल प्लास्टिक के बेहतरीन उपयोग विषय पर बिसलेरी कंपनी प्रतिनिधी द्वारा संवाद किया गया मंडल रेल प्रबन्धक व अं.मं.रे.प्र.(ओ) द्वारा इस कार्यक्रम मे पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों मे भाग लेने वाले स्काउट्स गाईड,स्कूली बच्चों को पारितोषिक प्रदान किये गये जयपुर मंडल के रेवाडी,अलवर, बाँदीकुई, दौसा,गाँधीनगर , जयपुर, फुलेरा,रींगस, खातीपुरा, दुर्गापुरा, किसनगढ़ एवं सीकर सहित मण्डल के विभिन्न स्टेशनों एवं सभी रनिंग रूम, प्रमुख रेल्वे कॉलोनी,कोचिंग डिपो जयपुर,टीटीई रेस्ट हाउस वेगन डिपो फुलेरा व जयपुर में पर्यावरण दिवस के अवसर पर पौधारोपण व पर्यावरण संरक्षण जागरुकता हेतु कार्यक्रम आयोजित किये गए। मंडल पर मिशन लाईफ कार्यक्रम की थीम एंड प्लास्टिक पॉल्यूशन के अन्तर्गत मंडल पर पिछले एक पखवाडे से पानी बचाओ, बिजली बचाओ,एकल यूज प्लास्टिक का उपयोग किया।

एसआई पेपर लीक मामला: परीक्षा से पूर्व पेपर पढ़ाने वाले तीन आरोपित गिरफ्तार

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने सब इंस्पेक्टर (एसआई) भर्ती पेपर लीक मामले में कार्रवाई करते हुए परीक्षा से पूर्व पेपर पढाने वाले तीन और आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है। एसओजी के एडीजी वीके सिंह ने बताया कि एसआई भर्ती पेपर लीक मामले में एसओजी ने कार्रवाई करते हुए परीक्षा से पूर्व पेपर पढाने वाले आरोपी कुंदन कुमार पण्ड्या (54) निवासी सांगवाडा वरदा डूंगरपुर,संदीप कुमार लाटा (42) निवासी सबलपुरा सीकर और वांछित इनामी पुरुषोत्तम दाधीच (35) निवासी डीडवाना कुचामन को गिरफ्तार किया है।

आईपीएल फाइनल मैच पर लगा करोड़ों का सट्टा

जयपुर। जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल जिला स्पेशल टीम (सीएसटी)और एसओजी ने आईपीएल फाइनल मैच पर सट्टे लगाने वालों पर संयुक्त कार्रवाई करते हुए रामनगरिया थाना इलाके में स्थित अपार्टमेंट के एक फ्लैट पर सटोरिए को गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से करोड़ों के हिसाब सहित सट्टा उपकरण जब्त किए हैं। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त (अपराध) कुंदन कंवरिया ने बताया कि सीएसटी और एसओजी ने आईपीएल फाइनल मैच पर सट्टे लगाने वालों पर संयुक्त कार्रवाई करते हुए रामनगरिया थाना इलाके में

- **फ्लैट से चल रही थी खाईवाली, दबिश देकर पुलिस ने पकड़ा**

की है। जहां आईपीएल क्रिकेट का फाइनल मैच आरसीबी और किंग्स इलेवन पंजाब के बीच था। जयपुर क्राइम ब्रांच और एसओजी की टीम को इलाके में स्थित अपार्टमेंट के फर्स्ट फ्लोर के फ्लैट नंबर-101 में क्रिकेट सट्टे की खाईवाली की सूचना मिली। इस पर पुलिस टीम ने फ्लैट पर दबिश दी। फ्लैट में क्रिकेट मैच की खाईवाली करते मिले सटोरिए मनीष मूलचंदानी (36) निवासी सेक्टर-23 प्रताप नगर हाल रामनगरिया को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से करोड़ों रुपए का सट्टा हिसाब-किताब, 2 मोबाइल, 1 टेबलेट, 1 एलईडी मय सेटअप बॉक्स, 1 मोबाइल चार्जर बरामद किया।

पूछताछ में आरोपी से सामने आया कि वह आईपीएल मैच पर हार-जीत पर सट्टे की खाईवाली का काम करता है। पहले भी कई क्रिकेट मैच पर सट्टा लगावा चुका है। सट्टा खिलाने के लिए भावेश बचयानी से आईडी ले रखी है। पुलिस फिलहाल गिरफ्तार सटोरिए मनीष मूलचंदानी से पूछताछ कर रही है।

चार आरोपितों को पुलिस ने जिला बदर किया

जयपुर। राजस्थान गुण्डा अधिनियम के तहत जिला जयपुर उत्तर पुलिस की ओर से चार आरोपितों को जिला बदर (निष्कासन)तडीपार किया है। पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) राशि डोगरा डूडी ने बताया कि विभिन्न अपराधों को अंजाम देकर समाज में भय और आतंक का माहौल निर्मित करने वाले आपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों के खिलाफ जिले में लगातार कार्यवाही की जा रही है। इसी चलते जिले से असलम खान (50) निवासी जयसिंह पुरा खोर जयपुर, छोटूराम मीणा (44) निवासी आमेर जयपुर, शहाबुद्दीन उर्फ शाबु (38) निवासी गलता गेट जयपुर और आबिद हुसैन (48)निवासी रामगंज जयपुर को एक-एक माह की समय अवधि के लिये जिला बदर किया गया है।

चार केन्टर सामान जब्त

जयपुर । नगर निगम ग्रोटर आयुक्त रूकमणि रियाड के निर्देशानुसार उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार शर्मा के नेतृत्व में गुरूवार को सतर्कता शाखा की टीम द्वारा नगर निगम जयपुर ठोटर के क्षेत्राधिकार में दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन, हल्दीघाटी मार्ग, सेक्टर-3 प्रताप नगर, ई.पी. जवाहर सर्किल से अस्थाई अतिक्रमण को करने वालों से 4 केन्टर सामान जब्त किया गया।

उपायुक्त सतर्कता अजय कुमार ने बताया कि नगर निगम ठोटर क्षेत्राधिकार में दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन, हल्दीघाटी मार्ग, सेक्टर-3 प्रताप नगर, ई.पी. जवाहर सर्किल से अस्थाई अतिक्रमण हटवाया गया। उपरोक्त कार्यवाही के दौरान 4 केन्टर सामान जब्त कर गोदाम में भिजवाया गया।

प्रकृति का संरक्षण केवल एक विकल्प नहीं बल्कि महत्ती आवश्यकता : शर्मा

जयपुर,। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रकृति का संरक्षण केवल एक विकल्प नहीं बल्कि महती आवश्यकता है।

पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को रोकना हमारी नैतिक जिम्मेदारी और कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि राजस्थान की जल संरक्षण की परंपराएं हमारी सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा रही हैं।

हमारे पूर्वजों ने जल को अमृत माना और उसे संरक्षित करने के लिए अनूठे तरीके अपनाए। बावड़ियां, जोहड़, तालाब और कुंए जैसी संरचनाएं राजस्थान की जल संरक्षण की परंपराओं का जीवंत उदाहरण हैं। इसी परम्परा को आगे बढ़ ाते हुए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से राजस्थान में 'वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान' के रूप में एक नई पहल की गई है।

मुख्यमंत्री शर्मा गुरुवार को विश्व पर्यावरण दिवस और गंगा दशहरा के शुभ अवसर पर आरआईसी, जयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि इस अभियान के तहत जल संचय संरचनाओं का निर्माण, जल स्त्रोतों की साफ-सफाई, परंपरागत जलाशयों के स्वरूप को पुन: बहाल करने व इनके संरक्षण के लिए जन जागरूकता से जुड़ी गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा।

कार्यशाला में बनाए वेस्ट से क्राफ्ट आइटम

जयपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जयपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के सिटीज 2.0 के तहत एक कार्यशाला कलर्स ऑफ चेंज आयोजित की गई। इस कार्यशाला में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से स्मार्ट सिटी लिमिटेड के अधिकारी और कर्मचारियों को वेस्ट सामठी से रिसाइकिल कर आर्ट एंड क्राफ्ट आइटम बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें हेरिटेज निगम की ब्रांड एम्बेसडर कर्णिका बाई ने सभी अधिकारियों, कर्मियों और बच्चों को क्राफ्ट आइटम बनाने का प्रशिक्षण दिया। इस दौरान कार्यशाला में प्लास्टिक बोतल, पेपर, कांच बोटल, लकडी के पाट्र्स आदि का पुनरुपयोग किया गया।

'वसुधा मेरी मां' कार्यक्रम के माध्यम से विश्व पर्यावरण दिवस मनाया

जयपुर । विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर यूनाइटेड ग्लोबल पीस फाउंडेशन द्वारा 'वसुधा मेरी मां' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में पर्यावरण संरक्षण, जलवायु संतुलन, वन्यजीव सुरक्षा एवं प्राकृतिक संसाधनों के सतत विकास को लेकर गंभीर चर्चा एवं संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत विश्नोई समाज के धर्मगुरु जंभेश्वर भगवान की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर की गई। फाउंडेशन के चेयरमैन मेघराज सिंह रॉयल ने बताया कि रेगिस्तानी राजस्थान को हरा-भरा बनाने के लिए सभी को एकजुट होकर प्रयास करने होंगे। उन्होंने यह भी साझा किया कि उनके धुन प्रोजेक्ट को पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में ब्रिटेन के किंग चार्ल्स फाउंडेशन एवं कतर देश की राजकुमारी के फाउंडेशन द्वारा सहयोग हेतु चयनित किया गया है।

फाउंडेशन के डायरेक्टर शक्ति सिंह बांदीकुई ने अपने वक्तव्य में कहा कि अब समय आ गया है जब हम प्रकृति को लौटाने का प्रयास करें।

उन्होंने पूर्वजों द्वारा संरक्षित ओरण, गौचर, तालाब, बावड़ी, कुंड जैसी पारंपरिक जल-संरचना प्रणालियों का स्मरण किया। एवम आगामी अगस्त माह में एक ही दिन में 21,000 पौधों का पौधारोपण किया जायेगा। कार्यक्रम में भारतीय मौसम विभाग के पूर्व महानिदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने प्लास्टिक और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग पर गहरी चिंता व्यक्त की। पद्मश्री सुंडाराम वर्मा ने कम जल-उपयोग में पौधारोपण की तकनीक का व्यावहारिक विवरण देते हुए बताया कि मात्र 1 लीटर पानी से लगाया गया पौधा पूरे जीवनकाल में अतिरिक्त जल की आवश्यकता नहीं रखता, जिससे हजारों लीटर जल की बचत संभव है। जल संरक्षण विशेषज्ञ पद्मश्री लक्ष्मण सिंह लापोड़िया ने चौका पद्धित से मृत जलस्त्रोतों को पुनर्जीवित करने और क्षेत्रीय जलस्तर को ऊपर उठाने की जानकारी साझा की।

जयपुर ग्रामीण के पुलिस अधीक्षक देवेन्द्र विश्नोई ने कहा कि गुरु जंभेश्वर भगवान ने सदियों पहले जो पर्यावरणीय सिद्धांत दिए, वे आज भी पूरी तरह प्रासंगिक हैं। उन्होंने वर्तमान जीवनशैली में बदलाव और अंधाधुंध औद्योगीकरण पर विराम लगाने का आव्हान किया। फाउंडेशन के डायरेक्टर एवं शौर्य चक्र विजेता ब्रिगेडियर जितेंद्र सिंह शेखावत ने बताया कि संस्था ने पिछले एक वर्ष में चार करोड़ रुपये से अधिक की सहायता जरूरतमंदों को प्रदान की है और प्रकृति सेवा के क्षेत्र में निरंतर कार्यरत है। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण में विशेष योगदान के लिए सुशील अग्रवाल एवं सुरेंद्र अवाना को पर्यावरण रत्न - 2025 सम्मान से नवाजा गया। अंत में पर्यावरण व जीवरक्षा करते हुए बलिदान देने वाले राधेश्याम पैमानी, श्याम बिश्नोई, कंवराज सिंह भाटी, वनरक्षक सुरेन्द्र चौधरी को पुष्पांजलि अर्पित कर एवं दो मिनट का मौन रखकर भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी गई।

सुशील अग्रवाल एवं सुरेंद्र अवाना को पर्यावरण रत्न -2025 सम्मान से नवाजा।

बैराठी पार्क में पौधारोपण

जयपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में बैराठी फ़ाउण्डेशन, जयपुर द्वारा विश्वकर्मा औद्योगिक क्षेत्र रोड नं. 16 स्थित बैराठी शू कंपनी के सामने पार्क में आज गुरुवार को पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। फाउंडेशन के डॉ. सौरभ बैराठी ने बताया कि सुबह 11 बजे शुरू हुए इस पौधरोपण कार्यक्रम में पीपल और बड़ के बड़े पौधे लगाए गए।

सेवा कार्यों में सदैव अठाणी रहता बैराठी फाउंडेशन डॉ. बैराठी ने बताया कि बैराठी फाउंडेशन समाज सेवा के कार्यों में सदैव अठासर रहता है। पूर्व में फाउंडेशन ने वीकेआई औद्योगिक क्षेत्र और मंडा में 12 हजार पेड़ और लगभग पाँच हज़ार पौधे लगाए और उनके रख-रखाव का दायित्व भी निर्वहन कर रहे हैं। सवाई मानसिंह हॉस्पिटल में किचन, कोरोना काल के दौरान कोरोना सेंटर्स के लिए ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर, बेड, इत्यादि उपलब्ध करवाए गए और जयपुर पुलिस को संक्रमण से बचाने के लिए 10 हजार एन-95 मास्कों का निशुल्क वितरण किया गया।

पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई

जयपुर। पर्यावरण की रक्षा हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। हमें व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करने और ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। चाहे कारण कोई भी हो, पर्यावरण संबंधी समस्याएं सभी को समान रूप से प्रभावित कर रही हैं, इसलिए हम सभी को अपने-

- **प्लास्टिक प्रदूषण को हराना है थीम पर हुए नवाचार और जागरूकता गतिविधियां**

अपने स्तर पर जिम्मेदारी निभानी होगी। यह बात विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर गुरुवार को यहां आयोजित एनके एनवायरो सर्विसेज संस्थान के नए कार्यालय भवन के उद्घाटन अवसर पर पर्यावरणविद् एवं संस्थान की महाप्रबंधक सुनीता मंत्री ने कही।

कार्यक्रम की थीम ह्यप्लास्टिक प्रदूषण को हराना हैह्ण रखी गई, जिसके अनुरूप अनेक नवाचारी और जागरूकता आधारित गतिविधियां आयोजित की गईं।

उद्घाटन समारोह की शुरुआत प्रात: पूजा और हवन से हुई, जिसके बाद वृक्षारोपण कर हरित पर्यावरण की शपथ ली गई।

इस अवसर पर संस्थान के मैनेजिंग पार्टनर मुकेश यादव, सीओओ डॉ. अमूलदास मोहन राज, किरीट आचार्य, निरंजन कुमार गुप्ता आदि ने पेपरलैस वर्क, पर्यावरण संरक्षण एवं प्लास्टिक प्रदूषण पर अंकुश का सभी उपस्थित जनों से आ ान किया। वहीं सुनीता मंत्री ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई।

समारोह में पर्यावरणीय संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त जीवनशैली और सतत् विकास जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। मुख्य सत्र में पर्यावरणीय चुनौतियों और समाधानों पर विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए। साथ ही संस्थान की भावी योजनाओं पर भी प्रकाश डाला गया।

कार्यक्रम को ज्ञानवर्धक और रोचक बनाने के उद्देश्य से प्लास्टिक प्रदूषण पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें पर्यावरण से जुड़े सवालों के माध्यम से प्रतिभागियों की जागरूकता को परखा गया।

विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई।

जन्मदिन मना रहे लोगों पर प्राणघातक हमला, पांच आरोपी गिरफ्तार

आरोपी मामला दर्ज होने के बाद से ही फरार चल रहे थे, पुलिस पूछताछ में जुटी है

अजमेर, (कासं)। गंज थाना क्षेत्र में गत दिनों बर्थ-डे पार्टी मना रहे लोगों पर समुदाय विशेष के लोगों द्वारा एकराय होकर प्राणघातक हमला करने के मामले में गुरुवार को जिला स्पेशल टीम ने समुदाय विशेष के पांच हमलावर आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी मामला दर्ज होने के बाद से ही फरार चल रहे थे। पुलिस आरोपियों से पूछताछ में जुटी है।

एसपी वंदिता राणा ने गुरुवार को मामले का खुलासा करते हुए बताया कि गंज थाना क्षेत्र के नई सड़क रोड निवासी प्रिंस चौहान पुत्र रामचन्द्र ने 3 जून को थाने में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि 2 जून रात्रि 10:30 बजे उसके छोटे भाई की जन्मदिन पार्टी चल रही थी, तभी बदरुद्दीन कुरैशी, सदरूद्दीन कुरैशी, मोहम्मद इकबाल, गुलाम नबी, शेख तौहित सहित अन्य एकराय हथियारों से लैस होकर उन पर प्राणघातक हमला कर दिया। आरोपियों ने मारपीट कर घायल कर दिया। एसपी राणा ने बताया कि आरोपियों की गिरफ्तार के लिए जिला स्पेशल टीम व गंज थाना पुलिस की संयुक्त टीम बनाई गई और आरोपियों की तलाश शुरू की। टीम ने आरोपियों में गली नंबर 4 दरगाह संपर्क सड़क नागफणी निवासी बदरुद्दीन कुरैशी पुत्र फकरूदीन कुरैशी, उसका भाई सदरूद्दीन कुरैशी व संपर्क सड़क गली 9 मदरसे के पीछे लौंगिया मोहल्ला निवासी मोहम्मद इकबाल पुत्र मोहम्मद इशाक, ताराशाह नगर नई सड़क निवासी गुलाम नबी पुत्र मोहम्मद रमजान और शेख तौहित पुत्र शेख मुमताज को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस टीम हमले में शामिल उनके अन्य साथियों के विषय में पूछताछ कर रही है और छापेमारी कर अन्य आरोपियों की तलाश में जुटी है।

पुलिस ने हमला करने के आरोपियों को गिरफ्तार किया।

- जिला स्पेशल टीम व साइबर सेल की मदद से एक-एक कर आरोपियों को दबोचा

गंज थाने के सीआई महावीर सिंह राठौड़ ने बताया कि पुलिस टीम ने जब आरोपियों की तलाश की तो वह घर से फरार हो गए थे। ऐसे में जिला स्पेशल टीम व साइबर सेल की मदद से एक-एक कर 5 आरोपितों को दबोचा है। टीम में सीआई राठौड़, एएसआई राजेन्द्र प्रसाद, हैड कांस्टेबल लालसिंह, प्रभात कुमार, कांस्टेबल सुमेर कुमार, प्रदीप सिंह, सुभाष, राजेश, रामचन्द्र, पंकज व चेनाराम और जिला स्पेशल टीम के प्रभारी शंकर सिंह रावत, हैड कांस्टेबल सीताराम, कांस्टेबल रामनिवास, जितेन्द्र, गजेन्द्र, मुकेश टाण्डी व मनोज सिंह एवं साइबर सैल के हैड कांस्टेबल मुकेश व कांस्टेबल सुरेश शामिल रहे। पुलिस अन्य ओपियों की तलाश में जुटी है।

उचित मूल्य दुकानदार पर राशन गबन का आरोप

रसद विभाग की जांच में 23 क्विंटल से अधिक गेहूं के गबन की पुष्टि हुई

बीकानेर, (निसं)। जिले की नोखा तहसील के बीकासर गांव में एक उचित मूल्य दुकानदार द्वारा राशन गबन का गंभीर मामला सामने आने के बाद आरोपी दुकानदार पूनम चंद बिश्नोई के खिलाफ नोखा थाने में एफआईआर दर्ज करवाई गई है। रसद विभाग की जांच में 23 क्विंटल से अधिक गेहूं के गबन की पुष्टि हुई है। खुलासे के बाद प्रशासन हरकत में आया और लाइसेंस निलंबन के बाद अब आपराधिक मामला भी दर्ज किया गया है।

- ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि दुकानदार ने बिना राशन दिए ही ई-मशीन पर उनके अंगूठा लगवा लिये
- कई बार पूछने पर यह कहकर टाल दिया जाता था कि अगली बार मिलेगा, लेकिन राशन कभी नहीं दिया गया

बीकासर गांव के ग्रामीणों ने जांच अधिकारियों को बताया कि उचित मूल्य दुकानदार पूनम चंद बिश्नोई ने ई-केवाईसी के नाम पर ग्रामीणों से अंगूठा तो लगवाया, लेकिन राशन नहीं दिया। रसद विभाग के प्रवर्तन निरीक्षक राहुल गुलानी द्वारा दर्ज करवाई गई पुलिस रिपोर्ट के अनुसार, दुकान पर गेहूं का 30,408 किलो स्टॉक होना चाहिए था, जबकि मौके पर केवल 6,800 किलो गेहूं पाया गया। इस प्रकार 23,608 किलो गेहूं गायब मिला, जिसे गबन माना गया है।

प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी पूनम चंद ने सरकार द्वारा चलाए जा रहे गिवअप अभियान में भी कोई सहयोग नहीं किया। ग्रामीणों ने साफ-साफ आरोप लगाया है कि दुकानदार ने बिना राशन दिए ही ई-मशीन पर उनका अंगूठा लगवा लिया, जिससे वह रिकॉर्ड में राशन वितरण दिखाता रहा। रसद विभाग ने आरोपी का लाइसेंस निलंबित कर दिया और अगले ही दिन एफआईआर भी दर्ज हो गई।

इस मामले को खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने भी गंभीरता से लिया। उन्होंने अधिकारियों को तलब कर कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए। जिला रसद अधिकारी नरेंद्र शर्मा ने स्पष्ट किया कि किसी भी उपभोक्ता के हक के राशन का गबन करना गंभीर अपराध है। जिले में भविष्य में भी इस तरह की शिकायतों पर कठोर कार्रवाई की जाएगी। बीकासर गांव के ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि दुकानदार महीने दर महीने बिना राशन दिए उनसे अंगूठा लगवाता रहा। कई बार पूछने पर यह कहकर टाल दिया जाता कि अगली बार मिलेगा, लेकिन राशन कभी नहीं दिया गया।

मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन ईसरदा बांध, चम्बल एक्वाडक्ट कार्यों का निरीक्षण किया

बूंदी/जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरूवार को संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना के अंतर्गत विभिन्न कॉम्पोनेंट्स का हवाई निरीक्षण किया। उन्होंने निर्माणाधीन ईसरदा बांध, नवनिर्मित नवनेरा बैराज और चम्बल नदी पर एक्वाडक्ट के निर्माण कार्य स्थलों का जायजा लिया। शर्मा ने राम जल सेतु लिंक परियोजना (संशोधित पीकेसी परियोजना) के लिए महत्वपूर्ण एक्वाडक्ट के कार्य प्रगति की समीक्षा की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि यह जल परियोजनाओं को आपस में जोड़ने की दिशा में बड़ा कदम साबित होगा। परियोजना जल संरक्षण और सिंचाई विस्तार को बढ़ावा देने में मील का पत्थर साबित होगी। मुख्यमंत्री शर्मा ने निरीक्षण के बाद अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कार्यों को गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय सीमा में पूर्ण कराएं, ताकि आमजन तक समयबद्ध पर्याप्त जल उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने परियोजना के तहत नवनेरा बैराज के निकट प्रस्तावित पम्प हाउस का कार्य शीघ्र शुरू करने के निर्देश प्रदान किए। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को जल संसाधन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि इस एक्वाडक्ट के जरिए रामगढ़ (कूल नदी), महलपुर (पार्वती नदी) व नवनेरा (कालीसिंध नदी) बैराज का पानी चम्बल नदी को पार कराकर मेज बैराज में डाला जाएगा। इसके बाद पानी बीसलपुर और ईसरदा बांध तक लिफ्ट प्रणाली द्वारा पहुंचाया जा सकेगा। उन्होंने बताया कि 2280 मीटर लम्बे इस एक्वाडक्ट का एक छोर कोटा के पीपल्दा समेल गांव में और दूसरा छोर बूंदी के गोहाटा गांव से जोड़ा जाएगा। एक्वाडक्ट के निर्माण से जल प्रबंधन व्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी। साथ ही, कोटा की सुल्तानपुर तहसील के लोगों को बूंदी होते हुए कोटा-सवाईमाधोपुर हाईवे से एक नया पक्का सड़क मार्ग भी उपलब्ध होगा। हवाई निरीक्षण में जल संसाधन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अभय कुमार सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी साथ रहे।

- मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना के अंतर्गत विभिन्न कॉम्पोनेंट्स का हवाई निरीक्षण किया

नशीली टैबलेट्स तस्करी में खरीद-फरोख्त के दो आरोपी गिरफ्तार

राजलदेसर, (निसं)। अवैध मादक पदार्थ नशीली टैबलेट्स तस्करी में खरीद-फरोख्त के दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

राजलदेसर थाना प्रभारी कमलेश सैनी ने बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक जय यादव के द्वारा अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाया जा रहे विशेष अभियान के अन्तर्गत रतनगढ़ पुलिस उप अधीक्षक अनिल कुमार के निकटतम सुपरविजन में 17 अप्रैल को रतनगढ़ सीआई दिलीप सिंह के निर्देशन में सुभाषचन्द पुलिस थाना मय डीएसटी टीम चूरू की सहायता से गश्त के दौरान मेगा हाइवे, रोडवेज बस स्टेण्ड पड़िहारा के पास आरोपी मुमताज अली पुत्र रोशन अली मणियार निवासी वार्ड नम्बर 12 पड़िहारा के कब्जे से कुल 11800 नशीली टैबलेट्स जब्त कर एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर आरोपी मुमताज अली को गिरफ्तार किया गया था। पूछताछ के दौरान आरोपी ने उक्त नशीली टैबलेट ट्रामाडोल व एल्प्राजोल टैबलेट अपने जानकार विकास सहारण से सरदारशहर से लेकर आना बताया था तथा उपरोक्त नशीली टैबलेटों को आगे अपने जानकार अजय प्रकाश शर्मा को चूरू में देना बताया था। आरोपी मुमताज अली को बाद तफतीश पूर्व में दाखिल जैल करवाया जा चुका है। आज 5 जून को आरोपी विकास सहारण व अजय प्रकाश शर्मा को जिला जेल चूरू से प्रोडक्शन वारण्ट पर प्राप्त कर बाद जुर्म प्रमाणित पाया जाने पर गिरफ्तार किया गया। आरोपी विकास सहारण पूर्व में नशीली टैबलेट सहित पुलिस थाना सरदारशहर में गिरफ्तार हो चुका है। इसी प्रकार आरोपी अजय प्रकाश शर्मा पूर्व में कॉमर्शियल मात्रा में नशीली टैबलेट सहित पुलिस थाना कोतवाली चूरू में गिरफ्तार हो चुका है। उपरोक्त तीनों व्यक्ति शातिर किस्म के बदमाश है जो मादक पदार्थ की तस्करी आपस में मिलकर करते हैं।

पुलिस ने विकास सहारण व अजयप्रकाश शर्मा को गिरफ्तार किया।

यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा पाली पहुंचे

यूडीएच मंत्री झाबर सिंह ने सर्किट हाऊस में प्रेस वार्ता की

पाली, (नि.सं.)। यूडीएच मंत्री और पाली जिले के प्रभारी मंत्री झाबर सिंह खर्रा एक दिवसीय यात्रा के तहत गुरुवार को पाली पहुंचे। शहर के सर्किट हाऊस में प्रेस वार्ता की। सेना को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी के बयानबाजी के सवाल पर खर्रा ने कहा कि कुछ लोग अति बुद्धिजीवी हैं, जो अपने बयानों से दुश्मन देशों की हौसला अफजाई करने का काम करते हैं, और दुश्मन देश उन बयानों का आधार बनाकर विश्व में भारत की छवि को खराब करने का प्रयास करते हैं। इन अति बुद्धिजीवियों को अपने संविधान में दिए अधिकार तो पता हैं, लेकिन देश के जिम्मेदार नागरिक होने के नाते अपने कत्तर्व्य और जिम्मेदारी का ज्ञान न जाने क्यों नहीं है।

अशोक गहलोत द्वारा भाजपा सरकार द्वारा खनन पर रोक नहीं लगाने के सवाल पर यूडीएच मंत्री खर्रा ने कहा कि सरकार इसको लेकर काम कर रही है। लगातार कार्रवाई की जा रही है। जल्द ही इस समस्या का पूरा समाधान होगा। एसआई भर्ती परीक्षा को लेकर उन्होंने कहा कि सरकार ने अपना पक्ष कोर्ट में रख दिया है। सरकार किसी भी स्तर पर यह नहीं चाहती कि जिन लोगों ने मेहनत कर परीक्षा दी उनके साथ अन्याय हो। पाली में नदी और नाडी क्षेत्रों में हो रहे अतिक्रमण को लेकर उन्होंने कहा जिला कलेक्टर एलएन मंत्री को लोडिया तालाब का सीमांकन करवाने के निर्देश दिए हैं, ताकि वहां किसी ने अतिक्रमण कर रखा है तो उसे हटाया जा सके।

- एसआई भर्ती परीक्षा को लेकर खर्रा ने कहा कि सरकार ने अपना पक्ष कोर्ट में रख दिया है

देवयानी सरोवर में पानी के लिए काम शुरु

सांभरझील, (निसं)। सिवानिया मोड़ से तीर्थ स्थल देवयानी सरोवर तक बड़े-बड़े तकनीकी अधिकारी बारिश के बहते पानी को नालों के जरिए कुंड तक पहुंचाने के काम में अभी तक भी सफल नहीं हो सके हो, लेकिन नगर पालिका ने एक तरीका ढूंढ निकाला है।

भूतेश्वर की बगीची के पास सांभर नावा रोड पर आसपास के खेतों से बहकर आने वाले बारिश का पानी जो कि यहां पर इकट्ठा हो जाता है को यहां से करीब आधा किलोमीटर दूरी पर स्थित देवयानी कुंड तक पहुंचने के लिए पालिका इस पर 50 लाख रुपए खर्च करने जा रही है। इस तकनीकी योजना पर काम भी शुरू हो गया है। बाकायदा सड़क के किनारे किनारे बड़े-बड़े पाइप बिछाए जा रहे हैं तथा बीच-बीच में चेंबर भी लगाए गए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार यहां पर इकट्ठे होने वाले पानी को एक स्पेशल तरीके से उसे चेंबर में डालकर नालों के जरिए कुंड तक पहुंचने का काम पालिका करवा रही है। भूतेश्वर बगीची के पास क्या इतना पानी इकट्ठा हो जाता है बारिश के दौरान उसे कुंड तक पहुंचने के लिए बिना किसी राय मशविरा के 50 लाख रुपए का टेंडर ही दे दिया गया। मौका निरीक्षण किया गया तो जानकार लोगों ने बताया कि पृथ्वीराज सर्कल से और भूतेश्वर बगीची तक सड़क का जबरदस्त ढलान इसी सांभर नावा रोड पर है और उधर से बहतर आने वाला आसपास की दुकानों का गंदा पानी, मोटर गैरेज का पानी और सीवर का पानी जब यहां पर मिक्स हो जाएगा तो यह कैसे संभव है कि साफ पानी सरोवर में मिल जाएगा। इसको लेकर श्रद्धालुओं में एक अंदरूनी चिंता भी व्याप्त है लेकिन प्रत्यक्ष रूप से इस संबंध में कोई बोलने को तैयार नहीं है।

जानकारी जुटाई गई तो बताया गया कि सिस्टम इस प्रकार से तैयार किया जाएगा की गंदा पानी सरोवर तक नहीं पहुंचे और केवल बारिश के पानी को ही वहां तक पहुंचाने का सफल हो। गंदे पानी को अलग तरीके से झीलों की तरफ ले जाया जाएगा लेकिन एक प्रकार से यह मामला कुछ अजीबोगरीब लोगों को नजर आ रहा है।

हथियार सहित हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। विज्ञान नगर थाना इलाके में पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए अवैध देशी हथियार पिस्टल मय दो जिंदा कारतूस सहित हिस्ट्रीशीटर को गिरफ्तार किया है। शहर पुलिस अधीक्षक डॉ. अमृता दुहन ने बताया कि विज्ञान नगर थानाधिकारी मुकेश मीणा के नेतृत्व में पुलिस टीम ने इलाके में गश्त के दौरान मुखबीर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए संजय नगर उड़िया बस्ती निवासी हिस्ट्रीशीटर तालिब खान को रोककर उसकी तलाशी ली तो उसके पास से अवैध देशी पिस्टल मय दो जिंदा कारतूस बरामद किये। पुलिस ने आर्म्स एक्ट में कार्रवाई करते हुए अवैध हथियार सहित हिस्ट्रीशीटर को गिरफ्तार कर लिया। शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये आरोपी से अनुसंधान जारी है।

तेज हवा और ओलावृष्टि ने किसानों को नुकसान पहुंचाया

अनूपगढ़, (निसं)। पिछले दो दिनों से हुई तेज हवा और ओलावृष्टि ने किसानों को भारी नुकसान पहुंचाया है। पंचायत समिति की 9 ग्राम पंचायतों में बीटी कपास की फसल को व्यापक क्षति हुई है। 1845 हेक्टेयर भूमि में 15 दिन से एक महीने तक खड़ी हुई बीटी कपास की फसल लगभग 50 प्रतिशत नष्ट हो गई है। इससे किसानों को आर्थिक नुकसान और उत्पादन में कमी का सामना करना पड़ेगा।

किसान जसवंत सिंह चंदी ने बताया कि इससे पहले हुई तेज बरसात से नरमे की फसल दो बार करूंड हो चुकी थी। ओलावृष्टि ने स्थिति और बिगाड़ दी है। नरमे की बुवाई का समय मई तक होता है। अब 10 जून के बाद की बुवाई पीछेती खेती मानी जाएगी, जिससे उत्पादन प्रभावित होगा। पिछले दो सीजन से किसान गुलाबी सुंडी की समस्या से जूझ रहे थे। फसल बीमा अभी शुरू नहीं हुआ था, इसलिए नुकसान की भरपाई किसानों को खुद करनी होगी। खेतों में लगे सोलर सिस्टम को भी नुकसान हुआ है और कई सोलर प्लेट टूट गए हैं। अनूपगढ़ में मंगलवार देर रात और बुधवार सुबह कुल 16 एमएम बारिश दर्ज की गई।

- 1845 हेक्टेयर में कपास की लगभग 50 प्रतिशत फसल नष्ट हुई, बुवाई का समय निकला
- 9 ग्राम पंचायतों में बीटी कपास की फसल को व्यापक क्षति हुई

सहायक निदेशक कृषि विस्तार जसवंत सिंह बराड़ ने बताया कि ग्राम पंचायत 21 एसजेएम, 4 एसपीएस, 14 एपीडी, 74 जीबी, 30 एपीडी, 7 एसजेएम, 3 एनडी, 72 जीबी व 78 जीबी में कुल 4900 हेक्टेयर में से 1845 हेक्टेयर क्षेत्र में ओलावृष्टि से नुकसान हुआ है। अभी फसलों का बीमा होना प्रारंभ नहीं हुआ था जिस कारण बीमे से इस नुकसान की भरपाई नहीं की जा सकेगी।

आगजनी की घटना के दो अभियुक्त गिरफ्तार

कोटपूतली, (निसं)। स्थानीय थाना पुलिस ने गत 24 व 25 मई की मध्यरात्रि को खरखड़ी मोड़ स्थित एक शराब गोदाम पर रंगदारी वसूली की मांग को लेकर की गई आगजनी की घटना के दो अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है।

एसएचओ राजेश शर्मा ने जानकारी देते हुये बताया कि 24 मई की रात्रि को शराब गोदाम में कर्मचारी रंगलाल सो रहा था, तभी गोपालपुरा निवासी नाजिम पुत्र श्योनारायण, धन्ना समेत 3-4 लोग आये एवं आते ही गाली गलौच करते हुये 50 हजार रूपयों की फिरौती की मांग करने लगे। इसके लिये मना करने पर शराब गोदाम में आग लगा दी, जिसमें रंगलाल का चेहरा झुलस गया। पीड़ित ने बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई। हमलावर पैसे तैयार रखने एवं दुबारा आने की बात कहकर चले गये। इससे पूर्व भी मोबाइल से व्हॉट्सअप कॉल कर फिरौती की मांग करते रहे। देर रात्रि को बोलेरो गाड़ी में आकर 2 से 3 राउण्ड फायरिंग की एवं कहा कि पुलिस को सूचना दी तो परिणाम बहुत बुरा होगा। मामले में पुलिस ने गोपालपुरा निवासी घनश्याम उर्फ धन्ना (23) पुत्र ओमप्रकाश वाल्मिकी एवं ग्राम जयसिंहपुरा निवासी नवीन (29) पुत्र फूलचंद जाट को गिरफ्तार करते हुये वारदात में प्रयुक्त दो बाईक जप्त की है। अभियुक्तों से पूछताछ जारी है।

जूते-चप्पलों के रॉ मटीरियल के गोदाम में आग लगी, लाखों रुपये का सामान जला

अजमेर, (कासं)। मूंदड़ी मोहल्ला स्थित अजमेर के सबसे व्यस्तम और होलसेल सदर बाजार में गुरुवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया, जब एक जूते-चप्पल बनने वाले रॉ-मटेरियल के एक गोदाम में भीषण आग गई। आग को देखते हुए आसपास की दुकानों को व्यापारियों ने तुरंत बंद करवा दिया। व्यापारियों ने अपने स्तर पर आग बुझाने के प्रयास किए गए। अग्निशमन विभाग को आग की सूचना देने पर दमकल की गाड़ियां एक घंटे बाद पहुंची। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। आग लगने का कारणों का अभी तक खुलासा नहीं हो पाया है, लेकिन प्रथमदृष्ट्या शॉर्ट सर्किट से आग लगना मानी जा रही है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

कोतवाली थाना क्षेत्र के मूंदड़ी मोहल्ला स्थित होलसेल के सदर बाजार स्थित प्रकाश ट्रेडर्स के एक गोदाम की दूसरी मंजिल पर जूते चप्पल बनाने के रॉ-मटेरियल में गुरुवार को 11:30 बजे आग लग गई। आग ने ही कुछ देर में विकराल रूप धारण कर लिया। ऊपर के मंजिल से दुआ निकलता देख नीचे काम कर रहे कर्मचारी तुरंत बाहर निकल आए। आग से बाजार में हडकंप मच गया। व्यापारियों ने आसपास की दुकानों को बंद कर दिया। व्यापारियों ने बाजार में रखे फायर सिलेंडर से आग बुझाने का प्रयास किया, लेकिन आग पर काबू नहीं पाया गया। सदर बाजार के व्यापारी संगठन के पदाधिकारी के साथ अन्य व्यापारियों ने अपनी-अपने दुकानों में रखे फायर सिलेंडर से आग पर बुझाने का प्रयास किया, लेकिन चमड़ा ज्यादा होने के कारण आग पर काबू नहीं पाया जा सका। सूचना मिलने पर कोतवाली थाना पुलिस के साथ सीओ रूद्रप्रकाश भी मौके पर पहुंचे। सूचना के करीब 1 घंटे बाद अग्निशमन विभाग की गाड़ी मौके पर पहुंची और आग पर कड़ी मशक्कत कर काबू पाया गया।

सदर बाजार मूंदड़ी मोहल्ला व्यापारिक संगठन के पदाधिकारी अशोक दुलानी ने बताया कि सदर बाजार में प्रकाश ट्रेडर्स का एक गोदाम है, जिसमें चप्पल जूते के शॉल और अन्य सामान रखा था। मालिक की ओर से दुकान खोलने के करीब 15 मिनट बाद ही ऊपर की मंजिल पर आग लग गई। आग लगने के कारणों का खुलासा नहीं हुआ। व्यापारियों की दुकानों में पड़े 75 फायर सिलेंडर से आग पर काबू पाने का प्रयास किया। फायर ब्रिगेड को इसकी सूचना दी गई। लेकिन करीब एक घंटे बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर पहुंची। अभी नुकसान का आंकलन नहीं हुआ है।

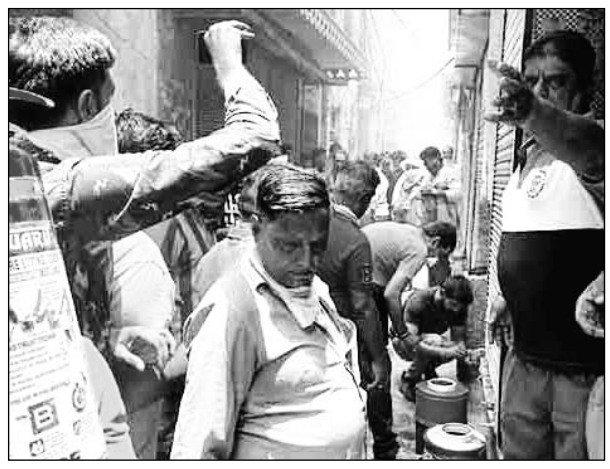

अजमेर के सबसे व्यस्तम और होलसेल सदर बाजार में गोदाम में लगी भीषण आग को दमकल कर्मियों ने बुझाया।

- आग को देखते हुए आसपास की दुकानों को बंद करवाया, व्यापारियों ने आग बुझाने के प्रयास किए
- गोदाम में जूते-चप्पल बनाने के लिए चमड़ा रखा था, चमड़े में आग लगने के कारण पूरे बाजार में धुंआ ही धुंआ फैल गया

सकड़ी गली में नहीं जा सकी बड़ी गाड़ी :-बाजार में संकरी गलियां होने से अग्निशमन विभाग की बड़ी गाडियां मौके पर नहीं पहुंच सकी, जिसके चलते अग्निशमन की गाड़ियों को आने में समय लग गया। अग्निशमन की छोटी गाड़ियां मौके पर पहुची। आग बुझाने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। चमड़े में लगी आग के कारण जहरीला धुंआ ज्यादा फैलने लगा, जिसके चलते विभाग के कर्मचारियों ने ऑक्सीजन सिलेंडर और मास्क पहनकर आग पर काबू पाने का प्रयास किया।

जहरे धुए से परेशान हुए व्यापारी :-गोदाम में जूते चप्पल बनाने के लिए चमड़ा रखा था, चमड़े में आग लगने के कारण पूरे बाजार में धुंआ ही धुंआ फैल गया। धुएं के कारण व्यापारियों और आमजन को परेशानी का सामना करना पड़ा। कई लोगों आग बुझाते वक्त आंखों में धुंआ चला गया जिससे आंखें जलने लग गई।

तस्करी का आरोपी गिरफ्तार

जैसलमेर, (नि.सं.)। मादक पदार्थ तस्करी के आरोपी गोवर्धनराम को जैसलमेर से गिरफ्तार किया है। जोधपुर रेंज पुलिस महानिरीक्षक विकास कुमार ने बताया कि साइक्लोनर टीम ने तस्करी कारोबार के एक मुख्यतम सूत्रधार गोरधनराम को गुरुवार सुबह गिरफ्तार करने में सफलता पायी है।

गोरधनराम की गिरफ्तारी पर एक लाख रूपये का इनाम पुलिस मुख्यालय की ओर से घोषित है। अपने 12 वर्षों के आपराधिक करियर में गोरधनराम पर मादक द्रव्यों की तस्करी, हत्या का प्रयास, मारपीट, वाहन चोरी, आगजनी, आर्म्स एक्ट इत्यादि के कई सारे मुकदमे दर्ज हैं। शुरूआती प्रकरण में दो-तीन बार जेल जा चुकने के बाद गोरधनराम फिर कभी भी पुलिस की गिरफ्तारी में नहीं आया। जिसे गुरुवार को फलसुंड में गिरफ्तार किया गया। रेंज स्तरीय साईक्लोनर टीम के कन्हैयालाल देवाराम विश्नोई, नेमाराम प्रमीत ,गजराजसिंह, महेन्द्र, महिपालसिंह, अशोक कुमार, राकेश, मनीष परमार, अशोक परिहार, स्ट्रांग टीम के किशोरकुमार, देवाराम, झूमरराम,जोगाराम, राकेशकुमार, शेखरचन्द, मांगीलाल, भागीरथ, टॉरमेडो टीम के माधुदान, रोहितास तथा थानाधिकारी पुलिस थाना फलसुण्ड सुमेरदान मय टीम शामिल रहे।

खेल जगत

जो हुआ वह दुखद है, बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम में जो कुछ हुआ, वह बेहद दुखद है। मेरी संवेदनाएं हर पीड़ित परिवार के साथ हैं। सभी के लिए शांति और शक्ति की कामना करता हूं। - **सचिन तेंदुलकर**

पूर्व भारतीय क्रिकेटर, बेंगलुरू में हुए हादसे को लेकर बोलते हुए।

आज का खिलाड़ी ▶ विराट कोहली

बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर बुधवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की विक्ट्री परेड में भगदड़ मच गई। इससे 11 लोगों की मौत हो गई। साथ ही 33 लोग घायल हो गए हैं। स्टेडियम के बाहर लाखों की भीड़ जमा हो गई थी। भीड़ को संभालने के लिए पुलिस हल्का लाठीचार्ज भी करना पड़ा। भीड़ के चलते एक बच्चा बेहोश भी हो गया था। इस पर विराट कोहली ने इंस्टाग्राम पर लिखा- मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं हैं। पूरी तरह से टूट गया हूं। उन्होंने हार्टब्रेक का इमोजी भी बनाया। ये काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। ये लोकप्रियता का नकारात्मक पहलू है।

क्या आप जानते हैं ?... फुटबॉल इतिहास में 900 गोल करने वाले पहले खिलाड़ी बने रोनाल्डो।

वर्ल्डकप जीतने पर भी रोड शो नहीं करना चाहिए : गंभीर

गिल बोले- रोहित-विराट की जगह भरना कठिन

मुंबई, 5 जून। टीम इंडिया के कोच गौतम गंभीर ने कहा है कि वर्ल्ड कप जीतने पर भी रोड शो नहीं करना चाहिए। ऐसे आयोजन में हादसों का खतरा है। क्योंकि, लोगों की जान सबसे ज्यादा जरूरी है। मैं 2007 वर्ल्ड कप जीत के बाद भी नहीं चाहता था कि रोड शो हो।

इंग्लैंड दौरे पर रवाना होने से पहले गुरुवार को मुंबई में हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में गंभीर ने कहा- बेंगलुरु में रोड शो के दौरान हुए हादसे ने दुखी किया। मैं घटना के लिए किसी को भी जिम्मेदार नहीं ठहराता। इस तरह के माहौल में लापरवाही और हादसों की आशंका बहुत ज्यादा बढ़ जाती है, इसलिए इनसे बचना चाहिए। बुधवार को बेंगलुरु में के विक्ट्री सेलिब्रेशन के दौरान भगदड़ मचने से 11 लोगों की मौत हो गई थी।

गंभीर ने कहा, युवा प्लेयर्स के पास इंग्लैंड में खुद को साबित करने का अच्छा मौका है। हमारे पास क्वालिटी प्लेयर्स हैं, जो इस दौरे पर बेहतर कर सकते हैं। हमारा ध्यान क्लीन स्वीप पर नहीं है, हम मैच जीतने पर फोकस कर रहे हैं।

भारतीय कोच ने कहा, बुमराह को रिप्लेस करना मुश्किल है, लेकिन हमने उनके बिना चैंपियंस ट्रॉफी भी खेली। जिसमें दूसरे प्लेयर्स ने खुद को साबित किया। इसलिए इंग्लैंड दौरे पर भी नए प्लेयर्स के पास बेहतर प्रदर्शन करने का मौका है। मुझे नहीं लगता कि वर्ल्ड कप जीतने के बाद भी रोड शो करना चाहिए क्योंकि लोगों की जान सबसे ज्यादा जरूरी है। मैं 2007 वर्ल्ड कप जीत के बाद भी नहीं चाहता था कि रोड शो हो, क्योंकि इस तरह के आयोजन में हादसों का खतरा भी बढ़ जाता है।

कप्तान बनने के बाद गिल की पहली कॉन्फ्रेंस - बोले- रोहित-कोहली की जगह भरना मुश्किल भारत के नए टेस्ट कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि इंग्लैंड दौरे पर 2 सीनियर बल्लेबाज (रोहित शर्मा और विराट कोहली) की जगह भर पाना मुश्किल होगा। वे टीम में नहीं हैं, लेकिन हमारी टीम में बैटिंग कॉम्बिनेशन अच्छा है। साल के भारतीय कप्तान ने जीत के दबाव पर कहा कि हर टूर में जीतने का प्रेशर रहता है। हमारी टीम में अनुभवी और युवा प्लेयर्स का अच्छा मिश्रण है।

इंग्लैंड दौरे के लिए भारतीय टीम पर गिल ने कहा- टीम में बहुत अच्छे तेज गेंदबाज हैं, जो किसी भी सिचुएशन में जिता सकते हैं। जसप्रीत बुमराह जितने भी मैच खेल सकें, हमारे लिए बेस्ट रहेगा। कप्तानी की रणनीति पर गिल ने कहा- मैं अपनी कप्तानी में किस स्ट्रैटजी को फॉलो करूंगा, इस बार ज्यादा नहीं कहना चाहता। मैं फिर भी अपने प्लेयर्स के साथ अच्छा बॉन्ड बनाने पर ध्यान दूंगा। जिससे वे मैच में अपना बेस्ट दे सकें।

पीएम मोदी, बीसीसीआई ने स्टेडियम के बाहर हुई भगदड़ की घटना पर शोक जताया

नयी दिल्ली/बेंगलुरु, 05 जून। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने बुधवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की आईपीएल जीत के जश्न के दौरान एम चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर हुई भगदड़ पर गहरा दुख व्यक्त किया। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, बेंगलुरु में हुई दुर्घटना बेहद दुखद है। इस दुखद घड़ी में मेरी संवेदनाएं उन सभी लोगों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। मैं प्रार्थना करता हूं कि जो लोग घायल हुए हैं वे जल्द स्वस्थ हों। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने इस घटना पर संवेदना व्यक्त कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है। लोग क्रिकेटरों के लिए दीवाने हैं। आयोजकों को बेहतर तैयारी करनी चाहिए थी। भीड़ को नियंत्रित किये जाने के उपाये होने चाहिए थे। घटना में जान गंवाने वाले लोगों के परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं। आशा करता हूं कि घटना में घायल हुये लोग जल्द स्वस्थ होंगे। भगदड़ उस समय हुई जब हजारों प्रशंसक अपने पसंदीदा खिलाड़ियों और आईपीएल ट्रॉफी की एक झलक पाने के लिए स्टेडियम के बाहर लाखों की संख्या में लोग एकत्र हुए थे।

आरसीबी भगदड़ में मारे गये लोगों के परिजनों को देगी आर्थिक सहायता

बेंगलुरु, 5 जून। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू (आरसीबी) ने एम चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर मची भगदड़ में मारे गये लोगों के परिजनों को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है। आरसीबी की ओर से गुरुवार को जारी आधिकारक बयान में भगदड़ में मारे गए लोगों के परिजनों को 10-10 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की गई है। बयान में कहा गया है कि कल बेंगलुरु में हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने आरसीबी परिवार को बहुत पीड़ा और दर्द पहुँचाया है। आरसीबी ने पीड़ितों के प्रति सम्मान और एकजुटता व्यक्त करते हुए हादसे में मारे गये 11 लोगों के परिजनों को 10-10 लाख रुपये की वित्तीय सहायता देने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि इसके अलावा इस दुखद घटना में घायल हुए प्रशंसकों की सहायता के लिए आरसीबी केयर्स नामक एक कोष भी बनाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि बुधवार को एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में चल रहे आरसीबी का सम्मान समारोह के दौरान स्टेडियम के बाहर हुई भगदड़ में 11 लोगों की मौत हो गई थी और अन्य 33 लोग घायल हो गये थे।

इंग्लैंड की महिला टीम ने वेस्टइंडीज को 143 रनों से हराया

लेस्टर (इंग्लैंड) 05 जून। एमी जोंस (129), टैमी बोमॉन्ट (106) की शतकीय और एमा लैंब (55) की अर्धशतकीय पारियों के ऐलिस कैप्सी (तीन विकेट), लिंसी स्मिथ और लॉरेन फाइलर (दो-दो विकेट) के बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत इंग्लैंड की महिला टीम ने दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में वेस्टइंडीज को 143 रनों से हरा दिया। इसी के साथ इंग्लैंड ने तीन मैचों की श्रृंखला में 2-0 से अजेय बढ़त बना ली है। लेस्टर के ग्रेस रोड स्टेडियम में बुधवार रात खेले गये मुकाबले में इंग्लैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया।

इंग्लैंड की एमी जोंस और टैमी बोमॉन्ट की सलामी जोड़ी ने शानदार शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 202 रन जोड़े। 30वें ओवर में करिश्मा रामहैरक ने एमी जोंस को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। एमी जोंस ने 98 गेंदों में 20 चौकों की मदद से (129) रनों की पारी खेली। इसके बाद रामहैरक ने 40वें ओवर में टैमी बोमॉन्ट को आउट कर अपना और टीम का दूसरा विकेट लिया। टैमी बोमॉन्ट ने 109 गेंदों में 12 चौके और एक छक्का लगाते हुए (106) रन बनाये। कप्तान नेट सायबर ब्रंट (12), एमा लैंब (55), सोफिया डंकली (31) और ऐलिस कैप्सी ने (16) रन के योगदान इंग्लैंड ने निर्धारित 50 ओवरों में छह विकेट पर 366 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया। वेस्टइंडीज की ओर से करिश्मा रामहैरक और आलिया ऑलेन ने दो-दो विकेट लिये। ऐफी फ्लेचर और जैनिलिया ग्लास्गो ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

अंडर-17 महिला विश्वकप ड्रॉ में 24 टीमें भाग लेंगी : फीफा

जिनेवा, 5 जून। अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल महासंघ (फीफा) ने कहा है कि अफ्रीकी देश मोरक्को में होने वाली नौवें अंडर-17 महिला विश्वकप ड्रॉ 2025 संस्करण में पहली बार 24 टीमें भाग लेंगी। फीफा ने बुधवार को ड्रॉ की घोषणा करते हुये कहा कि यह टूर्नामेंट 17 अक्टूबर से आठ नवंबर तक मोरक्को के रबात में होगा। यह पहली बार होगा, जब अफ्रीका में इस वैश्विक खेल का आयोजन किया जायेगा। ड्रॉ समारोह रबात में मोहम्मद सिक्स फुटबॉल अकादमी में आयोजित किया जायेगा। ग्रुप ए में मेजबान मोरक्को ब्राजील, कोस्टा रिका और इटली प्रतिस्पर्धा करेगा। ग्रुप बी में गत चैंपियन दक्षिण कोरिया, कैमरून, मैक्सिको और नीदरलैंड है। चीन, इक्वाडोर, नॉर्वे और अमेरिका के साथ ग्रुप सी में है। ग्रुप डी में कनाडा, फ्रांस, नाइजीरिया और समोआ शामिल हैं। ग्रुप ई में कोलंबिया, कोटे डी आइवर, दक्षिण कोरिया और स्पेन शामिल हैं, जबकि जापान, न्यूजीलैंड, पैराग्वे और जाम्बिया ग्रुप एफ में शामिल हैं।

इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए जेमी ओवरटन को टीम में किया शामिल

लंदन, 5 जून। इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए बांयें हाथ के तेज गेंदबाज गस एटकिंसन की मांसपेशियों में खिंचाव आने के कारण टीम से बाहर होने पर जेमी ओवरटन को टीम में शामिल किया है। चयनकर्ताओं ने आज भारत के खिलाफ 20 जून से होने वाली टेस्ट सीरीज के लिये 14 सदस्यीय टीम की घोषणा की। चयनकर्ताओं ने कई खिलाड़ियों के चोटिल होने के कारण तेज गेंदबाजी आक्रमण को धार देने के लिए जेमी ओवरटन को टीम में जगह दी है। दोनों टीमों के बीच कुल पांच टेस्ट मैचों की सीरीज खेली जानी है। सीरीज का पहला मैच 20-24 जून को हेडिंग्ले में, दूसरा दो से छह जुलाई को एजबेस्टन, तीसरा 10-14 जुलाई को लॉर्ड्स में, चौथा 23-27 जुलाई को एमिरेट्स ओल्ड ट्रैफर्ड में तथा 31 जुलाई से चार अगस्त पांचवां टेस्ट मैच किआ ओवल में खेला जायेगा। 18 महीने पहले भारत में 4-1 से सीरीज हारने के बाद से इंग्लैंड की टीम में काफी बदलाव हुए हैं। जेम्स एंडरसन ने उस दौरे के तुरंत बाद संन्यास ले लिया, जबकि जॉनी बेयरस्टो, बेन फोक्स और ओली रॉबिन्सन को भी बाहर कर दिया गया है।

जर्मनी को हराकर पुर्तगाल नेंशस लीग के फाइनल में

स्टटगार्ट (जर्मनी), 5 जून। क्रिस्टियानो रोनाल्डो के मैच विजयी गोल की बदौलत पुर्तगाल ने जर्मनी को 2-1 से हराकर नेशंस लीग के फाइनल में जगह बना ली है। नेशंस लीग के बुधवार को खेले पहले सेमीफाइनल के हाफ में जर्मनी का दबदबा बनाये रखा और पुर्तगाल पर गोल के लिए कई आक्रामक प्रयास किये लेकिन पुर्तगाल के गोलकीपर डिओगो कोस्टा की शानदार प्रदर्शन की बदौलत हॉफ गोलरहित रहा।

जर्मनी के जोशुआ किमिच के सटीक पास पर फ्लोरियन विर्ट्ज ने 48वें मिनट में गोल कर अपनी टीम को बढ़त दिलाई। इसके थोड़ी देर बाद पुर्तगाल के स्थानापन्न फ्रांसिस्को कोन्सीसाओ के 63वें मिनट में गोल दागकर मैच 1-1 से बराबरी कर ली। पांच मिनट बाद 40 वर्षीय रोनाल्डो ने अपना 137वां अंतरराष्ट्रीय गोलकर अपनी टीम को मैच विजयी बढ़त दिला दी। इस गोल के साथ रोनाल्डो जर्मनी के खिलाफ गोल करने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बन गए हैं।

मैच के बाद पुर्तगाल के कोच रॉबर्टो

वैश्य समाज द्वारा एसएमएस स्टेडियम में केपीएल टूर्नामेंट का भव्य शुभारंभ

जयपुर, 5 जून। राजधानी जयपुर शहर में वैश्य समाज द्वारा खेल के माध्यम से खेलो प्रीमियम लीग का शुभारम्भ गुरुवार से किया गया। पहली बार इस टूर्नामेंट में पुरुषों, महिलाओ, बच्चों और बड़े - बुजुर्गों की कुल 16 टीमें भाग ले रही है, जिसमें खंडेलवाल, जैन, अग्रवाल, माहेश्वरी, विजयवर्गीय समुदाय का वैश्य समाज का प्रत्येक वर्ग सम्मिलित होकर ना केवल एकजुटता का सन्देश दे रहा है बल्कि इस टूर्नामेंट के माध्यम से खेल के प्रति जोश और सामाजिक उर्जा को भरने का भी संचार कर रहा है। इस आयोजन की ओपनिंग सेरेमनी 30 मई को सभी 16 टीम मालिकों और केपीएल आयोजको की उपस्थिति में सांसद मंजू शर्मा द्वारा किया गया था। 8 जून को फ़ाइनल मैच खेला जायेगा और उसी दिन शाम 3 बजे से समापन समारोह का आयोजन किया जायेगा। इस दिन फ़ाइनल के साथ प्रतिभावान खिलाडियों, टूर्नामेंट आयोजकों, स्पॉन्सर का समाज के गणमान्य लोगों इत्यादि का सम्मान किया जायेगा, साथ ही समापन एवं पुरुस्कार वितरण किये जायेंगे।

वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत साइकिल रैली का आयोजन

जयपुर, 5 जून। जिला खेलकूद प्रशिक्षण केंद्र चौगान स्टेडियम के खिलाड़ियों द्वारा साइकिल रैली चौगान स्टेडियम से लंगर के बालाजी ,गणगौरी बाजार होते हुए वापस चौगान स्टेडियम तक निकली गई। खिलाड़ियों द्वारा जल संरक्षण के नारे लगाए गए। रैली को जिला खेल अधिकारी मानसिंह जी ने जल संरक्षण की शपथ दिलाकर स्टेडियम से रवाना किया। रैली में खिलाड़ियों से साथ सभी खेलो के प्रशिक्षक भी शामिल थे।

राष्ट्रीय शतरंज में स्वर्ण पदक जीत कर श्रेयांशी जैन ने रचा इतिहास

जयपुर, 5 जून। जयपुर की नन्हीं शतरंज खिलाड़ी श्रेयांशी जैन ने खोरदा (ओडिशा) में आयोजित अंडर-7 बालिका राष्ट्रीय शतरंज में स्वर्ण पदक जीत कर श्रेयांशी जैन ने इतिहास रच कर न सिर्फ राजस्थान बल्कि पूरे भारत को गौरवान्वित किया है। वेव्स, एनजीओ, जेडीसीए, सीपीए, आरसीए, श्रेयांशी की इस अभूतपूर्व उपलब्धि पर उन्हें दिल से बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं। श्रेयांशी ने प्रतियोगिता में नौ में से नौ मुकाबले जीतकर एक भी मैच गंवाए बिना सौ प्रतिशत स्कोर किया, जो उनकी गहरी समझ, अद्भुत मानसिक दृढ़ता और समर्पण का प्रतीक है। यह उपलब्धि केवल एक पदक नहीं, बल्कि लाखों युवा खिलाड़ियों के लिए एक प्रेरणा है। श्रेयांशी की इस सफलता का श्रेय उनके नाना शिव नारायण अग्रवाल (सेवानिवृत्त बैंक अधिकारी), माता-पिता डॉ. सुशील जैन एवं डॉ. शिमोना जैन के साथ साथ कोच तरुण शर्मा को जाता है, जिन्होंने श्रेयांशी को हर स्तर पर मार्गदर्शन, प्रेरणा और प्रशिक्षण प्रदान किया।

अतुल गुप्ता होंगे जिला बैडमिंटन के ऑर्गेनाइजेशन सेक्रेटरी

जयपुर, 5 जून। जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में 9 जून से 16 जून तक होने वाली आर डी बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट जयपुर जिला ओपन बैडमिंटन चैंपियनशिप के लिए जिला संघ के अध्यक्ष अनिल मेहता तथा सचिव मनोज दासोत ने प्रतियोगिता के लिए अतुल गुप्ता को ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेट्री नियुक्त किया अतुल गुप्ता राष्ट्रीय स्तर के बैडमिंटन खिलाड़ी रह चुके हैं तथा वर्तमान में राजस्थान बैडमिंटन संघ के हैड कोच हैं अतुल गुप्ता के अनुसार इस प्रतियोगिता भारतीय बैडमिंटन संघ के मानको का पालन किया जाएगा तथा खिलाड़ियों की सभी सुविधा का ध्यान दिया जाएगा व 14 जून से होने वाली ऑल इंडिया रैंकिंग को देखते हुए अंडर 15 ,अंडर 17 व सीनियर वर्ग की प्रतियोगिताएं 12 जून तक संपन्न कर दी जाएगी।

पाली व बीकानेर जिला सीनियर कॉल्विन शील्ड टीम घोषित

जयपुर, 5 जून। राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी संयोजक जयदीप बिहाणी के अनुसार आरसीए के तत्वाधान में आगामी दिनांक 7 जून से आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेने वाली पाली व बीकानेर जिला क्रिकेट संघ टीम के चयन हेतु आरसीए द्वारा 4 - 5 जून को पाली व बीकानेर में आयोजित ओपन चयन ट्रायल में भाग लेने वाले पाली व बीकानेर जिले के युवा प्रतिभाशाली खिलाडियों में से पाली व बीकानेर जिला क्रिकेट टीम का चयन आरसीए के अधिकृत सीनियर चयनकर्ताओं ने किया। जयदीप बिहाणी के अनुसार पाली व बीकानेर जिला टीम के चयन हेतु आरसीए द्वारा 4 व 5 जून से आयोजित ओपन चयन ट्रायल में पाली जिले में आरसीए पर्यवेक्षक सुशील जैन व की उपस्तिथि में आरसीए के अधिकृत चयनकर्ता विलास जोशी (चेयरमैन, आरसीए सीनियर चयन कमेटी) व ज़ाकिर हुसैन (सदस्य, आरसीए सीनियर चयन कमेटी) व बीकानेर जिला ओपन चयन ट्रायल श्याम सिंह चौहान की उपस्तिथि में आरसीए के अधिकृत चयनकर्ता शैलेन्द्र गहलोत व शमशेर सिंह ने चयन ट्रायल में खिलाडियों की प्रतिभा व प्रदर्शन के आधार पर आरसीए द्वारा आयोजित की जाने वाली राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेने वाली पाली व बीकानेर जिला क्रिकेट टीम का चयन किया।

भारत ने डब्ल्यूएसपीएस विश्वकप में जीते 17 पदक

चांगवोन (दक्षिण कोरिया), 5 जून। विश्व निशानेबाजी पैरा स्पोर्ट्स विश्वकप 2025 की विभिन्न स्पर्धाओं में भारत कुल 17 पदक जीतकर तालिका में दूसरे स्थान हासिल किया। भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) की ओर से आज प्राप्त जानकारी के अनुसार भारतीय निशानेबाजों ने विभिन्न स्पर्धाओ में छह स्वर्ण, नौ रजत, दो कांस्य पदक सहित कुल 17 पदक जीते। प्रतियोगिता में भारतीय टीम कुल 17 पदको के साथ दूसरे स्थान पर रही। दक्षिण कोरिया ने शीर्ष स्थान हासिल किया।

केएल राहुल इंग्लैंड में इंडिया-ए टीम से जुड़े

दूसरा अनऑफिशियल टेस्ट आज से, 18 मेंबर्स वाली भारतीय टीम का भी हिस्सा

लंदन, 5 जून। भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज केएल राहुल इंग्लैंड में इंडिया-ए टीम से जुड़ गए हैं। वे 6 जून से इंग्लैंड लायंस के खिलाफ शुरू होने वाले दूसरे अनऑफिशियल टेस्ट से पहले टीम में शामिल हुए। राहुल भारत-इंग्लैंड के बीच खेले जाने वाली 5 मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का भी हिस्सा हैं। इंग्लैंड के लिए टीम इंडिया के बाकी मेंबर्स 6 जून को मुंबई से रवाना होंगे। दोनों टीमों के बीच सीरीज का पहला मुकाबला 20 जून से शुरू होगा। राहुल ने इंग्लैंड में 9 टेस्ट मैच खेले हैं केएल राहुल ने इंग्लैंड में 9 टेस्ट मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 34.11 की औसत से 614 रन बनाए हैं, जिसमें उनका बेस्ट स्कोर 149 रहा है। उन्होंने इन मैचों में 2 शतक और 1 अर्धशतक लगाया है। दूसरा अनऑफिशियल टेस्ट कल से इंडिया-ए को इंग्लैंड में तीन मैच खेलने हैं। इनमें दो मैच इंग्लैंड लायंस के खिलाफ होंगे, जबकि तीसरा मैच भारतीय क्रिकेट टीम के साथ खेला जाएगा। इंग्लैंड लायंस और इंडिया ए के बीच पहला मैच ड्रॉ रहा था। दूसरा मैच 6 से 9 जून तक खेला जाएगा। जबकि भारतीय सीनियर टीम के साथ मुकाबला 13 से 16 जून के बीच खेला जाएगा। **इंग्लैंड दौरे के लिए 18 मेंबर्स वाली भारतीय टीम** शुभमन गिल (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, साई सुदर्शन, अभिमन्यु ईश्वरन, करुण नायर, ऋशभ पंत (उपकप्तान), ध्रुव जुरेल, नीतीश रेड्डी, शार्दूल ठाकुर, रवींद्र जडेजा, वॉशिंगटन सुंदर, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, आकाश दीप, अर्शदीप सिंह, कुलदीप यादव।

सात्विक-चिराग प्री-क्वार्टरफाइनल में, पी.वी. सिंधु बाहर

जकार्ता, 5 जून। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने डेनमार्क की जोड़ी रासमस क्येर और एंडर्स स्कारुप रासमुसेन को हराकर इंडोनेशिया ओपन के प्री-क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली है। वहीं दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु प्री-क्वार्टरफाइनल में स्थानीय पोर्नपावी चोचुवोंग से हार का सामना करना पड़ा। इसी के साथ वह टूर्नामेंट से बाहर हो गईं।

आज यहां पुरुष युगल में सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने डेनमार्क की जोड़ी रासमस क्येर और एंडर्स स्कारुप रासमुसेन को 16-21, 21-18, 22-20 से हराया। पहला गेम हारने के बाद सात्विक-चिराग ने शानदार वापसी की और दूसरा गेम 14-14 की बराबरी के बाद उन्होंने अपनी बढ़त को बरकरार रखते हुए अपने नाम कर लिया। निर्णायक गेम में दोनों टीमों ने एक-दूसरे को कड़ी टक्कर दी। सात्विक-चिराग ने एक मैच प्वाइंट बचाया और एक घंटे आइ मिनट तक चले मुकाबले में रोमांचक जीत दर्ज की। महिला एकल बैडमिंटन रैंकिंग में 21वें स्थान पर काबिज सिंधु पहला गेम जीतने के बाद थाईलैंड की छठी वरीयता प्राप्त और विश्व की आठ नंबर की खिलाड़ी पोर्नपावी चोचुवोंग से 22-20, 10-21, 8-21 से हार गईं।

पहला गेम काफी कड़ा रहा। मिड-गेम ब्रेक में पोर्नपावी 11-10 से आगे थीं और फिर उन्होंने बढ़त 16-10 कर ली। लेकिन सिंधु ने वापसी करते हुए स्कोर 18-18 कर दिया। पोर्नपावी को 20-19 पर पहला गेम प्वाइंट मिला, लेकिन सिंधु ने शानदार वापसी करते हुए गेम जीत लिया। दूसरा गेम पूरी तरह से पोर्नपावी के नाम रहा। उन्होंने आसानी से यह गेम जीतकर मुकाबले को तीसरे गेम तक पहुंचाया। निर्णायक गेम में सिंधु ने 11-8 और 15-11 की बढ़त बनाई, लेकिन वह उसे कायम नहीं रख सकीं और एक घंटे और 18 मिनट में मुकाबले में हार गईं। इसी के साथ एकल मुकाबले में भारत की चुनौती खत्म हो गई है। महिला युगल में त्रिशा जॉली और गायत्री गोपीचंद को जापान की युकी फुकुशिमा और मायू मात्सुमोतो से सीधे गेम में हार मिली। दूसरे गेम में भारतीय जोड़ी ने संघर्ष किया, लेकिन वे 13-21, 22-24 से हार गईं। इसके अलावा सतीश करुणाकरण और आद्या वरियत को थाईलैंड की छठी वरीयता प्राप्त जोड़ी डेचापोल पूअवरानुकरोह और सुपिसारा पेवसंपरान ने 21-7, 21-12 से हराया।

आरसीए ने क्रिकेट सत्र 2025-26 के लिए कोच, फिजियो व ट्रेनर (स्पोर्ट स्टाफ) हेतु मांगें आवेदन

जयपुर 5 जून , राजस्थान क्रिकेट संघ बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025-26 की राजस्थान की विभिन्न आयु वर्ग की पुरुष व महिला क्रिकेट टीमों के कोच, फिजियो व ट्रेनर (स्पोर्ट स्टाफ) के लिए आवेदन मांगे हैं। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीपबिहाणी के अनुसार राजस्थान क्रिकेट संघ की विभिन्न गतिविधियों में पूर्ण पारदर्शिता लाने व बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025-26 में भाग लेने वाले राजस्थान की विभिन्न आयु वर्ग की सीनियर व जूनियर पुरुष व महिला क्रिकेट टीमों के स्पोर्ट स्टाफ कोच, फिजियो व ट्रेनर की नियुक्ति हेतु आवेदन मांगे गए है।

जयदीप बिहाणी ने बताया की आरसीए एडहॉक कमेटी द्वारा बीसीसीआई के घरेलु क्रिकेट सत्र 2025-26 की सभी क्रिकेट गतिविधियों के लिए आवश्यक मापदंड को अपनाते हुए राजस्थान क्रिकेट संघ सभी खेल गतिविधियां व क्रिकेट आयोजन के सभी कार्य पूर्ण पारदर्शी रूप से किये जा रहे है जिससे राज्य के खिलाडियों को स्वच्छ व सुदृढ़ प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराया जा सके। राजस्थान की पुरुष व महिला टीमों के कोच, फिजियो व ट्रेनर (स्पोर्ट स्टाफ) के पदों के आवेदन पत्र व उसके मापदंड (क्वालिफिकेशन) की सम्पूर्ण जानकारी इच्छुक व्यक्ति राजस्थान क्रिकेट संघ की वेबसाइट://https//www.cricketrajasthan.in से डाऊनलोड कर सकते हैं। क्रिकेट सत्र 2025 -26 के लिए निम्न पुरुष व वीमेन टीमों के कोच, फिजियो व ट्रेनर (स्पोर्ट स्टाफ) हेतु मांगे गए आवेदन :-पुरुष वर्ग - सीनियर रणजी टीम , अंडर 23 टीम , अंडर 19 टीम, अंडर 16 टीम व अंडर 14 टीम हेतु :- हेड कोच, अस्सिटेंट कोच, बोलिंग कोच, ट्रेनर, फिजियो ।महिला वर्ग - सीनियर टीम , अंडर 23 टीम , अंडर 19 टीम व अंडर 15 टीम हेतु :- हेड कोच, अस्सिटेंट कोच, बोलिंग कोच, ट्रेनर, फिजियो। सपोर्ट स्टाफ के आवेदन राजस्थान क्रिकेट संघ की cricketoperations.rca @gmail.com पर करा सकते हैं व जमा करने की अंतिम तिथि दिनांक 15 जून 2025 है।

चुनाव पर लगी रोक हटाई, दो माह में अपील तय करने तक नहीं होगा परिणाम जारी

जयपुर, 5 जून। राजस्थान हाईकोर्ट ने एडहॉक कमेटी की ओर से कोटा जिला क्रिकेट एसोसिएशन की नई कार्यकारिणी के कराए जा रहे चुनावों पर गत 8 अप्रैल को लगाई रोक को हटा लिया है। इसके साथ ही अदालत ने अपीलीय अधिकारी को कहा है कि वह दो माह में एडहॉक कमेटी के गठन के खिलाफ लंबित अपील को तय करे। अदालत ने कहा कि अपील के निस्तारण तक चुनाव का परिणाम जारी नहीं किया जाए। जस्टिस मुकेश राजपुरोहित की एकलपीठ ने यह आदेश अमीन पठान और कोटा जिला क्रिकेट एसोसिएशन की ओर से दायर याचिकाओं पर संयुक्त रूप से सुनवाई करते हुए दिए। याचिका में अधिवक्ता एसएस होरा ने अदालत को बताया कि उप रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां ने गत 24 जनवरी को आदेश जारी कर याचिकाकर्ता एसोसिएशन के प्रबंधन के लिए एड-हॉक कमेटी का गठन कर दिया। इससे पूर्व उप रजिस्ट्रार ने याचिकाकर्ता एसोसिएशन को सुनवाई का अवसर भी नहीं दिया। वहीं इस आदेश के खिलाफ याचिकाकर्ता की ओर से अतिरिक्त मुख्य खेल सचिव के समक्ष अपील पेश की गई है। याचिका में कहा गया कि एक ओर अपीलीय प्राधिकारी लंबित अपील और स्टे प्रार्थना पत्र पर सुनवाई नहीं कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर एड-हॉक कमेटी ने चुनाव घोषित कर दिए हैं। याचिका में कहा गया कि एड-हॉक कमेटी ने चुनाव के लिए एसोसिएट सदस्यों की नई सूची से चुनाव कराना तय किया है, जबकि आरटीआई के तहत पूर्व में याचिकाकर्ता को दूसरी सूची दी गई थी। ऐसे में एड-हॉक कमेटी की ओर से घोषित चुनाव पर रोक लगाई जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने चुनाव पर गत 8 अप्रैल को लगाई रोक को हटाते हुए अपीलीय अधिकारी को दो माह में अपील तय करने के निर्देश देते हुए तब तक चुनाव परिणाम जारी नहीं करने को कहा है।

करोना संक्रमण से 7 और मरीजों की मौत

नयी दिल्ली, 05 जून। देशभर में करोना संक्रमण धीरे-धीरे बढ़ रहा है और कुल सक्रिय मामलों की संख्या गुरुवार सुबह बढ़ कर 4866 तक पहुंच गयी। पिछले 24 घंटों में इसके संक्रमण से सात और मरीजों की मौत होने से मृतकों की संख्या 51 पहुंच गयी है।

केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से जारी

- **देश भर में करोना के एक्टिव केस 4866 हैं और मृतकों की संख्या अब 51 हो गई है।**

आंकड़ों के अनुसार, आज सुबह आठ बजे तक देश में कोरोना के सक्रिय मामलों की संख्या बढ़ कर 4866 पहुंच गयी। अभी तक 3955 मरीजों को स्वस्थ्य होने पर उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल चुकी है और एक जनवरी से अब तक 51 लोगों की मौत हुई है।

भारत में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के प्रमुख संरचनात्मक खंडों के निर्माण के लिए एक अत्याधुनिक उत्पादन सुविधा स्थापित करेगी, जिसमें पूरी बॉडी का निर्माण किया जायेगा।

भारत की विदेश नीति को भारी झटका, स.रा. सुरक्षा परिषद में पाकिस्तान को मिले दो पद

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

कांग्रेस ने इस मुद्दे पर मोदी सरकार को घेरा है

- **कांग्रेस का कहना है, पहले पाकिस्तान को विश्व बैंक, आई.एम.एफ. तथा एशियन विकास बैंक से कर्ज़ मंजूर हुआ और अब इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में दो बड़े पद मिले हैं, यह भारत की विदेश नीति की भारी विफलता है।**
- **कांग्रेस ने इसके लिए वैश्विक समुदाय की भी आलोचना की और कहा, इस तरह से पाक प्रायोजित आतंकवाद को वैधता प्रदान की जा रही है।**
- **पाकिस्तान को यू.एन. सिक्यूरिटी काउन्सिल तालिबान सैंक्शन कमेटी का चेयरमैन बनाया गया है और सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि उसे काउन्टर टैररिज़्म कमेटी का उपाध्यक्ष भी बनाया गया है।**

नई दिल्ली, 5 जून। पाकिस्तान को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (युनाइटेड नेशन्स सिक्युरिटी काउन्सिल, यू.एन.एस.सी) में दो प्रमुख पद मिलने से भारत को आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान को बेनकाब करने के अपने प्रयासों में बड़ा झटका लगा है। इस बीच रूस ने भी पुष्टि की है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से फोन पर बातचीत के दौरान हालिया भारत-पाकिस्तान संघर्ष में अपनी भूमिका का ज़िक्र किया था।

पाकिस्तान को यू.एन.एस.सी. की तालिबान प्रतिबंध समिति का अध्यक्ष और आतंकवाद-रोधी समिति का उपाध्यक्ष चुना गया है। भारत की विदेश नीति को लगे इस झटके ने कांग्रेस को मोदी सरकार पर हमला बोलने का मौका दे दिया। कांग्रेस ने नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार पर तीखा हमला करते हुए इसे भारत की विदेश नीति के पतन की दुखद कहानी बताया।

एक्स पर कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने पाकिस्तान को हाल में आई.एम.एफ. और विश्व बैंक से मिले ऋण और सुरक्षा परिषद में मिले पदों का हवाला देते हुए भारत की विदेश नीति पर सवाल उठाए। उन्होंने वैश्विक समुदाय पर भी पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को वैधता देने के लिए हमला बोला।

खेड़ा ने एक्स पर लिखा, निस्संदेह, यह हमारी अपनी विदेश नीति के पतन की दुखद कहानी है, लेकिन वैश्विक समुदाय पाकिस्तान द्वारा आतंकवाद के प्रायोजन को लगातार वैधता कैसे दे सकता है?

9 मई को जब भारत और पाकिस्तान टकराव की स्थिति में थे, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष आई.एम.एफ. ने पाकिस्तान को एक अरब डॉलर का ऋण मंजूर किया।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद केंद्र सरकार ने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों की सात टीमों को पाकिस्तान के आतंकवाद समर्थन को उजागर करने और यह संदेश देने के लिए कई देशों में भेजा था कि भारत की सैन्य कार्रवाई पहलगाम हमले के जवाब में पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ढांचों को ध्वस्त करने के लिए थी। ऑपरेशन सिंदूर के बाद विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक ने भी पाकिस्तान को क्रमशः 40 अरब डॉलर और 800 मिलियन डॉलर के ऋण मंजूर किए।

क्रैमलिन के एक सहयोगी के अनुसार, हाल ही में पुतिन और ट्रंप की टेलीफोन पर हुई बातचीत में हालिया भारत-पाक संघर्ष का मुद्दा भी शामिल था। बुधवार को हुई इस बातचीत के बारे में जानकारी देते हुए क्रैमलिन सहयोगी यूरी उशाकोव ने बताया कि दोनों नेताओं ने यूक्रेन सहित कुछ अन्य मुद्दों पर चर्चा की।

रूस की राज्य समाचार एजेंसी टास (टी.ए.एस.एस.) के अनुसार, उशाकोव ने कहा, उन्होंने (ट्रंप-पुतिन) मध्य पूर्व और भारत-पाकिस्तान के बीच सशस्त्र संघर्ष पर भी बात की, जिसे राष्ट्रपति ट्रंप की व्यक्तिगत भागीदारी से रोका गया।

हालाँकि, उशाकोव ने बातचीत का विस्तृत ब्यौरा साझा नहीं किया।

ट्रंप पहले भी कई बार यह दावा कर चुके हैं कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध होने से रोका।

तथापि, भारत का हमेशा से यह कहना रहा है कि पाकिस्तान के साथ संघर्ष विराम का समझौता दोनों सेनाओं के डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशंस (डी.जी.एम.ओ.) के बीच प्रत्यक्ष बातचीत के माध्यम से हुआ था।

इस बीच, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ़ ने राष्ट्रपति पुतिन से भारत के साथ विवाद को सुलझाने में मदद करने की अपील की है, यह जानकारी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के विशेष सलाहकार सैयद तारिक फातिमी ने दी।

मंगलवार को मॉस्को में रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव से मुलाकात के दौरान फातिमी ने शहबाज़ शरीफ का पत्र पुतिन को सौंपा। उनकी यह यात्रा डीएमके सांसद कनिमोई करुणानिधि के नेतृत्व में गए बहुदलीय भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल की अत्यंत सफल रूस यात्रा के कुछ ही दिन बाद हुई, जहाँ उन्होंने पाकिस्तान प्रायोजित सीमा पार आतंकवाद के प्रति जागरूकता फैलाई और भारत की आतंकवाद के प्रति ज़ीरो टॉलरेंस की नीति को रूस का ठोस समर्थन दिलवाया।

पहली बार सांप्रदायिक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

नहीं चाहते। लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह है कि दिल्ली में कोई भी जम्मू इकाई की समस्याओं या उनके पीसीसी अध्यक्ष को लेकर उनकी शिकायतों और आपत्तियों पर ध्यान नहीं दे रहा है।

एआईसीसी के जम्मू-कश्मीर प्रभारी नासिर हुसैन दिखाई ही नहीं देते और कांग्रेस की आंतरिक समस्याओं को सुलझाने के लिए कोई ठोस पहल करते प्रतीत नहीं होते। कर्रा को राहुल गांधी ने नियुक्त किया है, लेकिन समस्या यह है कि राहुल गांधी बिना पर्याप्त जांच के फैसले लेते हैं और एक बार निर्णय ले लेने के बाद उसे बदलते नहीं हैं। कर्रा पीडीपी से सीधे कांग्रेस में लाए गए हैं और अमरनाथ विवाद के समय उन्होंने गुलाम नबी आज़ाद सरकार को गिराने में बड़ी भूमिका निभाई थी।

महबूबा मुफ्ती द्वारा भाजपा से हाथ मिला लेने के विरोध में उन्होंने पीडीपी छोड़ दी थी, इसके बाद, राहुल गांधी ने उन्हें कांग्रेस में शामिल कर लिया था। पहले उन्हें कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) का सदस्य बनाया गया और फिर वे पीसीसी अध्यक्ष बना दिये गये।

कर्रा न तो कांग्रेस की संस्कृति को समझते हैं और न ही उनके पास कोई व्यापक राष्ट्रीय या राज्य स्तरीय दृष्टिकोण है। उनकी सोच पूरी तरह कश्मीर-केन्द्रित और अलगाववादी है, यही मुख्य कारण है, जिससे जम्मू कांग्रेस में असंतोष है।

एक वरिष्ठ नेता ने जोर देते हुये कहते हैं कि कांग्रेस पहले कभी सांप्रदायिक या क्षेत्रीय आधार पर विभाजित नहीं रही है। उनका कहना है कि भाजपा इस सांप्रदायिक रुझान का फायदा उठा रही है और कर्रा की इस सोच से भाजपा को लाभ हुआ भी है। कश्मीर में तो कांग्रेस की जगह अब एनसीपी या पीडीपी ने ले ली है। इस प्रकार कांग्रेस दोनों ओर से फँसी हुई है।

राहुल गांधी ने हाल ही में विभिन्न राज्यों में कांग्रेस में मौजूद "भाजपा स्लीपर सैल्स" को हटाने की बात कही है और पार्टी इकाइयों से वादा किया है कि वे निष्क्रिय पड़ी इकाइयों के पदाधिकारियों को बर्खास्त करेंगे।

जम्मू कांग्रेस इकाई में भी ऐसे ही आरोप हाल ही में सामने आए हैं, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। न्यायसंगत होगा कि राहुल गांधी जम्मू-कश्मीर के प्रभारी एआईसीसी नेता को निर्देश दें कि वे जाँच करें और राज्य इकाई में मौजूद स्लीपर सैल्स को चिन्हित करें। वस्तुतः राहुल गांधी भाषण तो धमाकेदार देते हैं, लेकिन उन पर अमल करने का तंत्र बेहद कमज़ोर है।

सुप्रीम कोर्ट आज ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हस्तक्षेप के बाद उठाया गया है, जब उसने परीक्षा को दो सत्रों में आयोजित करने पर आपत्ति जताई थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि परीक्षा को दो शिफ्ट में आयोजित करने से कठिनाई स्तर में असमानता हो सकती है, जिससे अभ्यर्थियों पर अनुचित प्रभाव पड़ सकता है। पीठ ने इस बात पर जोर दिया कि पूरे देश में निष्पक्षता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए परीक्षा एक ही सत्र में आयोजित की जानी चाहिए। कोर्ट ने एन.बी.ई. को निर्देश दिया था कि वह परीक्षा को एक ही शिफ्ट में आयोजित करने के लिए आवश्यक लॉजिस्टिक व्यवस्थाएँ करे। साथ ही यह भी स्पष्ट किया था कि यदि बोर्ड को यह व्यवस्था लागू करने के लिए अतिरिक्त समय की आवश्यकता हो, तो वह अदालत से पुनः समय माँग सकता है।

महेश जोशी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने महेश जोशी को गिरफ्तार किया था। इस बीच जोशी की पत्नी के निधन के कारण कोर्ट ने उन्हें दो बार अंतरिम जमानत दी थी।

मुख्यमंत्री भजनलाल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

योगदान दें। मुख्यमंत्री ने कहा, प्रधानमंत्री ने देशभर में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान चलाया, जिससे आमजन में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता आई। इस अभियान से प्रेरणा लेकर पिछले वर्ष राज्य सरकार ने 7 करोड़ से अधिक पौधे लगाए।

इस अवसर पर, जमवारामगढ़ के विधायक महेन्द्र पाल मीणा ने गंगा नदी के जल का कलश मुख्यमंत्री को भेंट किया। मुख्यमंत्री ने वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के तहत रामगढ़ बांध पर श्रमदान किया। उन्होंने जलेश्वर महादेव मंदिर में जलाभिषेक-पूजा अर्चना भी की। महिलाओं ने सिर पर कलश रखकर लोकगीत गाते हुए मुख्यमंत्री का अभिनंदन किया।

कार्यक्रम में संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल, जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत, वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा, सांसद राव राजेन्द्र सिंह, डॉ. मंजू शर्मा, विधायक बालमुकुंदाचार्य, कुलदीप धनखड़, कैलाश वर्मा, मनीष यादव, अमीन कागजी, जिला प्रमुख रमा चोपड़ा सहित, जनप्रतिनिधिगण, वरिष्ठ अधिकारीगण और बड़ी संख्या में पर्यावरण प्रेमी एवं आमजन उपस्थित थे।

राज ठाकरे ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

का फोन नंबर है।' गौरतलब है कि फिल्म निर्देशक महेश मांजरेकर के यूट्यूब चैनल को दिए गए एक साक्षात्कार में राज ठाकरे के एक बयान के बाद चचेरे भाइयों के एक साथ आने की चर्चाओं ने जोर पकड़ लिया है। इसके बाद उद्धव ठाकरे ने भी गठबंधन के प्रति अपना समर्थन जताते हुए कहा है कि महाराष्ट्र और मराठी लोगों का हित दोनों नेताओं के बीच मतभेदों से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

भगदड़ पर सिद्धारमैया ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। सीएम सिद्धारमैया ने आगे कहा, हाई कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश जस्टिस माइकल डीकुन्हा की अध्यक्षता में हमने एक सदस्यीय आयोग नियुक्त किया है...आरसीबी इवेंट मैनेजर, डीएनए, केएससीए, जिन्होंने उनका प्रतिनिधित्व किया, हमने उन्हें गिरफ्तार करने का निर्णय लिया है। सीएम सिद्धारमैया ने कहा- मामले की जांच के लिए हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज माइकल डी'कुन्हा की अध्यक्षता में एक सदस्यीय जांच आयोग बनाया गया है।

जातिगत जनगणना में निहित ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और ज्यादा ताकत (संख्या बल) हासिल हो रही है।"

इस मुद्दे के केन्द्र में परिसीमन की संभावना है, अर्थात् जनसंख्या के ताजा आँकड़ों के आधार पर संसदीय क्षेत्र का आकार एवं उसकी सीमा तय किये जायेंगे। परिसीमन की मौजूदा फ्रीज़िंग (यथास्थिति) 2026 तक प्रभावी रहेगी तथा उम्मीद की जा रही है कि जातियों और उपजातियों के नये आँकड़े जारी होने के बाद, सीटों के परिसीमन को लेकर जबरदस्त मोल-भाव के लिए मंच तैयार हो जायेगा।

राजनैतिक पर्यवेक्षकों को आशंका है कि इससे उत्तर-दक्षिण के बँटने की सोच तेज हो जायेगी, क्योंकि ऐसी संभावना दिखाई दे रही है कि दक्षिणी राज्यों की सीटें कम हो जायेंगी तथा उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे ज्यादा जनसंख्या वाले राज्यों की सीटें बढ़ जायेंगी।

बिहार में जातिगत पहचान लम्बे समय से राजनैतिक रणनीति के केन्द्र में रही है तथा ऐसी उम्मीद है कि जातिगत जनगणना इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

हालाँकि जनगणना की प्रक्रिया संभवतः नई सरकार के गठन के बाद ही पूरी होने की संभावना है, लेकिन जाति-आधारित राजनैतिक नैरेटिव सार्वजनिक चर्चाओं पर पहले से ही हावी है। विश्लेषकों का कहना है कि नये जातिगत आँकड़ों से आरजेडी-कांग्रेस गठबंधन को उल्लेखनीय फायदा हो सकता है, क्योंकि आनुपातिक प्रतिनिधित्व तथा जनसंख्या की वास्तविक जातिगत संरचना पर आधारित अनुकूल कार्यवाही को इससे पर्याप्त बल मिल सकता है।

दूसरी तरफ, भाजपा तथा बिहार में उसका वर्तमान मित्र दल जद (यू) मुश्किल में पड़ते नज़र आ रहे हैं। जहाँ नीतीश कुमार के नेतृत्व में जद (यू) जब विपक्षी गठबंधन में था, तब जातिगत जनगणना का मजबूत प्रस्तावक था, लेकिन पार्टी के एनडीए गठबंधन में शामिल हो जाने तथा राजनैतिक गणित ने उनकी स्थिति बड़ी अस्पष्ट एवं संदिग्ध बना दी है।

इस बीच भाजपा के सामने हिन्दी भाषी राज्यों में जाति-आधारित राजनीति की जमीनी स्थिति को ध्यान में रखते हुए, "सबका विकास" के विचार को आगे बढ़ाने की अपनी राष्ट्रीय छवि को संतुलित बनाये रखने की चुनौती भी है।

एक वरिष्ठ राजनैतिक विश्लेषक ने इस स्थिति को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए कहा, "जातिगत जनगणना एक सामाजिक ऑडिट मात्र नहीं है, यह एक राजनैतिक भूकंप है, जो आने ही वाला है। यह (जातिगत जनगणना) अगले दशक में चुनावी रणनीतियों, गठबंधन के निर्माण और शायद भारतीय लोकतंत्र की संरचना तक को एक नया आकार देगी।

राजनैतिक गहमागहमी बढ़ने के साथ ही, 16 जून की अधिसूचना के आते ही, भारतीय राजनीति के एक लंबे तथा कलहपूर्ण अध्याय की शुरुआत हो जायेगी।

यह अधिसूचना देश के संघीय ढाँचे के लचीलेपन, भारतीय गणतंत्र की एकता तथा भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता की परीक्षा लेगी।

राष्ट्रदूत हिन्दु संयुक्त परिवार की ओर से सोमेश शर्मा द्वारा ज्वाईन्ट मीडिया, आजाद मार्ग, मैन रोड, आयड, उदयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 57928/93 **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513 **कोटा कार्यालय :** पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033 **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371 **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908